ऊर्जा २०१८

वार्षिक पत्रिका

शासकीय इं. विश्वेसरैया स्नातकोत्तर महाविद्यालय
कोरबा (छ.ग.)
नैक मूल्यांकित B++

शैक्षणिक परिवार (नियमित)

Sitting (By Left) - Dr. D. Patnaik, Dr. R.B. Sharma, Smt. A. Shrivastav, Dr. R. K. Saxena (Principal), Dr. S. Khare, Smt P. Pundlik, Smt. K Bahal.
Ist Row (By Left) - Smt. R. Sinha, Dr. A. Koushil, Dr. M. L. Agrawal, Dr. P. Sahu, Smt. A. Korram, Smt. C. R. Shriwas, Smt. S. Pundlik, Dr. D. Dubey
2nd Row (By left) - Shri. R.G. Khunte, Shri. K.S. Kanwar, Dr. S.K. Yadav, Dr. S. Shukla, Shri. B.R. Kurrey, Dr. V. K. Dubey, Dr. S. K. Gobhil, Shri. R.K. Mourya Dr. D. Shriwas, Dr. B.L. Sai, Shri. R.K. Rathore.

Sitting (By Left) - Ku. S.K. Chandra, Smt. P. Katakwar, Smt. S. Singh, Dr. R.K. Saxena (Principal), Ku. S. Soni, Ku P. Bhagat, Smt. D.S. Deshmukh.
Ist Row (By Left) - Ku. M. Tejwani, Smt. V. Chandra, Smt. P. Jangde, Smt. S. Tiwari, Ku. S. Soni, Ku. M. Khillari, Ku. J. Yadav, Ku. P. Rathore.
2nd Row (By left) - Shri. H. S. Khande, Shri. G.P. Dewangan, Shri. S. Patel, Shri. O.N. Sahu, Shri S. Sharma, Shri. M. Singh. Shri A. Sahu Shri S.N. Kurrey Shri S.K.Ogrey.

ऊर्जा 2018

संपादक समिति

* संरक्षक *

डॉ. आर.के. सक्सेना

* संपादक *

श्रीमती एस. पुण्डलिक

* संयोजक *

अंग्रेजी	हिन्दी	छत्तीसगढ़ी
डॉ. एम.एल. अग्रवाल	डॉ. डी. दुबे	श्रीमती ए. कोर्राम

सदस्य

डॉ. डी. श्रीवास
श्री के.एस. कंवर
श्रीमती सी.आर. श्रीवास
कु. एस. सोनी
श्री एच.एस. खाप्डे
श्री एस.एन. कुर्रे

छात्र प्रतिनिधि

कृतिका तिवारी
विजेश दास
काशीराम पटेल
इरशाद आलम
आकांक्षा पाण्डेय
मो. गुलनवाज

* प्रकाशन प्रकोष्ठ *

शासकीय इंजीनियर विश्वेसरैया स्नातकोत्तर महाविद्यालय

कोरबा (छ.ग.)

www.gevpgkrb.ac.in

डॉ. रमन सिंह
मुख्यमंत्री

Dr. RAMAN SINGH
CHIEF MINISTER

DO. No. ..... VIP /2017
DATE 25/10/2017
महानदी भवन, मंत्रालय
नया रायपुर, छत्तीसगढ़ - 492002
Mahanadi Bhawan,Mantralaya
Naya Raipur, Chhattisgarh
Ph. : (O) - 0771-221000-01
Fax : (O) - 0771-2221306
Ph. : (R) - 0771-2331000-01
Ph. : (R) - 0771-2443399
Ph. : (R) - 0771-2331000

संदेश

मुझे यह जानकर हार्दिक प्रसन्नता हुई कि शासकीय इंजीनियर विश्वेसरैया स्नातकोत्तर महाविद्यालय, कोरबा द्वारा महाविद्यालयीन पत्रिका 'ऊर्जा' का प्रकाशन किया जा रहा है।

ऐसी पत्रिकाएँ छात्र-छात्राओं में अभिव्यक्ति का कौशल विकसित करने के लिये महत्वपूर्ण भूमिका अदा करती है। इस पत्रिका में महाविद्यालय के रचनाशील प्राध्यापकों तथा विद्यार्थियों की मौलिक रचनाएँ प्राथमिकता से प्रकाशित की जानी चाहिये।

पत्रिका के माध्यम से महाविद्यालय की शैक्षणिक गतिविधियों और विशेषताओं की जानकारियाँ भी लोगों तक पहुँचती है। प्रकाशन अपने उद्देश्यों में सफल हो, इसके लिये मेरी हार्दिक शुभकामनाएँ।

(डॉ. रमन सिंह)

डॉ. बंशीलाल महतो
संसद सदस्य
(लोक सभा)
कोरबा (छत्तीसगढ़)

सत्यमेव जयते

चॉपा रोड, मुख्य मार्ग, सीतामणी,
कोरबा - 495 678, छत्तीसगढ़
दूरभाष : 07759 - 248999
मोबाइल : 09425532400

89, नॉर्थ एवेन्यू, नई दिल्ली - 110 001
दूरभाष : 011 - 23094730
मोबाइल : 09013869102
ई - मेल : banshilal.mahto@sansad.nic.in
mahtobanshilal@gmail.com

सदस्य : -
- कोयला और इस्पात संबंधी स्थायी समिति
- रसायन और उर्वरक मंत्रालय की परामर्शदात्री समिति
- अन्य पिछड़े वर्गो के कल्याण समिति

क्रमांक : सां./कोरबा/2017/603

दिनांक : 12/11/2017

शासकीय ई.वि. स्नातकोत्तर महाविद्यालय कोरबा द्वारा वार्षिक पत्रिका ''ऊर्जा'' का प्रकाशन प्रत्येक वर्ष की भाँति इस वर्ष भी किया जा रहा है, जो अत्यंत सराहनीय कदम है। पत्रिका के माध्यम से छात्रों को अपनी सृजन क्षमता प्रदर्शित करने का अवसर प्राप्त होता है, जिससे उनके आत्मविश्वास में वृद्धि के साथ-साथ रचनात्मक गुणों का विकास भी होता है। मुझे पूर्ण विश्वास है कि यह पत्रिका अपने लक्ष्य को प्राप्त करने में सफल होगी।

महाविद्यालय के विद्यार्थियों की उज्ज्वल भविष्य की कामना करते हुए पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिये महाविद्यालय परिवार को मेरी हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ।

शुभेच्छु

(डॉ. बंशीलाल महतो)

जयसिंह अग्रवाल
विधायक
कोरबा विधानसभा क्षेत्र क्र. 21
सदस्य - अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी
पूर्व महामंत्री - छ.ग. प्रदेश कांग्रेस कमेटी
पूर्व अध्यक्ष - विशेष क्षेत्र विकास प्राधिकरण
(दर्जा - राज्यमंत्री)

पता -
निवास : शांति निवास
अग्रसेन मार्ग, कोरबा (छ.ग.)
दूरभाष : 07759-230333, 07759-320003
कार्यालय : 29-30, इंदिरा व्यावसायिक परिसर
परिवहन नगर, कोरबा (छ.ग.)
दूरभाष/फैक्स : 07759-246889

शुभकामना संदेश

प्रसन्नता का विषय है कि कोरबा के अग्रणी शासकीय इं.वि. स्नातकोत्तर महाविद्यालय द्वारा वर्ष 2017-18 में वार्षिक पत्रिका ''ऊर्जा'' का प्रकाशन किया जा रहा है। इसमें महाविद्यालय की शैक्षणिक और अन्य रचनात्मक गतिविधियों का समावेश किया जाएगा। इस प्रयास से महाविद्यालय के प्राध्यापकों और विद्यार्थियों की सृजनात्मक क्षमता एवं प्रतिभा को नए पंख लगेंगे।

किसी भी शिक्षण संस्था की गतिविधियों को सार्वजनिक किये जाने की कड़ी में इस तरह के प्रकाशन सबसे अच्छे माध्यम होते हैं, इस नाते आपके द्वारा किया जा रहा यह प्रयास प्रशंसनीय है।

मैं वार्षिक पत्रिका ''ऊर्जा'' के सफल प्रकाशन के साथ-साथ इसके उद्देश्यपरक होने के लिये शुभकामनाएँ देता हूँ।

भवदीय

(जयसिंह अग्रवाल)

Prof. G.D. SHARMA
Vice-Chancellor
BILSPUR UNIVERSITY
Bilaspur (C.G.) 495001
Former Vice-Chancellor, Nagaland University &
Former Pro-Vice-Chancellor, Assam University (Central)

प्रो. जी. डी. शर्मा
कुलपति
बिलासपुर विश्वविद्यालय,
बिलासपुर (छ.ग.) 495001
पूर्व कुलपति, नागालैण्ड विश्वविद्यालय एवं
सह कुलपति असम विश्वविद्यालय (केन्द्रीय)

क्रमांक 1613/नि.स./2017 बिलासपुर, दिनांक 06/11/2017

संदेश

यह अत्यंत हर्ष का विषय हैं कि प्रदेश के कोयला एवं इस्पात नगरी तथा हसदेव नदी के गोद में बसे कोरबा जिला के आदिवासी वनांचल क्षेत्र में स्थित ''शासकीय इं.वि. स्नातकोत्तर महाविद्यालय'' जिला-कोरबा (छ.ग.)'' प्रतिवर्ष की भाँति इस बार भी महाविद्यालयीन वार्षिक पत्रिका ''ऊर्जा'' का प्रकाशन कर रहा है। मैं इस महाविद्यालय के छात्र-छात्राओं तथा अध्यापकगण द्वारा किये जा रहे इस प्रयास की हृदय से सराहना करता हूँ। यह विद्यार्थियों के चिंतन एवं सृजन क्षमताओं की अभिव्यक्ति का एक सशक्त माध्यम है। मुझे विश्वास है कि इस पत्रिका के माध्यम से छात्र-छात्रायें अपनी रचनात्मक कला से कठिनाईयों को सरलता से हल कर सकेंगे। आशा करता हूँ कि ''ऊर्जा'' पत्रिका विद्यार्थियों के साथ-साथ आदिवासी क्षेत्रों में निवासरत् समस्त वर्गों को ज्ञान प्रदान करते हुये प्रेरणादायी सिद्ध होगी।

महाविद्यालयीन वार्षिक पत्रिका ''ऊर्जा'' के प्रकाशन के लिये मेरे और विश्वविद्यालय की तरफ से शासकीय इं.वि.स्नातकोत्तर महाविद्यालय परिवार को हार्दिक शुभकामनाएँ।

G. D. Sharma

(प्रो. जी. डी. शर्मा)
कुलपति

Address : Gandhi Chowk, Bilaspur (Chhattisgarh) 495001
Telefax : +91-7752-220007 (O), +91-7752260294, Mob. : +91-9406218401, 09435500660
E-mail : gduttasharma@yahoo.co.in, bilaspur.university2012@gmail.com, Website : bilaspuruniversity.ac.in

मो. कैसर अब्दुल हक
आई.ए.एस.
कलेक्टर एवं जिला दण्डाधिकारी

दूरभाष : कार्यालय - 07759 222886
निवास - 07759 222486
फैक्स - 07759 224200
कार्यालय : कलेक्टर, कोरबा (छ.ग.)
अर्द्ध शास. पत्र क्र. 451/स्टेनो/2017
दिनांक : 10.11.2017

संदेश

यह प्रसन्नता का विषय है कि शासकीय इंजीनियर विश्वेसरैया स्नातकोत्तर महाविद्यालय कोरबा द्वारा प्रतिवर्षानुसार इस वर्ष भी महाविद्यालयीन पत्रिका ''ऊर्जा'' का प्रकाशन किया जा रहा है।

मुझे आशा है कि इस तरह के महाविद्यालयीन पत्रिका के प्रकाशन से छात्र-छात्राओं को अपने विचार को साहित्यिक लेखन के माध्यम से प्रदर्शित करने का मौका मिलेगा। जिससे उनके रचनात्मक लेखन में आत्म विश्वास बढ़ेगा तथा साथ ही महाविद्यालय की विभिन्न गतिविधियाँ, उपलब्धियाँ एवं प्राध्यापकों के सृजनात्मक लेखन से उन्हें ज्ञानवर्धक शिक्षा प्राप्त होगी।

''ऊर्जा'' पत्रिका के सफल प्रकाशन पर महाविद्यालयीन परिवार एवं छात्र-छात्राओं को हार्दिक बधाई के साथ उज्ज्वल भविष्य की कामना करता हूँ। ऐसी कामना के साथ पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिये महाविद्यालयीन परिवार को मेरी हार्दिक शुभकामनाएँ।

भवदीय

(मो.कैसर अब्दुल हक)

डी. श्रवण
भा.पु.से.
पुलिस अधीक्षक

कार्यालय, पुलिस अधीक्षक,
जिला - कोरबा (छत्तीसगढ़)
अर्द्ध शासकीय पत्र क्र. पुस/कोरबा/352
कोरबा, दिनांक 22/12/2017
फोन नं. : 07759-224500 (कार्या.)
फोन नं. : 07759-224505 (निवास)
फैक्स नं. : 07759-224031
मोबा.नं. : 94791-93300
ईमेल : sp_korba.cg&gov.in

संदेश

मुझे यह जानकर अत्यंत प्रसन्नता हुई कि शासकीय इंजी. वि. स्नातकोत्तर महाविद्यालय, कोरबा द्वारा प्रतिवर्ष की भाँति इस वर्ष भी महाविद्यालयीन पत्रिका "ऊर्जा" का प्रकाशन किया जा रहा है, जो अत्यंत सराहनीय कार्य है। इस तरह के विद्यालयीन पत्रिका प्रकाशन में छात्र/छात्राओं के स्वरचित लेख, कविता एवं निबंध आदि को प्रकाशित करने का अवसर मिलता है, जिससे उनके आत्मविश्वास में वृद्धि के साथ-साथ रचनात्मक गुणों का विकास होता है।

अतः पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिये महाविद्यालय परिवार एवं सभी छात्र/छात्राओं के उज्जवल भविष्य की कामना करता हूँ।

भवदीय

(डी0श्रवण)

लुकेश्वर चौहान (लुक्की)
अध्यक्ष
जनभागीदारी समिति
शासकीय इंजी.विश्वेसरैया स्नातकोत्तर
महाविद्यालय, कोरबा (छ.ग.)

पता : क्वा.नं. 100/5/ए, बालको नगर
जिला : कोरबा (छ.ग.)
मो. : 9893191316, 9406440443

क्रमांक : 0ए/03 दिनांक 03/11/2017

संदेश

मुझे यह जानकार हार्दिक प्रसन्नता हुई कि शासकीय इंजी.वि.स्नातकोत्तर महाविद्यालय, कोरबा (छ.ग.) द्वारा वार्षिक पत्रिका "ऊर्जा" का प्रकाशन किया जा रहा है, मुझे विश्वास है कि यह पत्रिका, विद्यार्थियों की बौद्धिक क्षमता को बढ़ावा देने के साथ-साथ मौलिक विचारों की अभिव्यक्ति तथा रचनात्मक कार्यो के लिये प्रेरणा में भी सहायक सिद्ध होगी। मेरा मानना है कि उक्त पत्रिका के माध्यम से छात्र/छात्राओं को लेख, निबंध एवं कविता आदि के लेखन का जो अवसर मिलेगा, उससे उनके विश्वास बढ़ेगा और रचनात्मक गुणों का विकास होगा।

"ऊर्जा" पत्रिका के प्रकाशन पर मेरी हार्दिक शुभकामनाएँ-

धन्यवाद!

अध्यक्ष
लुकेश्वर चौहान (लुक्की)

प्राचार्य की कलम से...

महाविद्यालय के उभरते रचनाकारों की रचनाएँ, विद्वान प्राध्यापकों के ज्ञानवर्धक लेख एवं विभिन्न क्षेत्रों में महाविद्यालय के पूरे सत्र की विशिष्ट उपलब्धियों के संकलन से ''ऊर्जा '' पत्रिका के प्रकाशन पर महाविद्यालय परिवार, संपादक मंडल एवं सभी छात्र-छात्राओं को ढेर सारी बधाईयां एवं नव वर्ष की शुभकामनाएँ।

महाविद्यालय के समग्र विकास, अध्ययन/अध्यापन में गुणवत्ता, परीक्षा परिणाम, प्रयोगशालाओं का उन्नयन, ग्रंथालय, क्रीडांगन एवं खेलकूद, अन्य सुविधाओं के साथ अधोसंरचना का व्यवस्थित विस्तार करने हेतु महाविद्यालय प्रशासन एवं जनभागीदारी समिति निरंतर प्रयास कर रहे हैं। इसका परिणाम है कि **महाविद्यालय को नैक मूल्यांकन में 2011 में B ग्रेड तथा 2016 में B++ ग्रेड प्राप्त हुआ।** अगले नैक मूल्यांकन में 'A' प्राप्त करने का लक्ष्य निर्धारित है।

महाविद्यालय को उत्कृष्टता के इस उच्च स्तर पर लाने हेतु महाविद्यालय प्रशासन एवं जनभागीदारी समिति के साथ-साथ अध्ययनरत् छात्र-छात्राओं को हृदय से साधुवाद, आभार व्यक्त करता हूँ।

महाविद्यालय के छात्र/छात्राओं को विभिन्न जानकारी देने एवं उनकी समस्याओं के निराकरण एवं अभिभावकों से सीधे संवाद हेतु महाविद्यालय में इस सत्र से शिक्षक-अभिभावक योजना पर जोर दिया है। सभी अभिभावकों एवं छात्र/छात्राओं से अपील है कि वे शिक्षक-अभिभावक बैठक में उपस्थित होकर अपने बहुमूल्य सुझाव दें ताकि हम महाविद्यालय को और बेहतर बना सकें।

महाविद्यालय निरंतर नई ऊँचाईयों के साथ नई उपलब्धियों को प्राप्त करने की ओर अग्रसर है। इस संदेश के माध्यम से महाविद्यालय के समस्त अधिकारी/कर्मचारियों एवं छात्र-छात्राओं से **विनम्र अपील है कि महाविद्यालय को निरंतर उपलब्धियों के शिखर पर जाने का प्रयास करते समय <u>विनम्रता, अनुशासन, धैर्य</u> एवं <u>नैतिक मूल्यों</u> को हमेशा ध्यान में रखें एवं महाविद्यालय की गरिमा को बढ़ाते हुए अच्छे नागरिक बनकर राष्ट्र निर्माण में योगदान दें।**

सभी छात्र-छात्राओं को आगामी परीक्षाओं के लिये शुभकामनाएँ और आशीर्वाद्।

Saxena.

डॉ. आर.के. सक्सेना
प्राचार्य
शासकीयइं.वि.स्नातकोत्तर महाविद्यालय
कोरबा (छ.ग.)

EDITORIAL

'URJA' as the name suggests is indeed the powerhouse of youthful talent, energy, creativity and positivity of the students of Govt. EVPG College, Korba. This volume is the result of the untiring efforts of the Urja team which is made special by our young student representatives. "Urja" is the testimony of the activities and achievements of the college students.

I take this opportunity to acknowledge the staunch support of the dynamic leadership of our respected Principal Dr. R.K. Saxena. and all my fellow staff members. My thanks are due to all the students for their valuable contributions to this volume and the cooperation of the Urja team for the timely release of this volume.

I wish to share the golden words of Dr. A.P.J. Abdul Kalam....

"You cannot change your future

but you can change your habits,

and surely your habits will change your future !"

With Best Wishes....

Smt. S. Pundlik

संपादक समिति

Sitting (By Left) - Dr. M. L. Agrawal, Smt. K. Korram, Dr. D. Dubey, Dr. R.K. Saxena (Principal), Smt. S. Pundlik, Dr. D. Shriwas, Shri. K. S. Kanwar.
Ist Row (By Left) - Ku. K. Tiwari, Ku. A. Pandey, Ku. S. Soni, Shri. H.S. Khande, Shri. S.N. Kurrey, Shri. K.R. Patel, Shri. I. Alam, Shri. V. Das, Md. Gulnawaz.

छात्र संघ पदाधिकारी

डॉ. व्ही. दुबे
(संयोजक)

डॉ. आर.के. सक्सेना
(प्राचार्य)

डॉ. एस. खरे
(सदस्य)

समलेश्वरी सिंह
अध्यक्ष
एम.एस.सी. चर्तुथ सेम. रसायन

किरण यादव
उपाध्यक्ष
एम.एस.सी. द्वितीय सेम. जन्तु विज्ञान

आकांक्षा पाण्डेय
सचिव
बी.एससी. अंतिम बायो.

खूशबू सोनी
सहसचिव
बी.एससी. द्वितीय गणित

उभरते सितारे 2016–17

कु. रीतु साहू
एम.ए.-द्वितीय सेमे. (राजनीति शास्त्र)

वर्तमान में एम.ए. तृतीय से. राजनीति शास्त्र अध्ययनरत

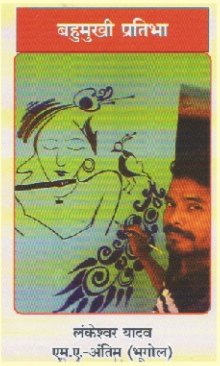

लंकेश्वर यादव
एम.ए.-अंतिम (भूगोल)

वर्तमान में इंदिरा कला संगीत विश्वविद्यालय खैरागढ़ से बी.एफ.ए.

गजेन्द्र सिंह चौहान
बी.कॉम.-अंतिम

वर्तमान में एम.कॉम. प्रथम सेमे. अध्ययनरत

उभरते सितारे 2017–18

कु. आकांक्षा पाण्डेय बी.एस.सी. अंतिम बायो एवं जैनेन्द्र कुर्रे एम.ए. राजनीति विज्ञान प्रथम सेमेस्टर ने स्वीप के अंतर्गत आयोजित महाविद्यालयीन, जिला स्तरीय एवं संभाग स्तरीय वाद-विवाद प्रतियोगिता में पक्ष-विपक्ष में प्रथम स्थान प्राप्त किया ।

चमकते सितारे

महाविद्यालय में अध्ययनरत दिव्यांग छात्र-छात्राएँ

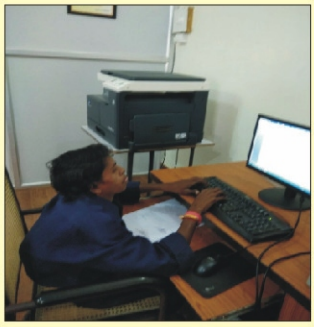

अनुक्रमणिका

क्र.	विवरण	पृष्ठ	क्र.	विवरण	पृष्ठ
1.	आई.क्यू.ए.सी.	1	26.	समाज में शिक्षा की आवश्यकता	31
2.	आंतरिक मूल्यांकन	3	27.	बी.एस.सी. वनस्पति शास्त्र के बाद	
3.	अधोसंरचना के विकास एवं			जॉब के विकल्प	32
	मूलभूत सुविधाएं	4	28.	सशक्त भाषा संस्कृत	34
4.	सेमेस्टर प्रणाली एक नजर में	6	29.	खेलों के माध्यम से व्यक्तित्व विकास	
5.	रैगिंग दण्डनीय अपराध है	7		एवं रोजगार	35
6.	शिक्षक-अभिभावक योजना	8	30.	छत्तीसगढ़ की पावन धरा में	36
7.	महाविद्यालय छात्रसंघ	9	31	सकारात्मक सोच	37
8.	परामर्श केन्द्र	9	32.	अनुभवों के सफर में	38
9.	राष्ट्रीय सेवा योजना	10	33.	ईश्वर की अनुपम कृति ''दिव्यांग''	39
10.	यूथ रेड क्रॉस एवं दिव्यांग प्रकोष्ठ	11	34.	शैक्षणिक संस्थान और छात्र	40
11.	शोध का महत्व	12	35.	साक्षर नारी, सशक्त नारी	41
12.	महिला सशक्तिकरण एवं नारी उत्पीड़न	13	36.	अपने आप को धोखा देना छोड़िये	42
13.	सांस्कृतिक एवं साहित्यिक प्रसार	14	37	मनुष्य का जीवन	43
14.	कैरियर काउंसलिंग	15	38	भारतीय संगीत	44
15.	महाविद्यालय में स्मार्ट क्लास	16	39	सुसंगति का परिणाम	45
16.	स्वीप प्लान	18	40	आवारा लड़का	46
17.	इग्नू में रोजगार मूलक पाठ्यक्रम	20	41	प्रकृति की पुकार	47
18.	मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा (सुंदरलाल शर्मा)	21	42	मैं ईमानदार हूँ	48
19.	यू.जी.सी.	22	43	अंधविश्वास	49
20.	छत्तीसगढ़ी कहावतों का अध्ययन	23	44	दर-दर की ठोकरें	50
21	वाणिज्य शिक्षा व भविष्य निर्माण	25	45	वो दिन मैं कैसे भूल जाऊँ माँ	51
22.	21वीं शताब्दी में हिन्दी का स्वरुप	26	46	क्योंकि ''मैं आया'' नही थी ''मैं आयी''	52
23.	राष्ट्रीय युवा दिवस	27	47	बचपन	53
24	छत्तीसगढ़ में महिला सशक्तिकरण	28	48	सीख	53
25.	जी.एस.टी.	29	49	माँ-बाप को भुलना नही	54

अनुक्रमणिका

क्र.	विवरण	पृष्ठ	क्र.	विवरण	पृष्ठ
50	बालदिवस	54	76	College life	72
51	कविता	54	77	Smart Phones & Issues	73
52	हमारे सपनों का भारत	55	78	Think before you Speak	74
53	प्रकृति	55	79	Democratic India	75
54	चल-चल रे राही चल रे	56	80	Swami's message	76
55	जिंदगी बहुत हसींन है	56	81	Mythology	76
56	बेटियाँ हैं तो कल है	57	82	The World	77
57	संघर्ष	57	83	सत्र 16-17 में महाविद्याय से उत्तीर्ण	
58	काश ! मैं गुलाब होती	58		सर्वाधिक अंक प्राप्त छात्र-छात्राओं की	
59	मानव कल्याणकारी प्रकृति माँ	58		सूची	77
60	डर को भगा दो	59	84	महाविद्यालय शैक्षिणक परिवार	78
61	उठो नागरिक	59	85	सत्र 17-18 में विश्वविद्यालयीन	
62	मैं एक नन्ही परी	60		खेल प्रतियोगता में भाग लेने वाले	
63	भ्रूण हत्या	60		छात्र छात्राओं के नाम	80
64	गुरुओं को कोटि-कोटि प्रणाम	61			
65	प्रकृति	61			
66	जीवन नही मरा करता है	62			
67	छत्तीसगढ़ एक परिचय	63			
68	बिहनिया	65			
69	मोर माटी	66			
70	लागे सरग समान	66			
71	हमन लईका रेहेन	67			
72	Learning from books	68			
73	Ego & me	69			
74	A.P.J. Abdul Kalam	71			
75	15 Interesting & special facts	71			

IQAC
(Internal Quality Assurance Cell)

- आंतरिक गुणवत्ता आश्वासन प्रकोष्ठ, महाविद्यालय की सबसे प्रधान समिति है। महाविद्यालय की सभी आंतरिक समितियों तथा विभिन्न गतिविधियों एवं विकास संबंधी योजनाओं तथा कार्यो को सुचारु रुप से संपादन करना समिति का प्रमुख उद्देश्य है।
- महाविद्यालय के प्राचार्य इस समिति के संरक्षक होते है। महाविद्यालय के वरिष्ठ प्राध्यापक तथा शहर के गणमान्य नागरिक सदस्य के रुप में समिति में शामिल किये जाते है।
- विकास कार्यो के प्रस्ताव IQAC की बैठक में पारित किये जाते है तथा महाविद्यालय की प्रत्येक गतिविधि IQAC की निगरानी में संपन्न की जाती है तथा IQACकक्ष में महाविद्यालय के सभी आवश्यक दस्तावेजों का संग्रह किया जाता है।
- सत्र 2016-17 में कुल 2381 छात्र/छात्रायें थी जिनमें 1039 छात्र और 1342 छात्राएँ थी। एवं सत्र 2017-18 में कुल छात्र संख्या 2611 है जिसमें 1192 छात्र और 1419 छात्राएँ है। इस वर्ष छात्र संख्या में लगभग 10 प्रतिशत की वृद्धि हुई है।
- विगत वर्ष में विश्वविद्यालयीन परीक्षा में महाविद्यालय का परीक्षा परिणाम लगभत 85 प्रतिशत रहा।
- सत्र 2016-17 से विश्वविद्यालय द्वारा सभी स्नातकोत्तर कक्षाओं में सेमेस्टर प्रणाली की शुरुवात की गई थी। महाविद्यालय में यह प्रणाली सुचारु रुप से संचालित हो रही है।
- विगत वर्ष NAAC मूल्यांकन की तैयारी हेतु महाविद्यालय में IQAC की देखरेख में WIFI सिस्टम स्मार्ट क्लास रुम, ग्रंथालय का विकास, बायो मैट्रिक वेबसाईट का विस्तार जैसी सुविधाएं उपलब्ध कराई गई।
- IQAC के माध्यम से नये पाठ्यक्रमों PGDIC- Post Graduate Diploma In Criminology, DCA, B.Sc. में Bio Technology विषय, हेतु प्रेषित प्रस्ताव पर स्वीकृति प्राप्त हो गई है।
- एम.कॉम., एम.एस.सी गणित, एम.ए. हिन्दी, पी.जी.डी.सी.ए. तथा कम्प्यूटर में इस सत्र में सीट वृद्धि की अनुमति प्राप्त हुई है।
- इस सत्र में विश्वविद्यालय के आदेशानुसार आंतरिक मूल्यांकन प्रणाली स्नातक प्रथम वर्ष में लागू की गई है। आंतरिक परीक्षा के 10 प्रतिशत अंको को विश्वविद्यालयीन मुख्य परीक्षा में सम्मिलित किया जायेगा। महाविद्यालय में इस हेतु छःमाही परीक्षा का आयोजन किया गया, जिसमें छात्रों की उपस्थिति संतोषजनक रही।
- महाविद्यालय में छात्र-अभिभावक प्रकोष्ठ का गठन किया गया है। इसके अंतर्गत छात्र/छात्राओं को विभाजित करते हुए प्राध्यापकों को उनके प्रतिपालक के रुप में नियुक्त किया गया है। ऐसे शिक्षक अभिभावक एवं छात्र/छात्राओं की सभी जानकारी एकत्रित करेगें तथा इनके समस्याओं का समाधान करेंगे।
- महाविद्यालय द्वारा स्वशासन (Autonomy) एवं CPE- Centre with Potential for Excellence हेतु UGC- University grants Commission (विश्वविद्यालय अनुदान आयोग) को प्रस्ताव प्रेषित किया गया है तथा मॉडल कॉलेज के रुप में विकसित करने हेतु उच्च शिक्षा संचालनालय को प्रस्ताव प्रेषित किया गया है।

- स्नातकोत्तर स्तर पर MSW-Master of Social Welfare, MA Psychology, PGDLL-Post Graduate Diploma in Labour Law, PGDIB- Post Graduate Diploma in Banking जैसे नये पाठ्यक्रम एवं स्नातक स्तर पर बी.सी.ए., बी.एस.सी. आई.टी. एवं बी.ए. में संगीत एवं दर्शन शास्त्र विषयों को प्रारंभ करने हेतु प्रस्ताव प्रेषित किये गये है।
- स्नातकोत्तर कक्षाओं के छात्र/छात्राओं हेतु महाविद्यालय के पी.एस.सी. द्वारा चयनित सहा. प्राध्यपकों द्वारा नेट/सेट/पी.एस.सी. का निशुल्क प्रशिक्षण इस सत्र से प्रारंभ किया जायेगा।
- महाविद्यालय के प्राध्यापकों को Orientation (उन्मुखीकरण) और रिफ्रेशर Refresher Programmes तथा विभिन्न कार्यशाला, सेमिनार, सम्मेलन में भाग लेने के अवसर प्राप्त होते है। इस सत्र में वनस्पति विभाग के पी.एस.सी. चयनित सहा. प्राध्यापक श्री सुशील अग्रवाल ने गुरु घासीदास विश्वविद्यालय, बिलासपुर के रिफ्रेशर कोर्स में 'A' Grade प्राप्त किया ।
- महाविद्यालय के यूथ रेड क्रास सोसायटी के अंतर्गत गठित दिव्यांग प्रकोष्ठ में अध्ययनरत् 14 नियमित दिव्यांग छात्र/छात्राओं को चिन्हांकित करते हुए 14 नियमित प्राध्यापकों को इनके Counsellor के रुप में नियुक्त किया गया। इन विशेष छात्र/छात्राओं को सहायता प्रदान करते हुए अनेक लाभकारी योजनाओं की जानकारी दी जायेगी।
- IQAC द्वारा महाविद्यालय में समय-समय पर विभिन्न विषयों पर एक दिवसीय कार्यशालाओं का आयोजन किया जाता है। इस सत्र में आयोजित " Hazards of Snake Bite and Its Prevention " तथा " Cyber Crime " में छात्र/छात्राओं का विशेष आकर्षण रहा।
- IQAC द्वारा दिये गये प्रस्तावों पर विचार करते महाविद्यालय में अनुशासन एवं सुरक्षा की दृष्टि से संपूर्ण परिसर में लगभग 12 कैमरे लगाये गये है। इससे रैगिंग की समस्या समाप्त हो गई है। Anti Ragging समिति द्वारा छात्र/छात्राओं की जानकारी के लिये महाविद्यालय में विभिन्न स्थानों पर रैगिंग के परिणाम एवं दण्ड के बैनर्स लगाये गये है।
- महाविद्यालय के अधोसरंचना का व्यापक विस्तार हो रहा है। नवीन 50 सीटर महिला छात्रावास उपलब्ध है तथा 100 सीटर कन्या छात्रावास का निर्माण कार्य प्रगति पर है। बाउण्ड्रीवाल बनने के उपरांत छात्रावास की सुविधा (छात्राओं को) प्रदान की जायेगी। छात्र/छात्राओं हेतु नया साईकिल स्टैण्ड निर्माणाधीन है।
- राष्ट्रीय उच्च शिक्षा अभियान RUSA- (National Higher Education Mission Ministry of Human Resource Development) के अंतर्गत महाविद्यालय में 08 अध्यापन कक्षों का निर्माण कार्य लगभग पूर्ण हो गया है। राष्ट्रीय उच्च शिक्षा अभियान भारत शासन की योजना है, जिसके अंतर्गत उच्च शिक्षा संस्थानों में विकास हेतु अनुदान प्रदान किया जाता है।
- महाविद्यालय में जिला खनिज न्यास की सहायता से 500 सीट की क्षमता का ऑडिटोरियम का निर्माण लगभग पूर्ण हो रहा है।
- नवीन कम्प्यूटर प्रयोगशाला, ग्रंथालय का विकास एवं विस्तार, महाविद्यालय द्वार पर दिव्यांगजनों हेतु रैम्प, भवन एवं प्रयोगशालाओं की मरम्मत एवं विस्तार, अतिरिक्त अध्यापन कक्ष, छात्र एवं छात्राओं हेतु पृथक कॉमन रुम, क्रिकेट पिच का निर्माण, Acupressure Pathway का निर्माण, Canteen का विस्तार, फीस काउंटर का विस्तार पृथक Transformer एवं ATM के प्रस्ताव विभिन्न संस्थानों को प्रेषित किये गये है।

- कोरबा जिले में यह महाविद्यालय अग्रणी एवं नोडल महाविद्यालय के रुप में चिन्हांकित है तथा इस सत्र में व्यापम की परीक्षाओं को सुचारु रुप से संचालित करने हेतु महाविद्यालय को पुरस्कृत किया गया है।
- छत्तीसगढ़ राज्य में उच्च शिक्षा के क्षेत्र में इस महाविद्यालय का महत्वपूर्ण स्थान है तथा नेक मूल्यांकन के अगले चक्र में महाविद्यालय परिवार ने A grade प्राप्त करने का लक्ष्य बनाया है।

महाविद्यालय के विकास एवं शैक्षणिक गुणवत्ता के उन्नयन हेतु महाविद्यालय परिवार सभी छात्र / छात्राओं एवं उनके अभिभावकों से सहयोग की विनम्र अपील करता है।

श्रीमती एस. पुंडलिक
सहायक प्राध्यापक
विभागाध्यक्ष (अंग्रेजी)

समन्वयक IQAC

आंतरिक मूल्यांकन

सत्र 2017-18 में विश्वविद्यालय समन्वय समिति की 25वीं बैठक में वार्षिक परीक्षा परिणाम में ''आंतरिक मूल्यांकन के अंक जोड़ने संबंधी प्रस्ताव '' पर निर्णय लिया गया है कि स्नातक स्तर पर आंतरिक मूल्यांकन / छःमाही परीक्षा के अंक को मुख्य वार्षिक परीक्षा के अंक में जोड़ा जाना है। जिसमें आंतरिक मूल्यांकन / छःमाही परीक्षा का अंक / वेटेज 10प्रतिशत एवं मुख्य वार्षिक परीक्षा का अंक वेटेज 90 प्रतिशत होगा। आंतरिक मूल्यांकन सत्र 2017 के पूर्व भी होता था किंतु छात्रों की उपस्थिति इस परीक्षा में कम होती थी तथा उन्हें इसमें होने वाला लाभ नहीं मिल पाता था। इस अर्द्धवार्षिक परीक्षा का छात्र / छात्राओं को यह फायदा होगा कि यदि एक विषय में 100 में से 90 अंक मिलते है तो उन्हें 10 अंक में से 9 अंक का वेटेज मिलेगा। इस प्रकार यदि सभी छः विषयों के वेटेज को जोड़ा जाए तो 54 अंको का वेटेज मिलेगा जो कि वार्षिक परीक्षा में जोड़ा जावेगा। जिससे निश्चित ही उनके परीक्षा परीणम में अंको की आशातीत वृद्धि होगी। महाविद्यालय में आंतरिक मूल्यांकन बी.ए., बी.कॉम., बी.एस.सी. प्रथम वर्ष के लिये अनिवार्य है। आगामी वर्षो में सभी स्नातक कक्षाओं के लिये क्रमशः अनिवार्य किया जावेगा। इसमें शामिल न होने पर विश्वविद्यालय कोई भी कड़ा निर्णय भी ले सकता है।

अतः मैं आंतरिक मूल्यांकन समिति की सदस्य होने के नाते, समस्त अभिभावकों से अपील करती हूँ कि वे

डॉ. के. राय
प्राध्यापक
विभागाध्यक्ष (प्राणीशास्त्र)

संयोजक
आंतरिक मूल्यांकन समिति

दूसरो में सदा गुण देखें, क्योंकि जिस गुण पर, आप ध्यान देते हैं वह गुण आप में आने लगता है ।

अधोसंरचना का विकास एवं मूलभूत सुविधाएँ

शासकीय इं.वि. स्नातकोत्तर महाविद्यालय, कोरबा की स्थापना वर्ष 1981 में हुआ। साडा (वर्तमान में नगर निगम कोरबा), एस.ई.सी.एल. तथा भारत एल्यूमिनियम बालको के सहयोग से द्विमंजिला ईमारत का निर्माण वर्ष 1985 में हुआ, जिसमें प्रारंभ से बी.ए., बी.कॉम., बी.एस.सी., एम.ए., एम.कॉम., एम.एस.सी. का अध्ययन-अध्यापन शुरु हुआ। वर्तमान में इस महाविद्यालय में 12 विषयों में स्नातकोत्तर, 02 स्नातकोत्तर डिप्लोमा पाठ्यक्रम तथा अंग्रेजी व समाजशास्त्र विषयों के शोध केन्द्र संचालित है। जिले का एक मात्र स्नातकोत्तर व अग्रणी महाविद्यालय के रूप में विकसित इस महाविद्यालय में 2500 से अधिक छात्र-छात्राएँ अध्ययनरत् है और लगभग 5000 छात्र-छात्राएँ स्वाध्यायी रूप से परीक्षा में सम्मिलित होते हैं।

महाविद्यालय प्रशासन के अथक प्रयास से अद्योसंरचना का क्रमिक विकास हुआ है। शासन के द्वारा स्वीकृत मद से पृथक-पृथक लाइब्रेरी भवन, यूजीसी मद से तीन अतिरिक्त अध्ययन कक्ष, एक विशाल क्रिकेट पैवेलियन एवं 50 सीटर कन्या छात्रावास का निर्माण हुआ। इसी प्रकार राष्ट्रीय उच्चतर शिक्षा अभियान (RUSA) के तहत् 1.40 करोड़ की लागत से 8 अध्ययन कक्षों का निर्माण अंतिम चरण पर है, अध्ययन कक्षों की कमी से जूझ रहा इस महाविद्यालय को रुसा के द्वारा 08 बड़े-बड़े अध्ययन कक्षों की सौगात मिलना, निश्चित ही छात्रों की उज्जवल भविष्य के लिये लाभदायक है।

महाविद्यालय प्रशासन के प्रयास से ही जिला खनिज न्यास मद से 500 सीटर का एक विशाल एवं भव्य ऑडिटोरियम का निर्माण अंतिम पायदान पर है। यह विद्यार्थियों के व्यक्तित्व-विकास एवं रंग-मंच पर उनकी छिपी प्रतिभा को निखारने में अहम् भूमिका निभाएगी।

इस महाविद्यालय में जिले के समस्त विकास खण्डों के छात्र-छात्राएँ अध्ययनरत् हैं, साथ ही अधिकांश छात्र-छात्राएँ दूर-दराज ग्रामीण व जंगलों से आते हैं, जिनमें अनुसूचित जनजाति की बहुलता है। अतः अनुसूचित जनजाति, अनुसूचित जाति, पिछड़े वर्ग तथा निर्धन छात्राओं के 50 सीटर कन्या छात्रावास का निर्माण हो चुका है। छ.ग. शासन द्वारा 100 सीटर कन्या छात्रावास का निर्माण पृथक से किया गया है। उक्त दोनों छात्रावास के लिये बाउन्ड्रीवाल व एप्रोच सड़क के निर्माण हेतु माननीय जिला कलेक्टर को अवगत कराया गया तथा उनके द्वारा मौखिक स्वीकृति दी गयी है। छात्रावास के बाउन्ड्रीवाल निर्माण पश्चात् दोनों कन्या छात्रावास को प्रारंभ किया जावेगा इससे महाविद्यालय में अध्ययनरत् छात्राएँ लाभान्वित होंगी।

50 एकड़ के क्षेत्रफल में विकसित इस महाविद्यालय के बीचों बीच नगर निगम द्वारा सड़क निर्माण किया गया जिसके दोनों हिस्सों की जमीन अतिक्रमित होने लगी है। अतः अतिक्रमण से बचाने पेड़-पौधों की संरक्षण,

छात्र-छात्राओं की सुरक्षा तथा खेल के मैदान को क्षति होने से बचाने के लिये महाविद्यालय के चारो ओर बाउन्ड्रीवाल का निर्माण एक अहम् मुद्दा था। वर्ष 2016 में महाविद्यालय प्रशासन के प्रयास से एन.टी.पी.सी. कोरबा के सी.एस.आर. मद से बाउन्ड्रीवाल जैसे वर्षो लंबित मांग पूरी हुई, वर्तमान में इसका निर्माण प्रगति पर है।

नगर पालिक निगम कोरबा द्वारा लगभग 26 लाख की लागत का एक विशाल छायादार सायकल स्टैंड का निर्माण जारी है। अधोसंरचना के विकास में नगर निगम द्वारा पूर्व में भी एक क्रीड़ा भवन का निर्माण कराया गया है।

अधोसंरचना के विकास में महाविद्यालय के लिये अपना ट्रांसफार्मर नहीं होने के कारण तथा भार में वृद्धि होने से भवन की बिजली बार-बार बाधित होती थी। उक्त समस्या का समाधान बालको के सी.एस.आर. मद से ट्रांसफार्मर की स्वीकृति हो चुका है, ट्रांसफार्मर की सुविधा मिलने से महाविद्यालय में बिजली की उपलब्धता में निरन्तरता रहेगी। इसी प्रकार जिला खनिज न्यास मद से ई-लाईब्रेरी का निर्माण एवं ई-कम्प्यूटर लैब के निर्माण कार्यो के लिये प्राक्कलन तैयार कर जिला कार्यालय को प्रेषित की जा चुकी है, सम्भवतः निर्माण कार्य शीघ्र प्रारंभ होगें।

आगामी अधोसंरचना के विकास के लिये महाविद्यालय प्रशासन द्वारा जिला खनिज न्यास मद से 11 अध्ययन कक्ष, 08 प्रयोगशाला कक्ष, महिला कॉमन कक्ष, प्राचार्य एवं स्टॉफ क्वार्टर की मांग निर्माण एजेंसी के माध्यम से प्राक्कलन तैयार करवाकर जिला कार्यालय खनिज न्यास विभाग को प्रेषित किया गया है।

महाविद्यालय में शासन द्वारा निर्मित 50 सीटर लड़कों का छात्रावास भी है, जो वर्तमान में जिला कलेक्टर के अधीन है, उक्त भवन की मरम्मत की आवश्यकता है, जिसके लिये बहुत ही शीघ्र पत्राचार किया जावेगा। महाविद्यालय के मुख्य भवन का निर्माण आज 32 वर्ष पूरे हो गये हैं, इसका मरम्मत एवं आधुनिकीकरण के लिये लोकनिर्माण विभाग से प्राक्कलन तैयार कर के शासन व जिला खनिज न्यास को भेजा जा चुका है।

महाविद्यालय की जनभागीदारी समिति द्वारा जनभागीदारी मद द्वारा बॉटनीकल गार्डन का निर्माण तथा उसकी बाउन्ड्रीवाल भी बनवायी गयी है। जनभागीदारी समिति के द्वारा ही महाविद्यालय के सौंदर्यीकरण एवं रंगरोगन पर सदैव ध्यान दिया जाता है। वर्तमान में छ.ग. शासन के सहयोग से 5 लाख लागत की महिला शौचालय का निर्माण अंतिम चरण पर है। छ.ग. शासन उच्च शिक्षा के मांग पर इस महाविद्यालय को आदर्श महाविद्यालय Model College के रुप में विकसित करने हेतु एक व्यापक प्राक्कलन तैयार कर छ.ग. शासन उच्च शिक्षा को भेजा जा चुका है। अतः महाविद्यालय प्रशासन छात्र-छात्राओं के हितों को ध्यान में रखकर प्रदेश में अपने विशिष्ट पहचान बनाने की दिशा में प्रयासरत् है।

नकली सोना कितना भी चमकदार दिखें, कभी भी असली की बराबरी नही कर सकता ।

सेमेस्टर प्रणाली एक नजर में

उच्च शिक्षा में विद्यार्थियों के शैक्षणिक मूल्यांकन में बदलाव समय की मांग है। परम्परागत रुप से चले आ रहें शैक्षणिक मूल्यांकन की वार्षिक प्रणाली द्वारा विद्यार्थियों का समुचित मूल्यांकन नहीं हो पा रहा था। इस तथ्य को ध्यान में रखकर विश्व के विभिन्न प्रतिष्ठित विश्वविद्यालयों द्वारा सेमेस्टर प्रणाली को अपनाया गया। सेमेस्टर प्रणाली में एक शैक्षणिक सत्र में दो बार लिखित परीक्षा के आयोजन के साथ आंतरिक मूल्यांकन,सेमीनार एवं फिल्ड वर्क को भी सम्मिलित किया गया। इस प्रणाली की उपयोगिता को देखते हुए विश्वविद्यालय अनुदान आयोग ने देश के सभी विश्वविद्यालयों को सेमेस्टर प्रणाली को लागू करने का निर्देश जारी किया है।

बिलासपुर विश्वविद्यालय बिलासपुर ने सत्र 2016-17 से स्नातकोत्तर स्तर पर सेमेस्टर प्रणाली को अपनाया है, जिसमें विद्यार्थियों को हर सेमेस्टर के प्रत्येक विषय में लिखित परीक्षा के साथ दो आंतरिक मूल्यांकन (10 प्रतिशत अधिभार) एवं एक सेमीनार / फिल्डवर्क (10 प्रतिशत अधिभार) करना होता है। सेमेस्टर प्रणाली के संबंध में विश्वविद्यालय द्वारा जारी अधिसूचना के अनुसार विद्यार्थियों को ATKT (Allowed To Keep Term) की पात्रता भी होती है, जिससे उसकी पढ़ाई में व्यवधान नहीं आता एवं वह स्नातकोत्तर के लिये निर्धारित अवधि में पाठ्यक्रम पूर्ण कर आठ सेमेस्टर में परीक्षा उत्तीर्ण कर सकता है।

सेमेस्टर प्रणाली में एक शैक्षणिक सत्र में दो बार परीक्षा आयोजन होने से विद्यार्थियों के अध्ययन में क्रमबद्धता बनी रहती है साथ ही विषय में अर्जित ज्ञान की प्रस्तुतीकरण में विद्यार्थी अभ्यस्थ हो जाते हैं। परीक्षा का दबाव कम होने से विद्यार्थी विषय को गहनता से अध्ययन करता है एवं उसके परीक्षा परिणाम भी बेहतर आते हैं।

भविष्य में सेमेस्टर प्रणाली को Choice based Credit System एवं Honours Course के साथ स्नातक स्तर पर भी लागू किया जाना विद्यार्थियों के हित में होगा। महाविद्यालय स्तर पर सेमेस्टर प्रणाली के प्रभावशाली रुप से क्रियान्वयन के लिये विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा निर्धारित छात्र-शिक्षक अनुपात में प्राध्यापकों / सहा.प्राध्यापकों तथा गैर शैक्षणिक कर्मचारियों की नियुक्ति आवश्यक है।

डॉ. वी.के. दुबे
प्राध्यापक
विभागाध्यक्ष (भौतिक शास्त्र)

सुनों गौर से भारतवासी मिली आजादी अच्छी खासी
लाभ हो उस आजादी का तब स्वच्छ और साफ भारत जब

रैगिंग दण्डनीय अपराध है

शैक्षणिक संस्थाओं में अपने लक्ष्य को प्राप्त करने के लिये आवश्यक है कि प्राचार्य, अधिकारियों, कर्मचारियों तथा छात्रों के मध्य परस्पर सहयोग एवं समन्वय हो। साथ ही शैक्षणिक संस्थाओं में अकादमिक गुणवत्ता में निरन्तरता एवं अभिवृद्धि के लिये आवश्यक है कि अकादमिक संस्थाओं का पर्यावरण भय एवं तनाव मुक्त रहें, किंतु शैक्षणिक संस्थाओं में सकारात्मक पर्यावरण बनाये रखने में कभी-कभी रैगिंग द्वारा अनावश्यक व्यवधान निर्मित कर दिया जाता है।

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के विनिमय ''उच्च शिक्षण संस्थाओं में रैगिंग अपराध निषेध 2009'' पैरा 3 के उपशीर्षक रैगिंग कैसे होती है । में कहा गया है- किसी छात्र को (नवीन प्रविष्ट या अन्यथा लक्षित करके रंग, प्रजाति, धर्म, जाति, जातिमूल, लिंग, लैगिंक, प्रवृत्ति बाह्य स्वरूप, राष्ट्रीयता, क्षेत्रीय मूल, भाषा वैशिष्ट्य, जन्म निवास स्थान या आर्थिक पृष्टभूमि के आधार पर शारीरिक अथवा मानसिक प्रताड़ना (दबंगई एवं बहिष्करण) का कृत्य रैगिंग माना जायेगा।

संस्था में छात्र/छात्राओं के बीच रैगिंग कार्यो को बढ़ावा न मिले एवं जूनियर छात्र/छात्राओं में भय व्याप्त ना हो इसके लिये संस्था में रैगिंग रोकथाम हेतु एन्टी रैगिंग समिति गठित की गयी है । यदि रैगिंग का कोई प्रकरण पाया जाता है तो कठोर कार्यवाही होगी।

रैगिंग दण्डनीय अपराध है यदि कोई छात्र/छात्राएँ इसमें संलिप्त पाये जाते हैं तो कठोर अनुशासनात्मक एवं दण्डात्मक कार्यवाही होगी, जिसमें-

1. रैगिंग में लिप्त पाये जाने पर 5 वर्ष की कठोर कारावास अथवा 5 हजार रूपये जुर्माने रूप में दण्डित किया जा सकता है।
2. शिक्षण संस्था प्रमुख अभियुक्त छात्र को निलंबित करने तथा शैक्षणिक संस्था परिसर से तथा छात्रावास प्रवेश से वर्जित किया जा सकता है।
3. शैक्षणिक संस्था का कोई छात्र धारा 4 के अधीन सिद्ध दोष पाये जाने पर संस्था से निष्कासन के लिये जिम्मेदार होगा।
4. निष्कासित छात्र को अन्य शैक्षणिक संस्था में राज्य के क्षेत्राधिकार के भीतर तीन वर्ष की अवधि तक प्रवेश नहीं दिया जावेगा।

अतः हमारा महाविद्यालय छात्र/छात्राओं से यह अपेक्षा करता है कि छात्र प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से या अन्य किसी भी प्रकार से रैगिंग में भाग नहीं लेगा। रैगिंग की गतिविधियों को पूर्णतः समाप्त करने के लिये हम

डॉ. एस. खरे
प्राध्यापक
विभागाध्यक्ष (समाजशास्त्र)

संयोजक-एन्टी रैगिंग समिति

जिस तरह एक मकड़ी अपने ही मुहँ से जाल निकालती है और खुद ही उसमें फंस जाती है,

उसी तरह गलत काम करने वाला इंसान अपने ही जाल में फँसता जाता है ।

शिक्षक-अभिभावक योजना

विद्यार्थियों की शैक्षणिक एवं शैक्षणेत्तर गतिविधियों को प्रोत्साहित करने, उनका विकास करने, उन्हें व्यावसायिक मार्गदर्शन प्रदान करने के उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए छत्तीसगढ़ शासन के उच्च शिक्षा विभाग द्वारा प्रदेश के समस्त महाविद्यालयों को शिक्षक-अभिभावक योजना प्रारंभ किये जाने का निर्णय लिया गया था। विद्यार्थियों की महाविद्यालयीन समस्याओं को जानना, उनका निवारण करना, महाविद्यालय/कक्षाओं में उनकी उपस्थिति सुनिश्चित करना भी योजना के उद्देश्य हैं। योजना के परिपालन में हमारे महाविद्यालय के छात्र-शिक्षक अनुपात के आधार पर शिक्षक-अभिभावकों की नियुक्ति की गई है। महाविद्यालय के प्राध्यापक शिक्षक-अभिभावक के रुप में कार्य करेंगे। योजना के क्रियान्वयन हेतु सभी शिक्षक-अभिभावक अपने लिये आबंटित विद्यार्थियों का पता, दूरभाष क्रमांक, उपस्थिति रिकार्ड, पारिवारिक स्थिति, उनकी हॉबी (शौक), शैक्षणेत्तर गतिविधियाँ आदि का पूरा रिकार्ड अपने पास रखते हैं। नियमित रुप से उपस्थित न रहने वाले विद्यार्थियों तथा जिनकी उपस्थिति 75 प्रतिशत से कम है, साथ ही महाविद्यालय में उनकी गतिविधियों की सूचना विभिन्न विषयों के शिक्षक संबंधित शिक्षक-अभिभावक के माध्यम से विद्यार्थियों के अभिभावकों को प्रेषित की जाती है। विद्यार्थियों की महाविद्यालय से संबंधित समस्याओं से अवगत होते हुए उनके निराकरण हेतु प्रयास किया जाता है। विद्यार्थियों के सभी प्रकार के आवेदनों जैसे प्रवेश, परीक्षा, स्थानांतरण प्रमाण पत्र, छात्रवृत्ति फार्म आदि भरवाने एवं जमा करवाने में उनकी सहायता की जाती है। प्राचार्य द्वारा समय-समय पर योजना के क्रियान्वयन की समीक्षा की जाती है। सत्र 2017-18 में महाविद्यालय में यह व्यवस्थ की गई है कि माह के प्रथम शनिवार को बी.ए., एम.ए. कक्षाओं में, द्वितीय शनिवार को बी.कॉम., एम.कॉम., तृतीय शनिवार को बी.एस.सी., एम.एस.सी (बायो समूह) तथा चतुर्थ शनिवार को बी.एस.सी., एम.एस.सी. (गणित समूह) के छात्रों के अभिभावक संबंधित प्राध्यापकों से संपर्क कर सकते है। छात्र/छात्रायें स्वयं भी अपनी महाविद्यालयीन तथा अन्य समस्याओं के समाधान हेतु संबंधित प्राध्यापकों से संपर्क कर सकते है। सत्र में एक बार विद्यार्थियों के अभिभावकों के साथ बैठक लेकर उनसे प्रत्यक्ष संपर्क स्थापित करना भी योजना में प्रावधान है। अतः विद्यार्थियों से अपेक्षा की जाती है कि वे अभिभावक मीटिंग की सूचना अपने माता-पिता को अवश्य देवें तथा पालक महाविद्यालय में उपस्थित होकर बैठक में आवश्यक रुप से सम्मिलित होवें ताकि महाविद्यालय के तथा महाविद्यालयीन छात्र/छात्राओं के विकास में उनके अमूल्य विचारों का सम्मिलित

संयोजक
शिक्षक-अभिभावक योजना समिति

श्रीमती आर. सिन्हा
सहायक प्राध्यापक (अर्थशास्त्र)

महाविद्यालय छात्रसंघ 2017-18

छत्तीसगढ़ शासन उच्च शिक्षा विभाग के पत्र एवं बिलासपुर विश्वविद्यालय बिलासपुर के छात्रसंघ गठन के अध्यादेश क्रमांक 01 (संशोधित) के अनुसार महाविद्यालय में छात्रसंघ का गठन मनोनयन द्वारा दिनांक 05 सितम्बर 2017 को किया गया, जिसमें मनोनित पदाधिकारी निम्नानुसार है :-

अध्यक्ष	-	कु. समलेश्वरी सिंह	एम.एस.सी. तृतीय सेमेस्टर (रसायन शास्त्र)
उपाध्यक्ष	-	कु. किरण यादव	एम.एस.सी. प्रथम सेमेस्टर (प्राणी शास्त्र)
सचिव	-	कु. आकांक्षा पाण्डेय	बी.एस.सी. अंतिम (बायो)
सहसचिव	-	कु. खुशबू सोनी	बी.एस.सी. द्वितीय (गणित)

इसी तरह सभी कक्षाओं के लिये कुल 46 कक्षा प्रतिनिधियों का मनोनयन भी किया गया। छात्र/छात्राओं की सहभागिता बढ़ाने एवं महाविद्यालय में विभिन्न छात्रसंघ गतिविधियों के सफल संचालन के लिये अध्यादेश के अनुसार पांच Activity Societies का गठन भी किया गया, जो इस प्रकार है - सांस्कृतिक सोसायटी, सामाजिक कार्य सोसायटी, विज्ञान क्लब, क्रीडा सोसायटी, Society for Gender Issues।

डॉ. व्ही. दुबे
प्राध्यापक
विभागाध्यक्ष (भौतिक शास्त्र)

प्रभारी छात्रसंघ

'' परामर्श केन्द्र ''

संचालनालय स्वास्थ्य सेवायें (छ.ग.) शासन के निर्देशानुसार महाविद्यालय के मनोविज्ञान विभाग में ''परामर्श केन्द्र'' की स्थापना की गयी है। परामर्श केन्द्र के संचालन हेतु मनोविज्ञान विभाग की विभागाध्यक्ष डॉ. (श्रीमती) अवन्तिका कौशिल को राष्ट्रीय मानसिक स्वास्थ्य कार्यक्रम के तहत रायपुर (छ.ग.) में काउंसलिंग का प्रशिक्षण NIMHANS बैंगलोर से आए विशेषज्ञों द्वारा दिया गया है। वर्तमान समय में बदलती जीवनशैली, माता-पिता का नौकरीपेशा होना तथा प्रतिस्पर्धा की अंधी दौड़ से युवाओं में तनाव का विकराल रुप देखने को मिलता है। अपराध दर एवं मानसिक रोग वृद्धि के कारण युवाओं में परामर्श आवश्यक हो गया है। युवाओं में मानव मूल्यों का ह्रास तथा निहित स्वार्थ के कारण हो रहे धार्मिक एवं नैतिक शोषण को परामर्श के द्वारा रोका जा सकता है। वस्तुतः परामर्श एक सोद्देश्य क्रिया है जो व्यक्ति को जीवन की कठिन परिस्थितियों में कठिनतापूर्वक चुनाव करने तथा समायोजन में सहायता करता है। महाविद्यालयीन परामर्श केंद्र का उद्देश्य विद्यार्थियों की समस्याओं

डॉ. ए. कौशिल
सहायक प्राध्यापक
विभागाध्यक्ष (मनोविज्ञान विभाग)

राष्ट्रीय सेवा योजना आज की आवश्यकता

व्यक्तित्व विकास सफलता की कुंजी है। राष्ट्रीय सेवा योजना द्वारा छात्रों का सर्वांगीण विकास होता है। समाज सेवा के अवसर राष्ट्रीय सेवा योजना में प्राप्त होते है। समाज सेवा के माध्यम से व्यक्तित्व का विकास स्वतः होता है। एक योग्य प्रशासक के लिये समाज को नजदीक से समझना अति आवश्यक है।

महाविद्यालय में राष्ट्रीय सेवा योजना स्थापित करने का मुख्य उद्देश्य छात्रों के व्यक्तित्व का विकास कर एक योग्य नागरिक तैयार करना है। छात्र-छात्राएँ राष्ट्रीय सेवा योजना के माध्यम से समाज के विभिन्न वर्गो के लोगों से मिलकर समाज में व्याप्त कुरीतियों, गरीबी, बेरोजगारी, अशिक्षा आदि से वाकिफ होते हैं और उनके समाधान हेतु प्रयास करते हैं। जरूरतमंद लोगों के बीच रहकर छात्रों में दया एवं करुणा का भाव विकसित होता है। वे प्रतिवर्ष रक्तदान करके कई लोगों के जान बचाने में योगदान देते हैं।

राष्ट्रीय सेवा योजना के छात्रों का भावात्मक विकास सबसे अधिक होता है। उनके कदम सांस्कृतिक संरक्षण एवं संवर्धन की ओर आगे बढते है। साथ ही पुरातात्विक धरोहरों की रक्षा करना अपना कर्तव्य समझते हैं। समय-समय पर परम्परागत नाच-गान (सुआ, कर्मा, ददरिया, राउत नाच, देशी खेल) का आयोजन कर छत्तीसगढ़ी संस्कृति की रक्षा के हितार्थ काम करते हैं। सार्वजनिक स्थानों एवं देवी देवताओं के स्थानों की साफ-सफाई कर धरोहरों की रक्षा करते हैं।

सात दिवसीय विशेष शिविर में पूरे 24 घंटे की समय सारिणी बनाकर उसके अनुरुप कार्य करते हुए आदर्श जीवन जीने की शैली सिखते हैं। जिसमें प्रार्थना, व्यायाम, योग, श्रमदान, बौद्धिक चर्चा, देशी खेल, जनसंपर्क, सांस्कृतिक कार्यक्रम आदि सुबह 5.00 बजे से रात्रि 10.00 बजे तक अनवरत रुप से संपादित होते हैं।

वास्तव में जो छात्र सात दिवसीय विशेष शिविर में भाग लेतें हैं, वे अनुशासित, सामाजिक एवं समय की पाबंदी वाले बन पाते हैं। प्रतिवर्ष छात्र-छात्राएँ राष्ट्रीय सेवा योजना से निखर कर विभिन्न क्षेत्रों में सफलतापूर्वक

कार्यक्रम अधिकारी
पुरुष इकाई

डॉ. बी.एल. साय
विभागाध्यक्ष (भूगोल)

यूथ रेड क्रॉस सोसायटी एवं दिव्यांग प्रकोष्ठ

शासकीय इं.वि.स्नातकोत्तर महाविद्यालय कोरबा में (YRCS) यूथ रेड क्रॉस सोसायटी का गठन सन् 2003 में हुआ था एवं इसका प्रमुख उद्देश्य मानव मूल्यों की रक्षा करना, अशक्त एवं असहायों की सेवा, पर्यावरण संरक्षण एवं स्वच्छता, प्राकृतिक आपदा का निवारण इत्यादि है। महाविद्यालय की YRCS एक सक्रिय इकाई के रुप में निरंतर कार्यशील है।

सत्र 2017-18 में YRCS द्वारा आपदा प्रबंधन एवं निवारण पर जागरुकता कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में CISF NTPC के दल के द्वारा विभिन्न प्रकार के अग्नि-शामन यंत्रों की जानकारी देते हुए उनका उपयोग करने का प्रदर्शन भी किया गया। उपनिरीक्षक श्री सुनील भावसार ने अपने उद्बोधन में प्राथमिक चिकित्सा एवं आपदा प्रबंधन पर विशेष प्रकाश डाला। दिनांक 10.01.2018 को ग्राम घिनारा, ब्लॉक करतला में महाविद्यालय के NSS छात्र/छात्रा इकाई के संयुक्त सात दिवसीय शिविर में लगभग 256 ग्रामीण बच्चों क रक्त वर्ग समूह परीक्षण एवं ग्रामीणों को संतुलित आहार, कुपोषण, तनाव प्रबंधन एवं केरियर निर्माण के संबंध में महत्वपूर्ण व्याख्यान दिये गये।

सत्र 2016-17 में YRCS के अंतर्गत महाविद्यालय में अध्ययनरत् नियमित दिव्यांग छात्र/छात्राओं की समस्याओं के समाधान हेतु दिव्यांग प्रकोष्ठ का गठन किया गया। सत्र 2017-18 में दिव्यांग प्रकोष्ठ द्वारा महाविद्यालय में अध्ययनरत् 14 नियमित दिव्यांग छात्र/छात्राओं को चिन्हाकिंत कर 14 नियमित प्राध्यापकों को इनके काउंसलर का दायित्व दिया गया। प्राध्यापकों ने इन विशेष छात्र-छात्राओं की आवश्यकताओं, समस्याओं इत्यादि का संपूर्ण ध्यान रखने की जिम्मेदारी ली। इस वर्ष दिव्यांग प्रकोष्ठ का सबसे महत्वपूर्ण उद्देश्य महाविद्यालय के दिव्यांग छात्र-छात्राओं को पेनकार्ड, वोटर आईडी कार्ड, स्मार्ट कार्ड, UDID/Pension छात्रवृत्ति, विश्वविद्यालयीन परीक्षा शुल्क वापसी, बीमा इत्यादि में सहयोग तथा शासन द्वारा इनके लिये प्रदत्त योजनाओं एवं सुविधाओं की संपूर्ण जानकारी उपलब्ध कराना।

दिव्यांग प्रकोष्ठ के द्वारा दिनांक 01.12.2017 को अंतर्राष्ट्रीय दिव्यांग दिवस के उपलक्ष्य में जिले के समस्त महाविद्यालयीन दिव्यांग छात्र-छात्राओं हेतु विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया, जिसमें मुख्य अतिथि के रुप में बिलासपुर विश्वविद्यालय के कुलपति श्री जी.डी. शर्मा, असम विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. आर.के. शर्मा, विशिष्ट अतिथि के रुप में डिप्टी कलेक्टर जिला कोरबा-श्रीमती आभा तिवारी, समाज कल्याण विभाग की उपसंचालक श्रीमती मैथ्यू एवं जाकिर हुसैन कोरबा के प्रसिद्ध गायक कलाकार उपस्थित थे। विगत परीक्षा परिणाम के गुणानुक्रम के आधार पर बी.ए. द्वितीय वर्ष के दौलत शर्मा (स्नातक स्तर) तथा एम.ए. तृतीय सेमेस्टर राजनीति शास्त्र की कु. रितु साहू को (स्नातकोत्तर) पर महाविद्यालय के ''यूथ आइकान'' घोषित किया गया।

महाविद्यालय के नियमित प्राध्यापकों द्वारा इनकी सहायता हेतु आर्थिक सहयोग प्रदान कर इस राशि से दिव्यांग राहत कोष का निर्माण किया गया तथा इस राशि को दिव्यांग प्रकोष्ठ के बैंक खाते में जमा करके आवश्यकतानुसार तथा प्रकोष्ठ की बैठक की निर्णयानुसार उनके अध्ययन-अध्यापन प्रतियोगी परीक्षाओं एवं सामान्य चिकित्सा इत्यादि में इस राशि का उपयोग करने का निर्णय लिया गया। प्राध्यापकों द्वारा स्वेच्छा से प्रदान

की पुस्तकों से एक दिव्यांग ग्रंथालय का निर्माण किया गया। अंतर्राष्ट्रीय दिव्यांग दिवस के अवसर पर इन पुस्तकों को छात्र-छात्राओं को वितरित किया गया।

महाविद्यालय अपने स्तर पर उपलब्ध संसाधनों के आधार पर इनको कम्प्यूटर, इंटरनेट इत्यादि का मूलभूत प्रशिक्षण प्रदान करते हुये इनके कौशल विकास हेतु प्रयासरत् है। दिव्यांग प्रकोष्ठ समाज कल्याण विभाग जिला कोरबा से इनको शासन द्वारा निःशुल्क कौशल विकास के अल्प अवधि के सर्टीफिकेट कोर्स में प्रवेश के कार्य कर रहा है। साथ ही आवश्यकतानुसार ट्राईसाइकिल व्हीलचेयर, कृत्रिम अंग प्रत्यारोपण, वार्षिक स्वास्थ्य परीक्षण के लिये भी प्रयास जारी है। महाविद्यालय भवन में गत वर्ष से ही इनके लिये व्हीलचेयर, आरक्षित बैठक व्यवस्था, पृथक प्रसाधन कक्ष आदि की सुविधा उपलब्ध कराई गई है।

महाविद्यालय परिवार द्वारा किये गये इन प्रयासों का प्रमुख उद्देश्य इन विशेष छात्र-छात्राओं को समाज की मुख्य धारा में सम्मिलित करके उन्हें आर्थिक रुप से सशक्त एवं आत्म निर्भर बनाना है। इसी दिशा में महाविद्यालय के समस्त छात्र-छात्राओं से विनम्र निवेदन है कि वे अपने इन चमकते सितारों का सहयोग, सहायता एवं सम्मान करें।

श्रीमती एस. पुंडलिक
सहायक प्राध्यापक
विभागाध्यक्ष (अंग्रेजी)

संयोजक
दिव्याँग प्रकोष्ठ

शोध का महत्व

आधुनिक समाज व्यक्तिगत समस्याओं से लेकर अंतर्राष्ट्रीय समस्याओं से ग्रस्त है। गतिशीलता के कारण समाज में स्थापित मूल्यों और मान्यताओं में व्यापक परिवर्तन हुआ है। सामाजिक संबंधो में विषमता, कृत्रिमता, जटिलता तथा औपचारिकता आती जा रही है तथा व्यक्तिवादी एवं भौतिकवादी जीवन दर्शन का विकास हुआ है,ऐसे समय में जब देश एवं समाज अनेको गंभीर समस्यायें चुनौती दे रही हो और समाज के संगठनात्मक संरचनात्मक ढांचे को विदीर्ण कर रही हो। ऐसे में सामाजिक शोध का विशेष महत्व है। वैश्वीकरण के वर्तमान दौरे में उच्च शिक्षा की सहज उपलब्धता और उच्च शिक्षा संस्थानों को शोध से अनिवार्य रुप से जोड़ने की नीति के शोध की महत्व को बढ़ा दिया है। आज शैक्षिक शोध का क्षेत्र विस्तृत एवं सघन हुआ है।

शोध के माध्यम से हम वैकल्पिक नीतियों का चिन्तन करना साथ ही साथ उन विकल्पों से प्रत्येक के परिणामों की जाँच कर सकते है शोध हमें बौद्धिक संतुष्टि प्रदान करता है। शोध हमारी आर्थिक प्रणाली में लगभग सभी सरकारी नीतियों के लिये आधार प्रदान करता है। शोध के स्तर पर रिसर्च पुनः शोध नहीं अपितु गहन खोज है। इसके द्वारा हम कुछ नवीन आविष्कार कर ज्ञान परम्परा के कुछ नये अध्याय जोड़ते हों।

शोध मानव ज्ञान को दिशा प्रदान करता है तथा ज्ञान भण्डार को विकसित एवं परिमार्जित करता है।

शिक्षा के विभिन्न पहलुओं के विषय में संगठित वैज्ञानिक ज्ञान पुँज का विकास करना अत्यन्त आवश्यक है।

इसी उद्देश्य को ध्यान में रखते हुये हमारे महाविद्यालय द्वारा शोध गतिविधियों को बढ़ावा दिया जा रहा है। इस महाविद्यालय में विभिन्न विषयों के शोध केन्द्र स्थापित है। वर्तमान में समाजशास्त्र, अंग्रेजी आदि में शोध केन्द्र की स्थापना की गयी है। जिससे छात्र / छात्राओं की गुणवत्ता पूर्ण शिक्ष हेतु शोध कार्य की सुविधा प्राप्त कर सकते है।

विभिन्न विषयों के प्राध्यापकों द्वारा शोध निर्देशक के रुप में भी कार्य किया जा रहा है। जिससे छात्र लाभान्वित

डॉ. एस. खरे
प्राध्यापक
विभागाध्यक्ष (समाजशास्त्र)

महिला सशक्तिकरण एवं नारी उत्पीड़न समिति

राज्य महिला आयोग रायपुर छत्तीसगढ़ द्वारा महिलाओं के हित में प्रसारित ''महिला उत्पीड़न तथा यौन शोषण संबंधी कानून''-

1. ऐसे सभी व्यवहार जो प्रत्यक्ष रुप से या अप्रत्यक्ष रुप से शामिल हो जो अरुचिकर यौन भावना से प्रेरित हों।
2. शारीरिक संपर्क एवं निकट आने का प्रयत्न,
3. यौन अनुग्रह की माँग,
4. यौन अर्थ से रंजित फब्तियाँ,
5. अश्लील चित्र दिखाना,
6. कोई अन्य अरुचिकर यौन भाव वाला शारीरिक, मौखिक अथवा गैर मौखिक संपर्क,
7. ऐसा यौन उत्पीड़न जो अपमान, स्वास्थ्य या सुरक्षा का भय दिखाकर किया जाए,
8. ऐसा यौन उत्पीड़न जो विद्वेष या माहौल दूषित होने की संभावना दिखाकर किया जाए,
9. ऐसा यौन उत्पीड़न जो हानिकारक परिणामों की चेतावनी / धमकी देकर किया जाए,
10. छेड़खानी करना,
11. किसी स्त्री की स्वतंत्रता को भंग करने का प्रयत्न करना,
12. भद्दा मजाक करना,
13. फोन पर अश्लील बातचीत करना,
14. इच्छा के विरुद्ध निरुद्ध करना, उसकी निजता का उल्लंघन करना,
15. किसी भी प्रकार की ज्यादती करना,

आदि संबंधी अपराध होने पर विभाग प्रमुख निकटस्थ पुलिस थाना तथा राज्य महिला आयोग

संयोजक
महिला सशक्तिकरण एवं नारी उत्पीड़न समिति

श्रीमती के. बहल
सहायक प्राध्यापक
विभागाध्यक्ष (गृहविज्ञान)

सांस्कृतिक एवं साहित्यिक प्रसार

भारत की संस्कृति कर्म प्रधान संस्कृति है। सर्वांगीणता, विशालता, उदारता, प्रेम और सहिष्णुता की दृष्टि से विश्व की समस्त संस्कृतियों की अपेक्षा अग्रणीय स्थान रखती है। भारत देश की अखंडता एवं सांस्कृतिक विभिन्नताओं से भरा हुआ देश है। इन्हीं भावनाओं को ध्यान में रखते हुए शासन द्वारा आयोजित विभिन्न प्रकार के सांस्कृतिक एवं साहित्यिक प्रतियोगिताओं को महाविद्यालयीन स्तर पर समिति आयोजन किया जाता है। साहित्यिक प्रतियोगिता के अंतर्गत निबंध, भाषण, वादविवाद, चित्रकला, तात्कालिक भाषण प्रत्येक माह के दूसरे शनिवार को आयोजित की जाती है। सांस्कृतिक प्रतियोगिता तीन माह के अंतराल में की जाती है। इन प्रतियोगिताओं में छत्तीसगढ़ी लोक संस्कृति एवं कला की झाकियाँ प्रस्तुत की जाती है।

लघुनाटिका के माध्यम से शासन के विभिन्न योजनाओं से विद्यार्थियों को अवगत कराया जाता है । इस वर्ष शासन द्वारा निर्देशित सतर्कता जागरुकता सप्ताह, युवा उत्सव, हिन्दी दिवस, अंतर्राष्ट्रीय साक्षरता एवं साक्षरता सप्ताह मनाया गया, जिसमें छात्र / छात्राओं ने बढ़ चढ़कर भाग लिया।

महाविद्यालय में महान पुरुषों से संबंधित दिवस भी मनाये जातें है। विभिन्न विभागों में यह दिवस आयोजित किये जाते है। प्राध्यापक एवं छात्र / छात्राएँ अपने व्यक्तव्य एवं पी.पी.टी. के द्वारा महान पुरुषों के व्यक्तित्व एवं विचार पर प्रकाश डालते है। जिससे विद्यार्थियों के सामान्य ज्ञान में वृद्धि होती है।

इस तरह के सांस्कृतिक एवं साहित्यिक गतिविधियों के माध्यम से महाविद्यालय के छात्र / छात्राओं को अपनी कला एवं योग्यता को निखारने का एक मंच एवं ऊँचाई तक पहुँचने का रास्ता मिलता है, इसके माध्यम से महाविद्यालय के छात्र / छात्राओं ने राज्य एवं राष्ट्रीय स्तर पर विजय हासिल की है। अतः महाविद्यालय के छात्र / छात्राओं को सांस्कृतिक एवं साहित्यिक प्रतियोगिताओं में अवश्य भाग लेना चाहिये।

संयोजक
सांस्कृतिक एवं साहित्यिक समिति

श्रीमती ए. श्रीवास्तव
सहायक प्राध्यापक
विभागाध्यक्ष (रसायन शास्त्र)

कैरियर काउंसलिंग
2017-2018

शा.इं.वि.स्ना.महाविद्यालय कोरबा (छ.ग.) में स्थापित कैरियर काउंसलिंग समिति का उद्देश्य छात्र-छात्राओं को कैरियर हेतु मार्गदर्शन प्रदान करना है। समिति के द्वारा विभिन्न स्नातक स्तर की कक्षाओं में जाकर उन्हें उनके विषय से संबंधित रोजगार की जानकारी प्रदान की जाती है। वस्तुतः वर्तमान समय में शिक्षा का उद्देश्य ज्ञानार्जन ही नहीं, अपितु रोजगार प्राप्ति ही है। अतः छात्र-छात्राओं को सुखद भविष्य हेतु सर्वप्रथम एक लक्ष्य चुनकर उसके प्राप्त करने हेतु प्रोत्साहित किया जाता है। उनमें सकारात्मक मानसिकता का विकास हो वे लक्ष्य तक पहूँचने हेतु अथक प्रयास करें, इसलिये प्रेरणादायक व्यक्तित्व का व्याख्यान भी आयोजित किया जाता है। शासन द्वारा आयोजित की जाने वाली विभिन्न प्रतियोगी परीक्षाओं एवं उनके पाठ्यक्रमों की जानकारी दी जाती है। प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी हेतु प्राध्यापकों द्वारा मार्गदर्शन दिया जाता है। प्रशिक्षण कक्षाएँ आयोजित की जाती है। सभी प्रतियोगी परीक्षाओं में सामान्यज्ञान एक आवश्यक अंग है। अतः समिति द्वारा सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता का आयोजन किया जाता है। इस प्रकार महाविद्यालयीन छात्र-छात्राओं को वर्तमान घटनाचक्र के ज्ञान से अवगत कराया जाता है ताकि वे प्रतियोगी परीक्षाओं में सफल हो सकें।

संयोजक
कैरियर काउंसलिंग समिति

डॉ. ए. कौशिल
सहायक प्राध्यापक
विभागाध्यक्ष (मनोविज्ञान)

महाविद्यालय में स्मार्ट क्लास की स्थापना
(तकनीक से अध्यापन की दिशा में प्रयास)

वर्तमान में लगभग सभी शासकीय विद्यालय एवं महाविद्यालयों में ब्लैकबोर्ड पद्धति के उपयोग से अध्यापन का कार्य किया जा रहा है जो सूचना संचार के वर्तमान समय में पर्याप्त नहीं है। स्मार्टबोर्ड पद्धति (सूचना संचार युक्त) ब्लैकबोर्ड पद्धति से निर्विवाद रुप से श्रेष्ठ है। उदाहरण के लिये परंपरागत माध्यम से अध्यापन (ब्लैकबोर्ड) में शिक्षक हमें किसी भी तस्वीर के बारे में दूर से दिखाकर सिखाते थे जैसे सौर मंडल के चित्र को ऊपर उठाकर दूर से दिखाकर अच्छी तरह से समझने में असमर्थ थे लेकिन स्मार्टक्लास में एक सी कोई तस्वीर स्क्रीन पर दिखाई देती और सभी छात्र आसानी से इसे एक समान रुप से देख और समझ सकते हैं, अपितु इसका प्रिंट भी प्राप्त कर सकते हैं। साथ ही इसे एक ब्लैकबोर्ड की तरह भी काम में लाया जा सकता है। किसी भी प्रकार की तकनीकी ज्ञान की आवश्यकता नहीं होती है। अतः निश्चित रुप से सूचना एवं संचार तकनीकी का स्मार्टक्लास में उपयोग से शिक्षण के क्षेत्र में भी क्रांति पैदा की जा सकेगी एवं छात्र विषय को रुचिपूर्वक आसानी से समझ सकेंगे।

स्मार्ट क्लास - परिचय :-

स्मार्ट क्लास छात्रों को पढ़ाने का एक रोचक एवं नवीनतम तरीका है। इस तकनीक के माध्यम से अध्ययन-अध्यापन बहुत रोचक एवं आसान है। इस तकनीक के एक व्हाईट स्क्रीन एवं कम्प्यूटर स्क्रीन की तरह काम करती है। जिसे आवश्यकतानुसार लिखने के बोर्ड (ब्लैकबोर्ड) के रुप में उपयोग में भी लाया जा सकता है। चूंकि इंटरेक्टिव प्रोजेक्टर कम्प्यूटर से संलग्न एवं संचालित होता है अतः यदि कम्प्यूटर में इंटरनेट कनेक्टिविटी उपलब्ध करा दी जावें तो व्हाईट स्क्रीन जो कि कम्प्यूटर स्क्रीन को प्रदर्शित करती है, भी इंटरनेट से कनेक्ट प्रतीत होती है। इस प्रकार सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी की माध्यम से स्मार्टक्लास में सीधे इंटरनेट की सुविधा उपलब्ध हो जाती है। केन्द्र शासन के मानव संसाधन मंत्रालय ने ई-सामग्री हेतु अनेक पोर्टल तैयार कराये हैं जिसे देश के उच्च शिक्षा संस्थानों के अध्यापक एवं छात्र-छात्राएं निःशुल्क उपयोग में ला सकते हैं। यह निश्चित ही शिक्षाविदों एवं विद्यार्थियों के लिये क्रांतिकारी व्यवस्था है।

महाविद्यालय में स्मार्टक्लास की स्थापना -

सत्र 2016-17 में महाविद्यालय के लिए अनेक कारणों से गौरवशाली एवं विशिष्ट रहा जिनमें से एक महाविद्यालय में स्मार्टक्लास की स्थापना। संस्था प्रमुख डॉ. आर.के. सक्सेना की सकारात्मक सोच एवं उसका क्रियान्वयन करने एवं करवाने में उनकी दृढ़ता महाविद्यालय के लिये अत्यंत उपयोगी है।

वाई-फाई कनेक्टिविटि से स्मार्टक्लास को जोड़े जाने के पश्चात् महाविद्यालय के छात्र-छात्राओं के लिये सूचना प्रौद्योगिकी सह स्मार्टक्लास के उपयोग से अध्ययन एवं अध्यापन का एक नया अध्याय शुरु किया गया है। इससे स्मार्टक्लास रुम में सीधे ही वाई-फाई की सुविधा होने के कारण महाविद्यालय में ई-लर्निंग प्लेटफार्म उपलब्ध हो गया है।

केन्द्र सरकार की एनएमई-आईसीटी योजना का क्रियान्वयन में स्मार्टक्लास का उपयोग-

केन्द्र सरकार की एनएमई-आईसीटी योजना के अंतर्गत महाविद्यालय में उपलब्ध वाई-फाई इंटरनेट

कनेक्टिविटी से स्मार्टक्लास को युक्त कर महाविद्यालय के छात्र-छात्राओं हेतु निःशुल्क ई-सामग्री उपलब्ध है। जिसमें स्नातकोत्तर एवं स्नातक पाठ्यक्रम के विडियो लेक्चर्स भी उपलब्ध है, जिसे पंजीकृत छात्र-छात्राएँ आवश्यकतानुसार डाउनलोड कर उपयोग में ला सकते है।

स्मार्टक्लास के उपयोग से महाविद्यालय के छात्र-छात्राएँ आई-टी फ्रेन्डली होंगे एवं केन्द्र शासन की "Make India IT Literate" मुहिम को सफल करेंगे।

संयोजक
आई.सी.टी. समिति

डॉ. पी.के. मेहता
प्राध्यापक
विभागाध्यक्ष (गणित विभाग)

आज के इस युग में...

आज के इस युग में,
पढ़ाई की न रही सीमा
सब चीज एक 'टच' पर,
ज्ञान का विशाल अंबार,
ले आया है आई.सी.टी. क्रांति,
बस जिज्ञासा की है देरी,
चुटकी बजाओ, पहुँच जाओ लक्ष्य पर,
जानकारी अद्‌भुत है आज,
इस युग की टेक्नोलॉजी में,
समेट लो सब तारे,
नही तो रह जाओगे अधूरे।।

डॉ. एम.एल. अग्रवाल
सहायक प्राध्यापक (अंग्रेजी)

स्वीप प्लान

Systematic Voter's Education and Electoral Participation

भारत एक विशाल प्रजातांत्रिक देश है, जिसके केन्द्र में जनता का विशाल भागीदारी सन्निहित है। भारत निर्वाचन आयोग ने 2010 में अपने ही हीरक जयंती समारोह में कम निर्वाचक जागृति तथा मतदाताओं के कम भागीदारी विषय को ध्यान में रखते हुए, सशक्त लोकतंत्र के लिये विराट सहभागिता को अपना थीम बनाया था और इसी वर्ष भारत निर्वाचन आयोग द्वारा प्रायोजित महत्वाकांक्षी (स्वीप प्लान) क्रमबद्ध मतदाता शिक्षा तथा निर्वाचक सहभागिता कार्यक्रम स्वीप प्लान प्रारंभ हुआ।

सरल शब्दों में स्वीप प्लान निर्वाचन प्रक्रिया का नीतिगत पहल तथा गतिविधियों की श्रृंखला है। जिनका उद्देश्य निर्वाचन प्रक्रिया में लोगों की भागीदारी बढ़ाना है। यह नीतिगत ढाँचा तय करती है, नीतिगत प्रयास करती है और क्रियान्वयन पर निगरानी भी रखती है। भारत निर्वाचन आयोग ने आम लोगों तक पहूँचने के उद्देश्य से 2011 में मतदाताओं की संख्या बढ़ाने के उद्देश्य से प्रत्येक वर्ष 25 जनवरी को राष्ट्रीय मतदाता दिवस मनाने का निर्णय लिया। युवा पीढ़ी को जिम्मेदार नागरिक का भाव प्रोत्साहित करने की दिशा में स्वीप प्लान एक अभिनव पहल है।

यह हर नागरिक के लिये गर्व की बात है कि भारत निर्वाचन आयोग सृजनात्मक रुप से लोगों को निर्वाचन प्रक्रिया में शामिल होने के लिये प्रोत्साहित करने में जुटा हुआ है और एक आदर्श भागीदारी वाले लोकतंत्र की दिशा में आगे ले जा रहा है। ECI (Election Commission of India) ने 18 वर्ष के आयुवर्ग में नये मतदाताओं को जोड़ने के लिये शैक्षिक संस्थाओं NYKS, NSS, NCC जैसे युवा संगठनों का सहयोग लिया है, आयोग निर्वाचन प्रक्रिया के बारे में युवाओं और विद्यार्थियों के बीच अधिक जागरुकता बढ़ाने तथा समझ विकसित करने तथा मतदाता पंजीकरण में सहयोग कर रहा है।

2013 में ECI ने (NLMA) ''राष्ट्रीय साक्षरता मिशन प्राधिकरण'' के सहमति पत्र पर हस्ताक्षर करने के बाद से निर्वाचक साक्षरता, भारत सरकार के ''साक्षर भारत कार्यक्रम'' का प्रमुख अंग बन गया है। इसके अलावा ECI का UNDP (United Nation Development Program) के बीच मतदाता शिक्षा के क्षेत्र में करार भी हुआ है।

भारत निर्वाचन आयोग (निर्वाचन सदन नई दिल्ली) के मंशा के अनुरुप स्वीप प्लान के अंतर्गत मुख्य निर्वाचन पदाधिकारी (छ.ग.) एवं जिला निर्वाचन अधिकारी के निर्देशानुसार जिला कोरबा के समस्त शासकीय एवं अशासकीय महाविद्यालयों में स्वीप कैलेण्डर के अनुसार वर्ष भर सतत् कार्यक्रम एवं प्रतिस्पर्धाओं का आयोजन किया जाता है। नवप्रवेशित छात्र/छात्राओं का सर्वेकार्य (18 वर्ष पूर्ण कर चुके है) किया जाता है और चिन्हाकिंत

विद्यार्थियों को प्रारुप-6, भरवाकर मतदाता सूची में नाम पंजीकरण के लिये जिला निर्वाचन कार्यालय के लिये भेजा जाता है। तत्पश्चात मतदाता परिचय पत्र का वितरण भी किया जाता है। शासन के निर्देशानुसार प्रत्येक महाविद्यालय में स्वीप के नोडल अधिकारी प्राचार्य की अनुशंसा से नियुक्त होते है जो स्वीप गतिविधि के क्रियान्वयन एवं नेतृत्वकर्ता होते हैं। इनके कार्यक्रमों में सहयोग के लिये प्रत्येक महाविद्यालय में कैम्पस एम्बेसडर होते है जो कैम्पस में विद्यार्थी होता है और आयोग के दूत के रुप में काम करता है।

शासकीय इं.वि.स्नातकोत्तर महाविद्यालय कोरबा, जिले का अग्रणी महाविद्यालय है। यहाँ के स्वीप नोडल अधिकारी, समस्त महाविद्यालय के मध्य (Co-ordinator) का कार्य प्राचार्य महोदय के मार्गदर्शन में संपादित करता है। जिले के समस्त महाविद्यालय में स्वीप गतिविधि के अंतर्गत अनेक विधाओं जैसे - वाद-विवाद, परिचर्चा, संगोष्ठी, नारालेखन, रंगोली, निबंध लेखन, नुक्कड़ नाटक, पोस्टर पेटिंग, प्रतिस्पर्धा का आयोजन वर्षभर होता रहता है।

जिसका थीम मतदाता शिक्षा पर आधारित होता है एवं विजेता प्रतिभागियों को पुरस्कार (नगद) एवं प्रशस्ति पत्र भी प्रदान किया जाते है। प्रतियोगिताओं में - जिला स्तरीय अंतर महाविद्यालयीन प्रतियोगिता का आयोजन जिला स्तर पर होता है। जिसमें जिला निर्वाचन अधिकारी एवं उप जिला निर्वाचन अधिकारी, मुख्य कार्यपालन अधिकारी जिला पंचायत कोरबा के कर कमलों से छात्र / छात्राएँ पुरस्कृत होते हैं।

अतः भारत निर्वाचन आयोग ने व्यक्ति की मत की शक्ति तथा उसकी अधिकारिता के बीच गहरे आपसी संबंध को जानने के लिये अनवरत कार्यक्रम बना रहा है। इसमें जन सहभागिता एक जरुरी जिम्मेदारी है। परम सम्मानीय प्राचार्य महोदय शा.इं.वि.पी.जी. महाविद्यालय कोरबा के कुशल मार्गदर्शन एवं सहयोग से विगत कई वर्षो से स्वीप प्लान एवं उसके गतिविधियों का सफल क्रियान्वयन हो रहा है। कोरबा जिले के लिये ''उत्कृष्ट नोडल अधिकारी प्लान'' चुने जाने पर मैं पूरे महाविद्यालय परिवार का हार्दिक आभार व्यक्त करता हूँ।

''**स्वतंत्र देश की क्या पहचान,**
भय मुक्त, निष्पक्ष हो मतदान''

श्री बी. आर. कुर्रे
सहायक प्राध्यापक (प्राणीशास्त्र)

स्वीप नोडल अधिकारी

भारतीय निर्वाचन के दो मजबूत कड़ी, महिलाएँ युवाएँ मतदान करें खरी-खरी

इग्नू में रोजगार मूलक पाठ्यक्रम

इंदिरा गाँधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय की स्थापना-1985 में की गई। यह भारत सरकार एक केन्द्रीय विश्वविद्यालय है, जिसके भारत तथा अन्य देशों में अध्ययन केन्द्र वृहत पैमाने पर फैले हुये हैं। केन्द्र सरकार, इसे प्रत्येक जिले में एक अध्ययन केन्द्र खोलकर संचालित कर रही है। 'इग्नू' में 300 से भी अधिक डिग्री, डिप्लोमा तथा सर्टिफिकेट के पाठ्यक्रम चल रहे हैं।

इग्नू का उद्देश्य शिक्षा को विद्यार्थियों के द्वार तक पहूँचाकर उच्च शिक्षा का लोकतंत्रीकरण करना। आयु, क्षेत्र या औपचारिक शैक्षणिक योग्यता पर विचार किए बिना शिक्षा पाने के इच्छुक सभी विद्यार्थियों को उच्च कोटि की शिक्षा सुलभ कराने की व्यवस्था करना, वृत्तिक एवं व्यवस्था मूलक पाठ्यक्रमों द्वारा आवश्यकता आधारित शैक्षिक कार्यक्रम प्रारंभ करना; भारत में दूरस्थ शिक्षा को प्रोत्साहित करना तथा विकासित करना और शीर्ष निकाय के रुप में देश में दूर शिक्षा के लिये मानकों को निर्धारण एवं अनुरक्षण करना। यह लचीले प्रवेश नियम को अपनाता है, जिसमें विद्यार्थियों को जरुरत के अनुसार प्रासंगिक एवं सामाजिक शैक्षिक कार्यक्रम संचालित है।

रोजगार मूलक पाठ्यक्रमों में एम ए आर डी, पी जी डी आर डी, बी एस डब्लू, एम एस डब्लू, पर्यटन में डिग्री व डिप्लोमा, पोषण एवं शिशु देखभाल, उपभोक्ता संरक्षण में प्रमाण तथा पर्यावरण में डिप्लोमा सम्मिलित है। आने वाले दिनों में केन्द्र व राज्य सरकार ग्राम विकास पर पूरा ध्यान दे रही है ताकि इससे संबंधित नये पदों का सृजन भी कर रही है। अतः इससे संबंधित पाठ्यक्रम एम.ए.आर.डी. व पी.जी.डी.आर.डी. जैसे बहुत ही सस्ते एवं कम अवधि में संपन्न होने वाले पाठ्यक्रम उपलब्ध है।

इसी प्रकार आज के इस निजीकरण के दौर में बहु राष्ट्रीय कंपनी देश-विदेश में समाज कार्य एवं सामाजिक कल्याण पर जो ज्यादा महत्व दे रही है तथा कल्याण अधिकारी व समाज कार्य कर्मचारी की पदों सृजन कर अधिक रोजगार दे रहे हैं, जिससे बी एस डब्लू तथा एम एस डब्लू जैसे पाठ्यक्रमों का महत्व बढ़ रहा है। इग्नू में इन दोनों पाठ्यक्रम को आसानी से कर आप एक प्रतिष्ठित पदों पर सुशोभित हो सकते हैं।

केन्द्र सरकार स्वच्छता एवं पर्यटन को बढ़ावा दे रही है- प्रत्येक क्षेत्र में पर्यटन की अपार संभावनाएँ है, उन्हें विकसित करने के लिये निजी एवं सरकारी संगठन तेजी से कार्यरत् हैं, अतः पर्यटन के क्षेत्र में रोजगार पाने के लिये पर्यटन में डिग्री व डिप्लोमा इग्नू में उपलब्ध है, जिसे महाविद्यालय में डिग्री कोर्स के साथ-साथ किया जा सकता है।

इग्नू में प्रवेश के लिये न्यूनतम आयु 18 वर्ष है अधिकतम की कोई सीमा नहीं है। अनुसूचित जाति तथा

समन्वयक इग्नू

डॉ. एस.के. गोभिल
सहायक प्राध्यापक (अर्थशास्त्र)

मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा

दूरस्थ शिक्षा एक नवाचार है, जो कि परम्परागत शिक्षा प्रणाली की तुलना में अत्यंत उदार है। छत्तीसगढ़ राज्य में इस कार्य हेतु पं. सुंदरलाल शर्मा (मुक्त) विश्वविद्यालय छत्तीसगढ़, बिलासपुर की स्थापना सन् 2004 में की गई थी। इस विश्वविद्यालय का क्षेत्राधिकार संपूर्ण छत्तीसगढ़ है। ''उच्च शिक्षा आपके द्वार'' के बोध वाक्य का अनुसरण करते हुये विश्वविद्यालय ने दूरवर्ती शिक्षा व्यवस्था के माध्यम से संपूर्ण राज्य में अध्ययन केन्द्र की स्थापना की है। योग्य एवं अनुभवी विषय विशेषज्ञों द्वारा तैयार अध्ययन सामग्री उपलब्ध करवायी जाती है एवं समय-समय पर आयोजित संपर्क एवं परामर्श कक्षाओं के आयोजन से विद्यार्थी अपनी कठिनाइयों को दूर कर सकते है। विश्वविद्यालय में वार्षिक प्रणाली लागू है तथा इन परीक्षाओं को आयोजन जून-जुलाई के माह में किया जाता है।

इस दूरवर्ती शिक्षा के अंतर्गत कई रोजगारोन्मुखी एवं ज्ञानवर्धक पाठ्यक्रमों को शामिल किया गया है। पं. सुंदरलाल शर्मा (मुक्त) विश्वविद्यालय द्वारा संचालित परम्परागत पाठ्यक्रम (जैसे बी.ए., बी.एस.सी., बी.कॉम., एम.ए. इत्यादि) के अतिरिक्त अनेक रोजगारोन्मुखी पाठ्यक्रम जैसे पी.जी.डी.सी.ए., पी.जी.डी.वाय.एस. (पी.जी. डिप्लोमा इन योगिक सांईस) इत्यादि संचालित किये जाते है।

हमारे महाविद्यालय में पं. सुंदरलाल शर्मा (मुक्त) विश्वविद्यालय का समन्वयक एवं अध्ययन केन्द्र है। महाविद्यालय में अध्ययनरत् छात्र / छात्राएँ अपने नियमित पाठ्यक्रम के साथ-साथ मुक्त विश्वविद्यालय द्वारा संचालित दूरवर्ती शिक्षा के माध्यम से चलाये गये पाठ्यक्रमों का लाभ ले सकते हैं। विशेषकर स्नातकोत्तर कक्षाओं में अध्ययनरत् छात्र / छात्राएं एक वर्षीय डिप्लोमा कोर्स के दो पाठ्यक्रम अपने अध्यापन अवधी पूर्ण कर सकते हैं। जैसे :- प्रथम सेमेस्टर में पी.जी.डी.सी.ए. एवं तृतीय सेमेस्टर में पी.जी.डी.वाय.एस. जिससे छात्र / छात्राओं को जब स्नातकोत्तर की उपाधि प्राप्त होगी, तब वह इन दोनों क्षेत्रों में भी ज्ञान हासिल कर जीवन यापन की ओर अग्रसर हो सकेंगे।

इन सभी रोजगारोन्मुखी डिप्लोमा पाठ्यक्रमों की अधिक जानकारी के लिये महाविद्यालय के अध्ययन केन्द्र में संपर्क किया जा सकता है अथवा विश्वविद्यालय की वेबसाईट www.pssou.ac.in पर प्राप्त

समन्वयक
पं. सुंदरलाल शर्मा (मुक्त) विश्वविद्यालय
छत्तीसगढ़, बिलासपुर (छ.ग.)

श्रीमती पी. पुंडलिक
सहायक प्राध्यापक (गणित)

UNIVERSITY GRANTS COMMISSION (UGC)

India's Higher Education system is the third largest in the world next to only USA and China. Heritage is our legacy from the past, what we live with today and what we pass on to the future generations.

- UGC sponsors a large number of students on the various dimensions of HE in the country and was established in 1956.
- With monetary aid from the UGC, institutional capacity has improved and access to HE made easy with a significant progress.
- UGC with its various aids has helped in the expansion of enrolment in HE with quality and relevant education with necessary academic reforms in the university and college system.
- Issue of quality education is being addressed through several intitatives.
- UGC promotes and co-ordinates university education both public and private and deemed colleges and universities.
- It determines and maintains standards of teaching, exam and research.
- It frames regulations on minimum standards of education.
- It monitors development in colleges and university education, disbursing grants to the universities in colleges.
- It serves as a vital link between union and state governments and the institutions of HE.
- It advises the central and state government on measures necessary for improvement in education.
- It enforces regulations and punishments for violations.
- Accreditation for higher learning is overseen by autonomous institutions established by UGC. (AICTE, NAAC, MCI etc.)
- In our college we have been aided by UGC in the development of our infrastructure namely- out door stadium, playground, women's hostel, 3 rooms and equipments in our numerous laboratories.

(UGC Incharge)

Dr. M.L. Agrawal
Asstt. Professor (English)

चिन्ता से मुक्ति पाने का सर्वोत्तम उपाय, अप्रिय बातों को भुलाना है ।

छत्तीसगढ़ी कहावतों का अध्ययन

छत्तीसगढ़ के लोक साहित्य के अंतर्गत कहावतों को महत्वपूर्ण स्थान दिया गया है। थोड़े शब्दों में बहुत कुछ कह देने की क्षमता कहावतों में होती है। कहावतें लोकोक्ति का एक अंग है। यह निश्चय ही अभिप्राय से प्रचलित है। छत्तीसगढ़ी जनउला के समान ये उक्तियाँ भी घरेलु वातावरण से संबंध रखती है। इनमें धर्म, नीति, इतिहास, उपदेश, आलोचना एवं व्यंग्य की भावनाएँ निहित है। छत्तीसगढ़ी कहावतों में ज्ञान, शिक्षा, कर्तव्य, उपहास, दृष्टांत एवं जातीय जीवन के विविध क्षेत्रों पर मार्मिक कथन और चुभने वाली उक्तियाँ मिलती है, पशु-पक्षी एवं अन्यान्य जीव-जंतुओं के संकेत इनमें मिलते है, खेती के संबंध में बियासी, रोपा, बत्तर, कोपर आदि स्थानीय पद्धति का वर्णन इन कहावतों में हुआ है।

छत्तीसगढ़ी कहावतों में शरीर, समाज, गृह, हास्य एवं विनोद, प्रकृति पशु-पक्षी, विश्वास और अंधविश्वास, इतिहास, मनोविज्ञान, कृषि एवं अश्लीलता से संबंधित कहावतें प्रमुख हैं।

छत्तीसगढ़ी कहावतें गद्य और पद्य दोनों में होती है। अधिकांशतः कहावतों के निर्माण में मूलमंत्र होता है। वह मुख-सुख का तत्व जिसमें पूर्ण लय का संगीत नहीं होता पर उसका लयांश रहता है। इस लय को तुक और सुविधामय बना देती है। कुछ उदाहरण दृष्टव्य है :-

1. गठरी के रोटी, पनही के गोटी।।
2. घर राखै छेना थापै।

शरीर से संबंधित कहावतों में अंग-भंग एवं भोजन से होने वाली विकारों की चर्चा हुई है। यथा :-

1. कनवा खोरवा सदा उपायी
   घोड़ा में चढ़के बंदूक चलाई।।
2. सावन भाजी, भादो दही,
   कुंआर करेला, कार्तिक मही,
   मरही नहीं त परही सही।।

समाज से संबंधित कहावतों में नारी, विवाह, जाति, व्यवसाय एवं अतिथि सत्कार आदि विषय सम्मिलित है।

1. जेकर घर नारी सियान, तेकर घर नई कटे बिहान।
2. घर गोसइँया ला पहुना डेरवाय।
3. उत्तम खेती, मध्यन बान,
   अधम चाकरी, भीख निदान।

गृह संबंधित कहावतों में छत्तीसगढ़ के लोगों का खान-पान, बर्तन एवं भोजन से संबंधित कहावतें मिलती है :-

1. खीरा खाय कच्चम कच्चम,
   लइका रोवै रक्कम रक्कम।
2. बाम्हन ल घी देय,

त दोना में चुरो के खाए ।

हास्य एवं विनोद संबंधी कहावतों का प्रयोग मनोविनोद के लिये किया जाता है । कुछ कहावतें दृष्टव्य है :-

1. कुकुर ह गंगा जाही त पतरी ला कौन चाँटही ।
2. ओढ़े बर ओढ़नी नी, बिछाय बर बिछौना,
   बिहाव बर देखे, रतनपुर के कइना ।

प्रकृति संबंधी कहावतों आकाश, बादल, वर्षा, पानी, नदी आदि विषय से संबंधित होते हैं । यथा :-

1. मघा के बरसे अउ माता के परसे ।
2. संझा के पानी बिहान के झगरा ।
3. भुरवा बादल जी डेरवाय, करिया बादर पानी लाय ।।

पशु-पक्षी संबंधी कहावतों में सभी जीव जन्तु आते है, इसमें बड़े हाथी से लेकर छोटा चींटा तक सभी को सम्मिलित किया जा सकता है । उदाहरण दृष्टव्य है-

1. सावन घोड़ी भादो गाय,
   माघ महिना भैंस बियाय
   गोसिया खाय नी तो बड़े बाय ।
2. बोकरा के जीव जाय
   खवइया बर अलोना
3. पइधे गाय कछारे जाय
4. हाथी के पेट सोंहारी ले नइ भरै ।
5. टेटका के पहिचान बारे ले ।

   उपर्युक्त कहावतें ज्ञान वर्धक एवं उपदेशात्मक हैं ।

विश्वास एवं अंधविश्वास संबंधी इन कहावतों में छत्तीसगढ की धर्म प्राण, जनता का धर्म के प्रति आस्था एवं विश्वास आदि की अभिव्यक्ति दिखाई देती है । उदाहरणनार्थ :-

1. माने त भगवान, नइ त पथरा ।
2. घर में नागदेव भिंभोरा पूजे जाय ।

मनोविज्ञान संबंधी कहावतों में जीवन की व्यवहारिक सच्चाई की अभिव्यक्ति होती है, इसमें मानव मन से संबंधित बाते कही जाती है । इस प्रकार की कहावते निम्नलिखित है :-

1. अपन मरे बिन सरग नइ दीखे ।
2. दूध के जरे मही ला फूंक-फूंक के पियय ।
3. जे गरजथे ते बरसे नहीं ।
4. का हरदी के रंग का परदेशी के संग
5. बोकरा के जीव जाय खवइया के मने नी आय ।

इतिहास संबंधी कहावतों में ऐतिहासिक तथ्य का उद्‌घाटन होता है । इन कहावतों का संबंध घटना विशेष अथवा कहानी से होता है । कुछ कहावतें इस प्रकार है :-

1. चार बेटा राम के कौड़ी के न काम के ।
2. सींका के टुटती अउ बिलइ के झपटती ।
3. राजा न ल विपत परिस त,
   भूंजे मछरी दहरा म कूदिस ।

छत्तीसगढ़ के लोगों का मुख्य व्यवसाय खेती है, इसीलिए यहाँ खेती वर्षा, बैल, जमीन, खाद आदि से संबंधित कहावतें प्रचुर मात्रा में मिलती है। कुछ उदाहरण दृष्टव्य है:-

1. कोरे गाथे बेटी, नींदे कोड़े खेती।
2. खातू डारे त खेती, नइ परे त रेती।
3. कुल बिहावे कन्हार जोते।
4. धान के बदरा, बड़े आदमी के लबरा।

डॉ. डी. दुबे
विभागाध्यक्ष (हिन्दी)

वाणिज्य शिक्षा व भविष्य निर्माण

प्राचीन काल से ही व्यापार, उद्योग व वाणिज्य का हमारे देश में प्रचलन रहा है। प्रारंभ में व्यापार को साहसिक कार्य माना जाता था व समाज में उन्हें सम्मान मिलता था। उस समय व्यापार केवल लेनदेन तक ही सीमित था, जिससे व्यापार हेतु पूँजी अनिवार्य शर्त हुआ करती थी। व्यापार के संचालन में पूँजीपतियों का एकाधिकार कहें तो अतिश्योक्ति नहीं होगी।

वर्तमान बदलते परिदृश्य में व्यापार की क्रियाओं का उद्‌भव व विकास हुआ, इससे इस क्षेत्र में रोजगार के नवीन अवसरों का उद्‌भव हुआ। इससे सामाजिक वातावरण को एक नयी दिशा मिली है। जब हम वाणिज्य के क्षेत्र में रोजगार की बात करते है तो इसमें स्वरोजगार व सेवा क्षेत्र दोनों ही शामिल होते है। इसमें कम्प्यूटर, एकाउंटिंग, इन्कम टैक्स सलाहकार, कर अधिकारी, कंपनी सचिव, चार्टर्ड एकाउंटेंट ऑडीटर, विज्ञापन सलाहकार, बाजार प्रबंधक, कर्मचारी प्रबंधक, विपणन प्रबंधक आदि अनेक विकल्प मौजूद है।

वर्तमान समय विशेषज्ञों का युग है यदि किसी में वाणिज्य संबंधित विशेषता है तो वह अपने भविष्य का निर्माण स्वयं कर सकता है। वाणिज्य शिक्षा शिखरों के मध्य से निकलने वाला वह सूर्य है जिसकी अनंत किरणें है व इसकी हर किरण में प्रकाश का पुंज समाहित है जो समाज को रोशन करने व ऊर्जा का संचार करने का कार्य करते है।

श्री आर.के. मौर्य
विभागाध्यक्ष (वाणिज्य)

21वीं शताब्दी में हिन्दी का स्वरुप और उसके तकनीकी पक्ष

पहले हिन्दी एक क्षेत्र विशेष की भाषा थी जो बाद में पूरे भारत की संपर्क भाषा बनी। आजादी के बाद हिन्दी को प्रशासनिक कार्यो हेतु प्रयुक्त किया जाने लगा। हिन्दी राजभाषा के अतिरिक्त अखिल भारतीय सांस्कृतिक और साहित्यिक आदान-प्रदान के लिये संपर्क सूत्र भी है। विश्व के कोने-कोने में बसे हुए भारतीयों का हिन्दी प्रसार के लिये किया कार्य भी सराहनीय है। हिन्दी का बढ़ता हुआ महत्व और क्षेत्र उसे अंतर्राष्ट्रीय भाषा के रुप में प्रतिष्ठित कर सकता है।

प्रशासनिक भाषा, वाणिज्य-व्यापार की भाषा, विधि आदि भाषा के रुप में हिन्दी को और अधिक विकसित करने की आवश्यकता है। इसी प्रकार विज्ञान-प्रौद्योगिकी के भाषा के रुप में हिन्दी को अधिक व्यवहृत करने की आवश्यकता है। उसे ज्ञान-विज्ञान की भाषा बनाने के लिए केवल ''नारे लगाने से'' काम नहीं चलेगा।इसके लिये ज्ञान-विज्ञान का साहित्य चाहिए, उच्च स्तरीय अध्ययन के लिये ज्ञान-विज्ञान के ग्रंथ चाहिए एवं विभिन्न प्रकार के विश्वकोष के निर्माण की आवश्यकता होगी। प्रौद्योगिकी के युग में भाषा के माध्यम से काम करने के लिये कम्प्यूटर सॉफ्टवेयर जैसी सामग्री की आवश्यकता है। इन सबका निर्माण अपने आप नहीं हो सकता, बल्कि इसके लिये देश की भाषा नीति के संदर्भ में भाषा नियोजन करना पड़ेगा और नियोजित तरीके से सामग्री निर्माण शिक्षण-प्रशिक्षण, अनुवाद आदि क्षेत्रों को और अधिक विकसित करना होगा।

वर्तमान में क्षेत्रीय भाषाओं के प्रयोग को बल मिला है। लोक साहित्य को साहित्य में स्थान मिल गया है। ऐसे में हिन्दी को दोहरी भूमिका निभाना होगा। हिन्दी को सभी देशी भाषाओं का समाहार करते हुए आगे बढ़ना होगा। इसके लिये हिन्दी को देशी भाषाओं के शब्दों, शैलियों के साथ उनकी लोक संस्कृति और लोक साहित्य को स्वयं में समाहित करना होगा। इससे भाषावाद की समस्या से भी मुक्ति मिल सकती है। हिन्दी की दूसरी भूमिका यह होगी कि वह देश की भाषाओं में ही नहीं बल्कि अंतरार्ष्ट्रीय स्तर पर उपलब्ध समस्त ज्ञान-विज्ञान के साहित्य और साहित्यिक-सांस्कृतिक गतिविधियों को अन्य भाषा के लोगों तक पहुँचाने का सफल माध्यम बनें। इस लक्ष्य की प्राप्ति उसके इन दोनों रुपों से ही संभव होगी, जिन्हें हम राजभाषा और राष्ट्रभाषा कहते हैं। राष्ट्रभाषा और राजभाषा की संकल्पना में उच्च या निम्न स्तर की बात नहीं है। ये संकल्पनाएँ एक दूसरे की पूरक है और दोनों से ही हिन्दी भाषा की पूर्णता सिद्ध होती है।

हिन्दी हमारी राजभाषा और राष्ट्रभाषा दोनों है और इसे विश्वभाषा बनाने के लिये हम संकल्पित भी है। इसके लिये हिन्दी की शक्ति में वृद्धि करते हुए उसे भारत के जन-जन से जोड़ना होगा। इसे विज्ञान और

तकनीकी की भाषा बनाना चाहिए। भाषावाद के बंधनों को तोड़ते हुए स्पष्ट भाषा नीति बनाना होगा। भाषावाद के प्रति सामान्यजन की मानसिकता को परिष्कृत करने की आवश्यकता है। त्रिभाषा फार्मूला कितना सार्थक है ? इसकी भी समीक्षा होनी चाहिए। कभी-कभी जाने-अनजाने में हम भाषावाद को बढ़ावा दे देते है और गैरहिन्दी भाषायी जनता की मानसिकता को समझ नहीं पाते है। जितना महत्व राष्ट्रभाषा हिन्दी को दिया जाता है, उतना ही महत्व क्षेत्रीय भाषाओं को दिया जाना चाहिए। हमें यह ध्यान रखना चाहिए कि क्षेत्रीय भाषाओं के प्रति अन्याय न हों। तभी देश में हिन्दी विरोध की परम्परा समाप्त होगी। भाषावाद और हिन्दी के प्रति हीन भावना को जीतकर ही हम हिन्दी को विश्वभाषा के रुप में स्थापित कर सकते है। यही हिन्दी की सच्ची सेवा होगी।

डॉ. डी. श्रीवास
सहायक प्राध्यापक (हिन्दी)

राष्ट्रीय युवा दिवस (12 जनवरी 2018)

शा.इ.वि.स्ना. महाविद्यालय कोरबा में स्वामी विवेकानंद की जयंती का कार्यक्रम दो दिवसीय संपन्न हुआ। प्रथम दिवस स्वामी विवेकानंद जी के चित्र पर माल्यार्पण कर प्राचार्य डॉ. राजेश सक्सेना ने कार्यक्रम का शुभारंभ किया। डॉ. अवन्तिका कौशिल ने स्वामी विवेकानंद जी का जीवन परिचय देते हुए उन्हें युवाओं का प्रेरणा स्त्रोत बताया। डॉ. विनोद दुबे ने युवाओं को स्वामी विवेकानंद जी को अपना आदर्श बनाकर उनकी तरह आदर्शवादी जीवन जीने की प्रेरणा दी। डॉ. संजय यादव ने स्वामी विवेकानंद जी का जीवन चक्र तथा नरेंद्र दत्त से स्वामी विवेकानंद बनने की कड़ी बतायी युवाओं को तीन मुख्य पुस्तकों ज्ञानयोग, ध्यान योग एवं भक्तियोग का अध्ययन करने का आवाहन किया।

कार्यक्रम के द्वितीय दिवस युवाओं में भारतीय संस्कार, परम्पराओं का शंखनाद करने युग निर्माण संस्था द्वारा चलित 'युवा क्रांतिरथ' का आगमन हुआ, जिसे प्राचार्य डॉ. राजेश सक्सेना ने महाविद्यालय के लिये नववर्ष का उपहार बताया और महाविद्यालयीन छात्र-छात्राओं को प्रेरणा देने वाला कहा। युवा क्रांति रथ में चलित वीडियो के माध्यम से भारतीय संस्कृति एवं शिक्षा का समन्वय करके परिवार एवं समाज का निर्माण करने का संदेश दिया। महिला सशक्तिकरण के नाटक के मंचन से महिलाओं में आत्म विश्वास और आत्म निर्भरता का पाठ पढ़ाया। युवाओं को नशामुक्ति की ऐसी शिक्षा दी कि वे सदैव इस व्यसन से दूर रहेंगे, इस हेतु उन्हे शपथ भी दिलायी।

छत्तीसगढ़ में महिला सशक्तिकरण और 73वाँ संविधान संशोधन

महिलाएँ परिवार की धुरी हैं, वो जननी व जीवन का आधार है। छत्तीसगढ़ में महिलाएँ प्रारंभ से ही पुरुषों के कंधे से कंधा मिलाकर चलती रही हैं। जहाँ एक ओर सुबह जल्दी उठकर अपने घरेलू दायित्वों, घर की साफ-सफाई, भोजन बनाने से लेकर बच्चों की देखभाल को पूरा करती, वहीं खेत-खलिहान में जाकर फसल की निंदाई, कटाई व मिसाई मे भी अपना योगदान देती हैं और परिवार की आर्थिक स्थिति सुधारने में मदद करती है।

परंतु आजादी मिलने से लेकर अगले 46 वर्षो तक राजनीति में महिलाओं की भूमिका नगण्य थी। साल 1992 में 73 वें एवं 74 वें संविधान द्वारा महिलाओं को पंचायत एक तिहाई आरक्षण प्रदान किया गया। अनुच्छेद 243 (डी) और 243 (टी) जिसमें क्रमशः पंचायती राज व नगरीय निकाय में प्रत्येक स्तर पर महिलाओं को आरक्षण प्रदान किया गया। यह संविधान संशोधन महिला सशक्तिकरण की दिशा में मील का पत्थर साबित हुआ। महिला पहले सकुचाई, शर्मायी परंतु आगे बढ़ी अब उसका दायरा घर, खेत व खलिहान से बढ़कर राजनीति में भी हो गया । हालाँकि प्रारंभ में महिला के पति या फिर पुरुष रिश्तेदार ही पंचायत का काम संभालते और महिलाएँ सिर्फ हस्ताक्षर करने का काम करती थी। अभी भी दूर-दराज के गांवो में कमोबेश वही स्थिति है, परंतु शिक्षा ने जागरुकता लायी है अब पढ़ी लिखी गाँव की महिला भी अपने निर्णय लेने में सक्षम हो रही है तथा पुरुष रिश्तेदारों पर राजनीति में उसकी निर्भरता कम हो रही है। अन्य कई राज्यों की तरह छत्तीसगढ़ शासन ने पंचायतों में महिला आरक्षण 50 प्रतिशत कर दिया है। इससे छत्तीसगढ़ के लगभग आधे पंचायतों में महिलाओं का कब्जा है। शिक्षा के प्रचार-प्रसार, पंचायतो में महिला आरक्षण तथा महिला स्व-सहायता समूहों ने छत्तीसगढ़ की महिलाओं के जीवन स्तर को सुधारने में अपना अमूल्य योगदान दिया है। शिक्षित होकर महिला अपने अधिकारों को समझने लगी है। पंचायतों में महिला आरक्षण ने राजनीतिक चेतना लायी है तथा महिला स्व-सहायता समूहों के माध्यम से वह आर्थिक रुप से सक्षम हुई है। पंचायत प्रतिनिधि के रुप में महिला अब विभिन्न विभागों के दफ्तरों तक जाने लगी है तथा अपने गाँव के विकास हेतु लगातार प्रयत्नशील है। गाँवो के विकास के लिये वह हर उस विभाग से मदद ले रही है, जिसकी गांव को आवश्यकता है।

वर्तमान में छत्तीसगढ़ में विकास की जो धारा बही है उसमें गांव का विकास महत्वपूर्ण है और गाँव के विकास में यहाँ की महिलाओं का योगदान सराहनीय रहा है। आज महिलाओं में जो राजनीतिक चेतना आयी है और राज्य के विकास में जिस तरह से यहाँ की महिलाएँ अपनी प्रत्यक्ष भूमिका निभा रही है उसका श्रेय संविधान के 73वें

श्रीमती सी. श्रीवास
सहायक प्राध्यापक (राजनीति विज्ञान)

वेद, पुराण, ग्रंथ सभी, नारी की महिमा दोहराते। कोख में कन्या आ जाये क्यों उसकी हत्या करवाते ?

जी.एस.टी.

भारतीय अर्थव्यवस्था में करों का एक विशेष महत्व है। करों के द्वारा हमारी सरकार पूँजी का संकलन अपने राजस्व प्राप्ति हेतु लेती है। अतः इसमें किया गया सुधार हमारी अर्थ व्यवस्था एवं आम नागरिकों की भलाई हेतु किया जाता है।

इसी परिप्रेक्ष्य में 1 जुलाई 2017 को भारत देश की अर्थव्यवव्था में एक नवीन सुधारवादी नीति का उदय हुआ, जिसे हम जी.एस.टी. के नाम से जानते हैं।

जी.एस.टी. का पूरा नाम गुड्स एवं सर्विस टैक्स है जिसको हम वस्तु एवं सेवा कर कहते हैं। यह हमारे देश में एक जुलाई 2017 से लागू कर दिया गया है। यह एक अप्रत्यक्ष कर है। जो व्यापक पैमाने पर पूरे देश के निर्माता, व्यापारी, वस्तुओं और सेवाओं के उपभोक्ताओं पर लगेगा। इस कर को देने के पश्चात और कोई अन्य कर भी नहीं देना होगा। देश में जी.एस.टी.के दो भाग है, एक केन्द्र द्वारा लगाये जाने वाला जी.एस.टी. तथा दूसरा राज्यों द्वारा लगाये जाने वाला जी.एस.टी.। दोनों को आय और स्वीकार्यता को ध्यान में रखकर तय किया जाता है।

जी.एस.टी. लागू होने के बाद देश को कई फायदे हो रहे हैं जैसे टैक्स चोरी में कमी आयेगी, कम विकसित राज्यों को अधिक आय प्राप्त होगी। पुराने टैक्स समाप्त हो जायेंगे। इस व्यवस्था में वन-नेशन, वन टैक्स का कान्सेप्ट अमल में आयेगा। जिससे शासन को अधिक सुविधा होगी।

3 अगस्त 2016 को हमारे देश में जी.एस.टी. बिल पारित किया गया और 1 जुलाई 2017 से पूरे देश में इसे मान्यता देकर व्यवहारिक रुप से लागू कर दिया गया। सरकार के अनुसार इसके लागू होने से टैक्स देने वालों को काफी सुविधा मिलेगी। सरल शब्दों में कहा जाये तो सभी वस्तुओं एवं सेवाओं में नया जी.एस.टी. टैक्स लगाया जावेगा। इससे पूरे देश में एक ही टैक्स सिस्टम रहेगा, कोई और टैक्स इसके साथ नहीं देना होगा।

जी.एस.टी. बिल के अंतर्गत टैक्स की दरे कम होगी, परंतु करदाताओं की संख्या लगभग 5 से 6 गुनी तक बढ़ जायेगी। टैक्स का दायरा बढ़ने के कारण सरकार को आय संबंधी लाभ प्राप्त होगे, कर की दरें एक समान होगी, जो धीरे-धीरे तय की जानी है।

इस टैक्स के लगने से छोटे और मंझोले व्यापारियों एवं व्यवसायियों को अधिक फायदा होगा और क्षेत्रीय पक्षपात का भी अंत होना तय है। शासन के अनुसार 178 वस्तुओं पर जी.एस.टी. की दर 18 प्रतिशत कर दी गई है। जो पहले 28 प्रतिशत थी। नई दरे 15 नवंबर से लागू है। इसी तरह एसी., फ्रिज, वाशिंग मशीन सहित 50 चीजों पर 28 प्रतिशत जी.एस.टी. लगेगा। रसोई की विभिन्न वस्तुओं पर 18 की बजाय 5 प्रतिशत जी.एस.टी. लगेगा। विभिन्न प्रकार की इलेक्ट्रानिक चीजों पर 28 प्रतिशत की जगह 18 प्रतिशत टैक्स लगेगा। उपभोक्ताओं पर कर लगने के नियम कर योग्य आय (Taxable Income) कर योग्य व्यक्ति (Assessee) और कर की परिभाषाएँ सभी प्रांतो में एक समान होगी। VAT (वेट) हर राज्य में लगता था, जिसे अब खत्म कर दिया गया है। बागवानी, दवाईयाँ, दूध, सिलाई मशीन इत्यादि पर 18 की जगह 12 प्रतिशत टैक्स लगेगा। शासन के अनुसार जी.एस.टी. लगने के बाद अक्टूबर 2017 में 95000 करोड़ का राजस्व देश को प्राप्त हुआ। अतः इसका लागू होना

इस बात का सबूत है कि देश की जी.डी.पी. को बढ़ाने एवं विकास की गति को रफ्तार देने के लिये यह एक जरूरी कदम था। जी.एस.टी. एक ऑनलाईन प्रक्रिया के रूप में शासन द्वारा निर्धारित की गई है। जिसे उपभोक्ताओं, निर्माताओं एवं विभिन्न प्रकार के सेवाओं को प्रदान करने वालो को इसका पालन करना अनिवार्य है। यह करदाताओं को लाभ तो पहूँचायेगा, साथ ही देश की आर्थिक स्थिति भी सुदृढ़ होगी।

''जी.एस.टी.'' के सीधे फायदे''

1. कर वंचन या हेराफेरी की संभावना खत्म।
2. सामानों की कीमत कम होगी।
3. सेवाओं की कीमत बढ़ेगी।
4. कारे, बाइकें सस्ती
5. रेल में स्लीपर की टिकट सस्ती होगी।
6. वायुयान में इकॉनामी क्लास सस्ती होगी।
7. रेस्टोरेंट में खाने का बिल सस्ता।
8. फिल्मों की टिकट सस्ती।
9. टैक्सी सेवा सस्ती होगी।
10. 17 प्रकार केन्द्रिय व राज्य स्तर पर लगाये जाने वाले करों से मुक्ति।
11. अन्य 40 प्रकार के वस्तुओं और सेवाओं पर लगाये जाने वाले करो से भी मुक्ति। (सर्विस टैक्स+ सेल टैक्स इत्यादि)

इस प्रकार वस्तु एवं सेवाकर भारत में लागू करने से राष्ट्रीय बाजार की अवधारणा को बल मिला,

डॉ. पी. साहू
सहा. प्राध्यापक (अर्थशास्त्र)

बुद्धिहीन को बुद्धि देती है, अज्ञानी को अज्ञान, शिक्षा से ही बन सकता है भारत देश महान ।

समाज में शिक्षा की आवश्यकता

शिक्षा एक स्वस्थ मस्तिष्क का निर्माण करती है जो एक स्वस्थ समाज का दर्पण है। शिक्षा ने ही मानव को पशु स्तर से ऊँचा उठाया है और श्रेष्ठ साँस्कृतिक प्राणी बनाया है। चूँकि समाज और शिक्षा एक-दूसरे से घनिष्ठता से जुड़े हुए हैं। बिना शिक्षा के समाज का विकास संभव नहीं है। दोनों एक-दूसरे के पर्याय है। हमारा भारतीय समाज एक धर्म परायण समाज है जब विदेशों में व्यक्ति जंगली बर्बर जीवन व्यतीत करते थे। उस समय हमारे यहाँ के ऋषि मुनियों ने ऐसी शिक्षा व्यवस्था की नींव रखी थी जिसमें समाज कल्याण व समाज का विकास निहित था। परम्परागत भारतीय समाज में शिक्षा के माध्यम से सामाजिक मूल्यों को व्यक्ति तक पहुँचाया गया और एक सभ्य समाज का निर्माण किया गया। भारतीय समाज में अनौपचारिक साधनों द्वारा भी व्यक्ति को शिक्षा प्रदान की जाती थी एवं समाज को संस्कृति से अनुकूलित करने का काम शिक्षा के द्वारा किया जाता था। शिक्षा में धर्म और नैतिकता के तत्वों की प्रधानता पायी जाती थी किन्तु आज पाश्चात्य सभ्यता एवं संस्कृति के संपर्क में हमारी शिक्षा व्यवस्था मैकाले द्वारा प्रदत्त क्लर्क बनाने की मशीन बनकर रह गई है जो कि सर्वांगीण से संकीर्णता को दर्शाती है। वर्तमान शिक्षा व्यवस्था पुस्तकीय ज्ञान और पढ़ने लिखने तक सीमित रह गया है।

शिक्षा व्यक्ति की सर्वांगीण विकास नैतिक, धार्मिक, सामाजिक, शारीरिक सभी पक्षों का चहुमुखी विकास कर व्यक्ति को जीवन निर्वहन की शक्ति प्रदान करती है। वर्तमान शिक्षा पद्धति में व्यवहारिकता कम व सैद्धांतिकता अधिक दिखाई पड़ती है, इसलिये गाँधी जी ने बुनियादी शिक्षा की बात कही थी जिसमें पढ़ने के साथ-साथ विद्यार्थी अपने रोजगार संबंधी कौशल को सीख सके, वर्तमान में केन्द्र व राज्य शासन ने इस कल्पना को साकार करने हेतु कौशल उन्नयन कार्यक्रम लाइवलीहूड कालेज की स्थापना की है जिसका मूल उद्देश्य शिक्षा सह रोजगार है।

श्री एस.के. गुप्ता
सहायक प्राध्यापक (समाजशास्त्र)

दूसरो में सदा गुण देखें, क्योंकि जिस गुण पर, आप ध्यान देते हैं वह गुण आप में आने लगता है ।

बी.एस.सी. वनस्पति शास्त्र के बाद जॉब के विकल्प

प्राचीन समय से पौधे जिज्ञासा का केन्द्र रहे हैं। अनेक सभ्यताओं में पेड़-पौधो को ईश्वर का दर्जा प्रदान किया जाता है। इंसानी सभ्यता के साथ-साथ पौधों के बारे में जानने का विज्ञान भी विकसित होता गया। चूँकि पौधे इंसानों की प्रायः सभी जरुरतों की पूर्ति करते हैं, अतः विभिन्न परिप्रेक्ष्य में इनका अध्ययन करना प्रासंगिक है। वनस्पति विज्ञान का प्रथम वैज्ञानिक अध्ययन का श्रेय 350 ईसा पूर्व अरस्तू के शिष्य थियोफ्रास्ट को दिया जाता है। वर्तमान में वनस्पति विज्ञान अपने आप में एक विकसित विज्ञान है।

देश एवं विदेश के सारे विश्वविद्यालयों एवं महाविद्यालयों में वनस्पति विज्ञान का अध्यापन स्नातक एवं स्नातकोत्तर स्तर पर अनिवार्य विषय के रुप में किया जाता है। वनस्पति विज्ञान के स्नातक के पश्चात निम्न क्षेत्रों में रोजगार / स्वरोजगार प्राप्त किया जा सकता है।

<u>स्नातक स्तर की प्रतियोगी परीक्षा :-</u> स्नातक स्तर पर वनस्पति विज्ञान का अध्ययन करने के पश्चात देश में होने वाली प्रायः सारी प्रतियोगी परीक्षा जिनमें योग्यता स्नातक होती है, में सम्मिलित होकर रोजगार प्राप्त किया जा सकता है।, इनमें संघ लोक सेवा आयोग, राज्य लोक सेवा आयोग, कर्मचारी चयन आयोग, रेल्वे, बैंक द्वारा आयोजित परीक्षाएँ प्रमुख हैं।

<u>वन सेवा :-</u> वन एवं वन्यजीवों में रुचि रखने वालों के लिये संघ लोक सेवा आयोग, राज्य लोक सेवा आयोग द्वारा आयोजित वन्य सेवा परीक्षा के माध्यम से कैरियर बनाने का मौका प्रदान किया जाता है।

<u>स्नातकोत्तर शिक्षा :-</u> वनस्पति शास्त्र में स्नातक के पश्चात अनेक विषयों में जैसे- वनस्पति शास्त्र, बायोटेक्नोलॉजी, अनुवांशिकी विज्ञान, सूक्ष्मजीव विज्ञान, वानिकी, पर्यावरण अध्ययन आदि में स्नातकोत्तर उपाधि प्राप्त की जा सकती है। स्नातकोत्तर उपाधि के पश्चात विभिन्न अनुसंधान, शासकीय एवं गैर शासकीय संस्थाओं में वैज्ञानिक अधिकारी, रिसर्च एसोशिएट आदि की जॉब प्राप्त की जा सकती है। स्नातकोत्तर उपाधि के पश्चात पी.एच.डी., नेट, सेट की उपाधि प्राप्त कर उच्च शैक्षणिक संस्थाओं में प्राध्यापक के पद पर नियुक्ति प्राप्त की जा सकती है। स्नातकोत्तर उपाधि के पश्चात रेशम विभाग तथा उद्यानिकी विभाग में सहायक संचालक के पद हेतु आयोजित प्रतियोगी परीक्षा में सम्मिलित हुआ जा सकता है।

स्नातकोत्तर स्तर पर रुचि अनुसार निम्न ब्रांच में विशेषज्ञता हासिल की जा सकती है।

Specialization Available in Post Graduate Level
Cytology, Genetics, Molecular Biology, Lichen ology, Economic Botany, Palynology, Palaeobotany, Bryology, Ethnobotany, Phycology, Phytochemistry, Forestry, Plant Morphology, Phytopathology, Plant Anatomy, Plant Physiology, Agronomy, Horticulture, Plant Ecology, Plant Systematics, Environmental Science & Wild life etc.

कृषि क्षेत्र :- वनस्पति विज्ञान मे स्नातकोत्तर उपाधि प्राप्त छात्र कृषि क्षेत्र में भी अपनी सेवा प्रदान कर सकते हैं। कृषि अनुसंधान संस्थाओं एवं कृषि विश्वविद्यालयों में वैज्ञानिक अधिकारी, कनिष्ठ वैज्ञानिक, प्राध्यापक, तकनीकी सहायक, प्रयोगशाला सहायक आदि पदों पर नियुक्ति प्राप्त की जा सकती है।

स्वरोजगार / कंसल्टेंसी :- वनस्पति विज्ञान में स्नातक एवं स्नातकोत्तर उपाधि प्राप्त कर स्वरोजगार एवं कंसल्टेंसी के क्षेत्र में अच्छी आय प्राप्त की जा सकती है। मशरूम उत्पादन, एन्जाइम उत्पादन, नर्सरी व्यवसाय तथा औषधीय पादप की खेती के अलावा किसानों को फसल, मिट्टी परीक्षण एवं उद्योगों को पर्यावरण संबंधी परामर्श प्रदान कर आय प्राप्त की जा सकती है।

वनस्पति उद्यानों, अनुसंधान संस्थानों आदि में निम्नानुसार रोजगार के अवसर उपलब्ध है,

उपाधि	संस्थान	पद
बी.एस.सी. / एम.एस.सी. वनस्पति शास्त्र	Botanical Survey of India	Project Assistant
	National Institute of Oceanography	Technical Assistant
	India Agriculture Research Institute	Curator
	India Council of Forestry Research and Education	Field Assistant
	National Botanical Research Institute	Junior Scientist
	National Potato Research Institute	Herbarium Keeper
	Agharkar Research Institute	Park Ranger
	Seed Companies	Botanist
	Public/Private Sector Enterprises	Explorer
	Other Research institute of nation and international	Conservationist
		Environment Officer
		Pathologist

डॉ. एस. शुक्ला
सहायक प्राध्यापक (वनस्पति शास्त्र)

गुरु माता-पिता की आज्ञा का पालन करना इंसान का सर्वश्रेष्ठ धर्म है ।

सशक्त भाषा संस्कृत

संस्कृत भाषा विश्व की प्राचीनतम भाषा है। संस्कृत भाषा आज भी करोड़ो मनुष्यों के जीवन में ओतप्रोत है। कश्मीर से कन्याकुमारी तक समस्त जनता के धार्मिक कृत्य संस्कृत में होते है। प्रातः जागरण से ही अपने ईष्टदेव को संस्कृत भाषा में स्मरण करते हैं। गर्भाधान से लेकर अन्त्येष्टि पर्यन्त सोलह संस्कार संस्कृत में होते हैं। संस्कृत तो स्वयं विपुल साहित्य की वाहिनी, सरस, सरल और अमर भाषा है। संस्कृत सादा व्यवहार और ऊंचे विचार का पोषक है।

''केयरा न विभूषयन्ति पुरुषं हारा न चन्द्रोज्जवलाः,
न स्नानं न विलोपनं न कुसुमं नालङ्कृता मुर्धजाः।
वाण्येका समलङ्करोति पुरुषं सा संस्कृता धार्यते,
क्षीयन्ते खलु भूषणानि सततं वाग्भूषणं भूषणम्।।''

''बाजूबंद, पुरुष को शोभित नहीं करते और न ही चंद्रमा के समान उज्जवल हार, न स्नान, न चंदन, न फूल और न सजे हुए केश ही शोभा बढ़ाते हैं। केवल सुसंस्कृत प्रकार से धारण की हुई एक वाणी ही उसकी सुंदर प्रकार से शोभा बढ़ाती है। साधारण आभूषण नष्ट हो जाते है। सुसंस्कृत वाणी ही सनातन आभूषण है।''

संस्कृति, संस्कृत के बिना अधूरी है। अतः हम सब मिलकर संस्कृत की उन्नति में योगदान करें।

श्री के.एस. कंवर
सहायक प्राध्यापक (संस्कृत)

सकारात्मक शब्दों में वह तरंग है जो आपको स्वस्थ्य प्रदान करती है,
इसलिए सदा आशावादी व प्रेरणा देने वाले शब्दों का उपयोग करें ।

महाविद्यालयीन खेलों के माध्यम से व्यक्तित्व विकास एवं रोजगार

खेलों के क्षेत्र में महाविद्यालय का गौरवशाली इतिहास रहा है। हमारे महाविद्यालय में छात्र-छात्राओं के लिये विशाल खेल मैदान जिसमें विभिन्न खेलों क्रिकेट, फुटबाल, हॉकी, खो-खो, एथलेटिक्स, हैण्डबॉल, कबड्डी, व्हालीबाल, बाल बैडमिंटन, बास्केट बाल, शतरंज, कुश्ती, तीरंदाजी, ताईक्वाण्डो, बॉक्सिंग, टेबल टेनिस, नेटबाल, कार्फबाल, बैडमिंटन की सुविधायें उपलब्ध है। महाविद्यालय की अधिकांश टीमें विजेता एवं उपविजेता रहती है। प्रतिवर्ष 40-45 खिलाड़ी अखिल भारतीय अंतर विश्वविद्यालयीन प्रतियोगिताओं में महाविद्यालय का प्रतिनिधित्व करते है। उच्च शिक्षा विभाग द्वारा आयोजित राज्य स्तरीय अंतर परिक्षेत्र प्रतियोगिताओं में भी 60-70 खिलाड़ी महाविद्यालय का प्रतिनिधित्व करते है।

महाविद्यालय द्वारा खिलाड़ी छात्र-छात्राओं को यूजीसी के स्कीम के अंतर्गत सर्वसुविधा युक्त आउटडोर स्टेडियम (रेस्ट रुम, वॉश रुम, चेंजिंग रुम, टायलेट) की सुविधा प्रदान की गई है। महाविद्यालय प्रशासन आगे भी खिलाड़ियों को एक मल्टीपरपस जिमनेजियम हॉल जिसमें सभी इनडोर खेल खेले जा सकेंगे कि सुविधा उपलब्ध कराये जाने का प्रयास किया जायेगा।

उच्च शिक्षा विभाग छ.ग. शासन द्वारा हमारे महाविद्यालय को खेल के क्षेत्र में चिन्हित महाविद्यालय बनाया गया है। जिले में आयोजित होने वाली खेल प्रतियोगिताओं का संचालन महाविद्यालय के मार्गदर्शन में किया जाता है।

महाविद्यालय में अध्ययन/अध्यापन के अतिरिक्त छात्र-छात्राओं के संपूर्ण विकास हेतु शासन द्वारा विभिन्न गतिविधियों खेलकूद, राष्ट्रीय सेवा योजना, नेशनल कैडेट कोर, यूथरेडक्रास सोसायटी, युवा उत्सव, साहित्यिक, सांस्कृतिक कार्यक्रमों के अलावा समय-समय पर विभिन्न कार्यक्रम किये जाते है। जिसके माध्यम से छात्रों के व्यक्तित्व के विभिन्न आयामों का विकास होता है। इन सभी छात्र/छात्राओं व्यक्तित्व के समग्र विकास में खेलकूद एवं शारीरिक शिक्षा का स्थान महत्वपूर्ण होता है। इसलिये स्कूल व महाविद्यालयों में एक पूर्णकालिक शारीरिक शिक्षक की नियुक्ति की जाती है। जिनके मार्गदर्शन में खेलों के माध्यम से छात्र-छात्राओं का शारीरिक व मानसिक विकास होता है। खेलों के विभिन्न स्तरों में भाग लेने वाले खिलाड़ी छात्र-छात्राओं के महाविद्यालय के विभिन्न पाठ्यक्रमों में प्रवेश हेतु 15 प्रतिशत तक अधिभार दी जाती है।

खेलों के माध्यम से छात्र-छात्राओं को रोजगार के अवसर भी उपलब्ध होते है। राष्ट्रीय स्तर पर प्रतिनिधित्व करने वाले खिलाड़ियों को नियुक्तियों में छूट मिलती है। महाविद्यालय के अनेक छात्र-छात्रायें सेना, पुलिस, आर. पी.एफ. व पैरामिलेट्री फोर्सेस में चयनित हो चुके है। महाविद्यालय के अनेक खिलाड़ियों ने आगे जाकर शारीरिक शिक्षा को कैरियर के रुप में चुनकर शारीरिक शिक्षा व क्रीड़ाधिकारी के पद पर कार्य कर रहे हैं। महाविद्यालय के दो छात्रों ने शारीरिक शिक्षा में जे.आर.एफ. एवं कई छात्र-छात्राएं नेट/सेट की परीक्षा उत्तीर्ण कर चुके है।

मैं महाविद्यालय के छात्र-छात्राओं से यह अपील करता हूँ कि वे महाविद्यालय में उपलब्ध खेलकूद सुविधाओं व शासन की योजनाओं का ज्यादा से ज्यादा उपयोग कर स्वस्थ रहें, सुखी रहें व महाविद्यालय का नाम रोशन करें। मैं अभिभावकों से अपील करता हूँ कि वे अपने बच्चों को खेलने के लिये प्रोत्साहित करें क्योंकि स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ मस्तिष्क का निवास होता है। यदि आपका बच्चा स्वस्थ है तो वह अपने निर्धारित लक्ष्यों को प्राप्त कर सकता है। इसी आशा और विश्वास के साथ आप सभी के उज्जवल भविष्य की कामना करता हूँ।

डॉ. बी.एस.राव
क्रीड़ाधिकारी

छत्तीसगढ़ की पावन धरा में, कोरबा जिला महान है

छत्तीसगढ़ की पावन धरा में, कोरबा जिला विराजमान है,
ऊर्जा नगरी नाम कहलाती, हम सबका अभिमान है।
जनजातियों से नाम पड़ा यह, कोरवा जाति कहलाती है,
जिसकी वैभव और संस्कृति से, नई प्रेरणा जगाती है।
मोक्षगुण्डम प्ररेणाश्रोत है जिनके, ऊंचे उनके विचार है,
प्रकृति के बीच खड़ा यह, महाविद्यालय परिवार है।
अरिहन, हसेदव का संगम है, सतत् सलिल प्रवाहमान है,
छत्तीसगढ़ की पावन धरा में, कोरबा जिला महान है।
ऊर्जा नगरी नाम कहलाती, हम सबका अभिमन है,
शस्य श्यामल धरती है यहाँ की, खेतों में हरियाली है।
स्वरोजगार से परिपूरित करती, हम सबमें खुशहाली है,
एस.ई.सी.एल., एन.टी.पी.सी. यहाँ, कोयला का खदान है।
एल्युमिनियम उत्पादन करती, बालको की पहचान है,
सर्वमंगला, मड़वारानी, महिषासुर का वरदान है।
धन्य हुये सब लोग यहाँ के, हम सबको गुमान है,
तीर्थ स्थल की बात करें, तो इनकी अलग पहचान है।
दूर-दूर से सब लोग है आते, कोरबा जिला महान है,
छत्तीसगढ़ की पावन धरा में, कोरबा जिला विराजमान है।
ऊर्जा नगरी नाम कहलाती, हम सबका अभिमान है,
छत्तीसगढ़ का कश्मीर चैतुरगढ़ कहलाता है।
देवपहरी, सतरेंगा जैसे तीर्थ स्थल हमें भाता है,
पाली में शिव शंकर बसते, खजुराहों की कलाकृति है,
जाजवल्य विक्रमादित्य की नगरी, असीम प्रेम की प्रीति है,
ज्ञान सभ्यता से आलोकित करती, विद्वजन सम्मान यहाँ।
सक्सेना सर जैसे गुरु मिले, अग्रणी होने का प्रमाण यहाँ,
समय का साथी, विषय का ज्ञाता, नियम से है परिपूर्ण यहाँ।
ऐसा आदर्श मिले हम सबको, शिक्षा में हो निपुण जहाँ,
शिक्षा के इस क्रमिक विकास को, हम आगे तक ले जायेंगे।
कोई न रहे बेरोजगार यहाँ, ऐसी शिक्षा दिलायेंगे,
एक नये भारत के निर्माण को, हम स्वच्छ शिखर पर ले जायेंगे।
स्वच्छ शिखर पर ले जायेंगे।
स्वच्छ शिखर पर ले जायेंगे।

श्री एस.एन. कुर्रे
सहा प्राध्यापक (हिन्दी)

सकारात्मक सोच जरुरी.....

1. व्यक्ति दो तरह की सोच रखता है, एक सकारात्मक और दूसरा नकारात्मक, हम सकारात्मक सोच रखकर कार्यों को सही गति प्रदान कर सकते हैं। नकारात्मक सोच रखकर हम अपने बने हुए कार्यों को बिगाड़ सकते हैं।

   हमें कोई भी कार्य की शुरुआत करनी हो तो या हमारे पास अचानक कोई मुसीबत आ जाये इस स्थिति से आगे बढ़ने के लिए हमारे सोचने का तरीका है वह पॉजीटिव होना चाहिए। समस्या आते ही व्यक्ति अपने कार्यों का निर्वाह कई बार ठीक ढंग से नहीं कर पाता। हम पॉजीटिव सोचेंगे तो हम इस स्थिति से आसानी से आगे बढ़ सकते हैं। हम अपने जीवन में लक्ष्य की प्राप्ति की ओर आगे बढ़ते हैं। अनेक बार असफलता का सामना करना पड़ता है, और हम सफलता से दूर रह जाते हैं। इस स्थिति में हमें संयम से काम लेना चाहिए। ठण्डे मन से पॉजीटिव सोचना चाहिए।

2. असफलता को बहुत ज्यादा तूल न देकर आगे की ओर सोचना चाहिए। वास्तव में लक्ष्य की प्राप्ति के लिए अपने कार्य के प्रति निष्ठाभाव समर्पण, सही समय में कार्य करने की प्रवृत्ति ही सकारात्मक परिणाम दिलाता है। हमारे आस पास अनेक लोग होते हैं। जो नकारात्मक बात करते रहते हैं, आप यह कार्य नहीं कर सकते, यह परीक्षा उत्तीर्ण करना आपके बस की बात नहीं। इस तरह के अनेक बाते सफल और असफल दोनों की प्रकार के व्यक्ति करते हैं।

   इनमें ज्यादातर वे लोग शामिल होते हैं, जो असफल हुए होते हैं। जो खुद तो निराश और हताश होते हैं और दूसरों को सही मार्ग बताने के बजाय गुमराह करते हैं। हमें ऐसे लोगों की बातों को ज्यादा तूल न देते हुए इनके बातों को एक कान से सुनकर दूसरे कान से निकाल देना चाहिए।

3. एक किसान को फसल उगाने से लेकर अन्न की प्राप्ति तक अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ता है। समस्याओं के सामने वह हार नहीं मानता और सही सोच रखकर अन्न की प्राप्ति करता है। मेरे पास पिछले वर्षो में बेहद जटिल समस्या आयी थी। घर की स्थिति एकदम खराब थी। ऐसा लग रहा था, सब कुछ खत्म हो गया। लेकिन इस स्थिति में निपटने के लिए मैंने अपना नजरिया बदला और पॉजीटिव सोच लेकर आगे बढ़ा। परेशानी बेहद जटिल थी। पर मैंने हार नहीं मानी और धैर्य का परिचय दिया, इसका परिणाम भी अच्छा रहा।

   सकारात्मक सोच लेकर हम आगे बढ़ें तो हम किसी भी लक्ष्य तक आसानी से पहूँच सकते हैं, प्राप्त कर सकते हैं। परिणाम अच्छा ही रहेगा। बस हमें अपने कार्य करने के प्रति ईमानदारी रखनी जरुरी है।

श्री जी.पी. देवांगन
सहायक प्राध्यापक (राजनीति विज्ञान)

अनुभवों के सफर में...

अनुभवों के सफर में
एहसास कुछ ऐसा होता है!
मिटती है फिर बनती है इस दुनिया में तस्वीरें
जो मिटती है धुल बनकर उड़ जाती है
साँझ ढल फिर रात मिली और रात सुबह में बदल जाती है
धुल बन जाते अंग मिट्टी का और पहर आती, जाती है
जब हटता है भरम का बादल, तब
आसमान साफ होता है
अनुभवों के सफर में
एहसास कुछ ऐसा होता है!
गुजर रही होती है जिन्दगी, बिन नाविक के नौके जैसी
पर नाविक है नौके में बैठा अनसुलझी ये पहेली कैसी
ढूँढ रहे हैं, घूम रहे है अंधा ढूँढे आंखे जैसी
जब खुलता है अंतर नयन तब आँख भी आप होता है
अनुभवों के सफर में
एहसास कुछ ऐसा होता है!

श्री एस.के. पटेल
सहायक प्राध्यापक (प्राणी शास्त्र)

जो आपको जगा सके, आपको पूर्ण बना सके, आपको आपका दर्शन करवा सकें वह है आपका सच्चा मित्र ।

एक अविस्मरणीय सौगात.....

दिनांक 01.12.2017 को महाविद्यालय में अंतर्राष्ट्रीय दिव्यांग दिवस के उपलक्ष्य में आयोजित जिला स्तरीय कार्यक्रम में विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित श्रीमती आभा तिवारी, डिप्टी कलेक्टर, जिला-कोरबा ने कार्यक्रम से अभिभूत होकर त्वरित इन रचनाओं को इन विशेष छात्र/छात्राओं को समर्पित

''ईश्वर की अनुपम कृति ''दिव्यांग''

ईश्वर के दिव्य अंश है हम,
सृष्टि की पहचान हम
संताप नहीं बरदान है हम,
बिना पंख की उड़ान हम
संवेदना के जल से सिंचित,
पुष्प पल्लवित उद्यान हम
लीक पर चलती है दुनिया,
नवीनता का आव्हान हम
पूर्णता है अंत किन्तु,
जीवन्तता के मान हम
नहीं पराजय की विवशता,
विजय का यशगान हम,
कर्म रण में सुसज्जित
ज्ञान रथ के सारथी हम,
अग्रसर है हम निरन्तर,
लक्ष्य भेदन के लिये अब,
प्राण वण से तैयार हम,
धैर्य और साहस की प्रतिमा

आदमी

बेतहाशा भीड़ भागता आदमी,
अजनबी चेहरों में
पहचान खोता आदमी,
रिश्तों के मायने तलाशता
जिंदगी के भंवर में उलझता आदमी,
सुकून की तलाश में
मंजिल से भटकता आदमी,
एकाकीपन से लिपटा
अपनेपन को तरसता आदमी,
अमृत की आस में
जहर को निगलता आदमी,
खंजर लिये हाथों से घिरा
जीने को तरसता आदमी,
कब खत्म होगी ये दौड़
न कोई ओर ना कोई छोर,
फिर भी जीतने को आतुर
चिंता से व्याकुल आदमी,
माटी से बने तन को
सोने सा सहेजता आदमी,
काल के सत्य से
सर्वदा अनजान,
क्षण भंगुर जीवन के अर्थ को
अनायास नकारता आदमी।

श्रीमती आभा तिवारी
डिप्टी कलेक्टर
कोरबा

शैक्षणिक संस्थान और छात्र

शैक्षणिक संस्थान समाज की नई पीढ़ी और राष्ट्र-निर्माण के लिये तैयार करने के उद्देश्य से स्थापित किये गये हैं। इसके लिये सरकार तथा विश्वविद्यालय द्वारा अनेक योजनायें भी संचालित की जाती है, मगर हमारे महाविद्यालय में उनके साथ ही कुछ अन्य महत्वपूर्ण पहल भी की गयी है। हम स्वयं को गौरवान्वित महसूस करते हैं कि हमें ऐसे महाविद्यालय में पढ़ने का अवसर प्राप्त हुआ है जहाँ हमारे प्राचार्य तथा प्राध्यापकगण हमें अपनी संतान समान सिर्फ कहते ही नहीं अपितु मानते भी हैं। हमारे सर्वांगीण विकास एवं जीवन की विभिन्न चुनौतियों का सामना करने हेतु प्रशिक्षित करने के लिये हमे ऐसे अनेक अवसर प्रदान किये जाते है जो किसी अन्य महाविद्यालय में शायद ही हों।

हम महाविद्यालय के पहले ऐसे छात्र हैं जिन्हें वार्षिक पत्रिका को तैयार करने में सहभागिता निभाने का सुअवसर प्राप्त हुआ है। यह अनुभव अत्यंत शिक्षाप्रद रहा, तथा हमें ऐसी चीजें सीखने को मिली जो किसी पुस्तक से नहीं मिल सकती। हमने नये लोगों के साथ काम करना, कार्य-विभाजन एवं प्राथमिकता तय करने जैसे गुर सीखे। साथ ही एक रचनात्मक कार्य का हिस्सा बनने का संतोष भी प्राप्त हुआ।

महाविद्यालय के सभी कार्यक्रमों के क्रियान्वयन में छात्रों की सहभागिता सुनिश्चित कर उन्हें यथोचित् दायित्य सौपें जाते हैं। वहीं कार्यक्रम के विषय में हमारे सुझाव भी आमंत्रित किये जाते हैं। इस प्रकार छात्रों में अपनी सहभागिता निभाते हुए नेतृत्व करने के गुण विकसित होते हैं। प्रतिदिन के नियमित कार्यो में भी हमें ऐसे दायित्व दिये जाते हैं। अनेक विभागों के पुस्तकालय स्नातकोत्तर छात्रों द्वारा संभाले जाते हैं। इसके साथ ही प्रयोगशालाओं की देख-रेख में भी हमारी अहम् भूमिका रहती है। नैक मूल्यांकन जैसे विशेष कार्यक्रम में भी छात्रों को शामिल कर, औपचारिक प्रवास, मूल्यांकन प्रतिवेदन तथा आयोजनों की बारीकियाँ सीखने का अवसर प्रदान किया गया।

महाविद्यालय प्रबंधन द्वारा दिव्यांग छात्र-छात्राओं का मनोबल बढ़ाने तथा अन्य को प्रेरणा प्रदान करने हेतु आयोजित की गयी प्रतियोगितायें एक अनूठी पहल के रुप में सामने आयी। इस आयोजन से सभी को जीवन के प्रति एक नया नजरिया प्राप्त हुआ।

एक अन्य उल्लेखनीय बिंदु यह है कि महाविद्यालय में सौंदर्यीकरण, कम्प्यूटर, फोटोग्राफी जैसे कुछ कार्य छात्रों को ही सौंपे जाते हैं, जिसका प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष लाभ उन्हें प्राप्त होता है। साथ ही एक छात्र द्वारा अपना ज्ञान अन्य को बाँटने का भी प्रावधान है। इसी के अंतर्गत विगत वर्ष महाविद्यालय में पेटिंग क्लासेस लगायी गयी जिनका संचालन महाविद्यालय के ही एक प्रतिभावन छात्र के द्वारा किया गया। एक और उदाहरण महाविद्यालय के समाचार पत्र 'मिरर' के तीसरे संस्करण के रुप में सामने आया, जिसका प्रारुप पूर्णतः बी.एस.सी. के छात्र-छात्राओं द्वारा तैयार किया गया था।

उपरोक्त सभी बिंदुओं के आधार पर हम आसानी से यह कह सकते हैं कि शैक्षणिक गतिविधियाँ हमारे महाविद्यालय में सिर्फ एक निश्चित पाठ्यक्रम तक ही सीमित नहीं है, बल्कि हमें भविष्य में जीवनोपयोगी

महाविद्यालयीन छात्र प्रतिनिधि
(ऊर्जा पत्रिका)

''साक्षर नारी, सशक्त नारी''

आदिकाल से पूजती आई, इस धरती पर नारी।
जब जब भी इतिहास टटोला, इसका पलड़ा भारी।।
सदियों से पराधीनता का शिकार हुई बेचारी।
शिक्षा रुपी शस्त्र उठाकर उसने बाजी मारी।।

हम कहते है देश आगे बढ़ रहा है, तरक्की कर रहा है, पर क्यो लोगों की सोच ने तरक्की की है ? जी नहीं क्योंकि अगर की होती तो महिला साक्षरता की दर 54 प्रतिशत नहीं होती बल्कि 100 प्रतिशत होती। आज भी कितने ऐसे लोग है जो स्त्री साक्षरता के विरुद्ध है।

सशक्ता का अर्थ क्या है ? क्या यह कोई जाति, तबका या गुणधर्म है ? जी नहीं। सशक्त होने का अर्थ ऊँचे पद पर आसीन होना नहीं होता, बल्कि जो व्यक्ति किसी कठोर काम को सुगम बना सके वह सशक्त है। जो ये न समझे कि मै कमजोर हूँ वह सशक्त है। जो कठिन परिश्रम कर अपने नारी होने का, लक्ष्मी होने का प्रमाण दे वह सशक्त है।

नारी शिक्षा की परंपरा सदियों से चली आ रही है। वैदिक संस्कृति में गार्गी, मैत्री, लोपा, मुद्रा जैसी विदुषियों का नाम आता है। जिन्होनें न केवल ज्ञान अर्जित किया, बलिक शास्त्रार्थ में पुरुषों को भी पीछे छोड़ दिया। जब नारी साक्षर रहेगी, तभी सशक्त रहेगी। यह नारी की सशक्तता ही है कि देश की रक्षा मंत्री निर्मला सीतारमण एक महिला है। ओलंपिक में पदक जीतने वाली महिलाएँ है।। देश के सबसे बड़े बैंक की सी.ई.ओ. अरुधंति भट्टाचार्य एक महिला है। अगर इन्हे अक्षर का ज्ञान नहीं होता तो क्या ये सब यह मुकाम हासिल कर पाती?

हम बचपन से सुनते आ रहे है कि बच्चों को सर्वप्रथम अध्यापिका उसकी माता होती है । तब तो नारी शिक्षा और भी महत्वपूर्ण हुई क्योंकि जब नारी शिक्षित रहेगी तथी अपने बच्चों को शिक्षित करेगी, यही बच्चे बड़े होकर युवा बनेंगे और देश निर्माण करेंगे। मतलब स्त्री शिक्षा का अर्थ हुआ देश की शिक्षा। वैसे भी स्वामी विवेकानंद जी ने कहा है कि यदि किसी देश की स्थिति का पता लगाना हो तो उस देश में नारी की स्थिति का पता लगा लीजिए, अर्थात स्त्री शिक्षा देश की शिक्षा से समन्वय रखती है। हम कल भी कहते थे कि भारत एक विकासशील देश हैं और हम आज भी कहते हैं कि भारत एक विकासशील देश है। भारत को विकासशील से विकसित बनाने के लिए यदि किसी चीज की आवश्यकता है तो वह है नारी शिक्षा। केवल साक्षरता नहीं संपूर्ण शिक्षा क्योंकि अगर नारी अनपढ़ रहेगी तो पूरा परिवार अनपढ़ रहेगा, पूरा समाज अनपढ़ रहेगा, पूरा देश अनपढ़ रहेगा। और एक अनपढ़ देश की तरक्की की तो कल्पना भी नहीं की जा सकती ।

आठ साल से यू.पी.एस.सी. में महिलाएँ टॉप कर रही है। देश का विदेश मंत्रालय संभालने वाली एक महिला है। एक अनपढ़ महिला यू.पी.एस.सी. में टॉप नहीं कर सकती और जिसे अक्षर का ज्ञान नहीं उसके द्वारा विदेश मंत्रालय संभालने का सवाल ही नहीं उठता।

कोई मूर्ख ही कहेगा कि नारी पुरुषों के बराबर है क्योंकि वह उनसे दस कदम आगे है और हमेशा

संकलन
आकांक्षा पाण्डेय
बी.एस.सी. तृतीय वर्ष (बायोलॉजी)

अपने आप को धोखा देना छोड़िए....

एक दिन कॉलेज के चार विद्यार्थी देर रात तक मस्ती करते रहे और उन्हें होश आया तो अगली सुबह होने वाली परीक्षा का भूत उनके सामने आकर खड़ा हो गया। परीक्षा से बचने के लिये उन्होनें एक योजना बनाई । मेकेनिकों जैसे गंदे और फटे पुराने कपड़े पहनकर वे प्रिंसिपल के सामने जाकर खड़े हुए और उन्हें अपनी दुर्दशा की जानकारी दी। उन्होंने प्रिंसिपल को बताया कि कल रात वे चारों एक दोस्त की शादी में गए थे, लौटते समय गाड़ी का टायर पंचर हो गया। किसी तरह गाड़ी को धक्का लगा-लगा कर यहाँ तक लाये है। इतनी थकान है कि वहाँ बैठना भी संभव नहीं लगता, पेपर हल करना तो दूर की बात है। यदि प्रिंसिपल साहब उन चारों की परीक्षा आज के बजाय किसी और दिन ले ले तो बड़ी मेहरबानी होगी।

प्रिंसिपल साहब बड़ी आसानी से मान गए। उन्होनें तीन दिन बाद का समय दिया। विद्यार्थियों ने प्रिंसिपल साहब को धन्यवाद दिया और जाकर परीक्षा की तैयारी में लग गए। तीन दिन बाद जब वे परीक्षा देने पहुँचे तो प्रिंसिपल ने बताया कि यह विशेष परीक्षा केवल उन चारों के लिये ही आयोजित की गई है। इसलिये उन्हें अलग-अलग कमरों में बैठना होगा। जो प्रश्न पत्र उन्हें दिया गया उसमें केवल एक ही प्रश्न था.....

गाड़ी का कौन सा टायर पंचर हुआ था ? (100 अंक)

अ. अगला बायाँ ब. अगला दायाँ

स. पिछला बायाँ द. पिछला दायाँ

चारो विद्यार्थी इस प्रश्न को देखकर दंग रह गये। उन्होंने इस प्रकार के प्रश्न की कल्पना भी नहीं की थी। चारों के उत्तर लगभग अलग-अलग थे।

जिंदगी में आप दूसरों को तो धोखा दे सकते है लेकिन अपने आप को धोखा देना छोड़िए। याद रखिये की न्यूटन की गति का तीसरा नियम हमारी जिंदगी में भी लागू होता है जिसके अनुसार हर क्रिया के विपरीत दिशा में उसी के बराबर ही प्रतिक्रिया होती है। यदि हमारे कर्म अच्छे है तो हमें अच्छा ही फल मिलेगा और यदि हमारें कर्म बुरे है तो..... ।

हिमांशी साहू
बी.एस.सी. प्रथम (गणित)

प्रेम ही एक ऐसी महान शक्ति है जो प्रत्येक दिशा में जीवन को आगे बढ़ती है ।

मनुष्य का जीवन

जीवन में कुछ करना है तो मन के मारे मत बैठो।
आगे-आगे बढ़ना है, तो हिम्मत हारे मत बैठो।।

चलने वाला मंजिल पाता है बैठा हुआ पीछे रहता है, ठहरा पानी सड़ने लगता, बहता निर्मल रहता है। पाँव मिले चलने के खातिर पांव पसारे मत बैठो, आगे-आगे बढ़ना है तो हिम्मत हारे मत बैठो, समय के साथ चलना सीखो भाग्य सहारे मत बैठो आगे-आगे बढ़ना है तो हिम्मत हारे मत बैठो।

मनुष्य को अपने बारे में कुछ नहीं बोलना चाहिए। केवल अच्छे काम करते रहना चाहिए, क्योंकि यही मनुष्य का परिचय देता है। जिसकी नीति अच्छी होगी, उसकी हमेशा उन्नति होगी। मैं श्रेष्ठ हूँ, यह आत्मविश्वास है, लेकिन सिर्फ मैं ही श्रेष्ठ हूँ यह अहंकार है। लोग चाहते है कि आप बेहतर करें । दो हाथ से हम पचास लोगों को नहीं मार सकते, परंतु दो हाथ जोड़कर हम करोड़ो लोगों के दिल जरुर जीत सकते हैं। कोई भी व्यक्ति हमारे पास यदि तीन कारणों से आता है। वह भाव से, अभाव से, प्रभाव से आया तो मदद करो, पर यदि प्रभाव में आया है तो प्रसन्न हो जाओ। मन का खोट कुएँ के पानी की तरह होता है। मन कितना भी निकालो खत्म नहीं होता । जीवन में जो बात खाली पेट सिखाती है। वह बात कोई यूनिवर्सिटी या शिक्षक भी नहीं सिखा सकती, जीवन में कभी किसी को खुश करने का मौका मिले तो उसे छोड़ना नहीं। वह दोस्त तो बड़े नसीब वाले होते हैं जो किसी के चेहरे पर मुस्कुराहट दे पाते हैं, कितना अजीब है ना चौरासी लाख जीवों में केवल मानव ही धन कमाता है। लेकिन कोई भी जीव भूखा भी नहीं मरता और मानव का पेट कभी भरता नहीं, रेस के दौड़ने वाले घोड़े को यह भी पता नहीं होता कि वास्तव में जीत क्या है ? वो तो उसके मालिक द्वारा दी गई तकलीफ में दौड़ता है। इसलिये यदि कोई आपके जीवन में तकलीफ आए तो समझ लेना कि आपका मालिक आपको कुछ बताना चाहता है। जहाँ से हमारा स्वार्थ समाप्त होता है, वही से हमारी इंसानियत आरंभ होती है। जिंदगी के लिये बेहतरीन सोच रखो। हर एक की सुनो और हर एक से कुछ ना कुछ सीखों क्योंकि हर कोई सब कुछ नहीं जानता है। लेकिन हर एक कुछ न कुछ जानता है, अगर आपकी अच्छाई को लोग आपकी कमजोरी समझते हैं ''तो यह उनकी समस्या है आपकी नहीं'' आप आइना बने रहो फिक्र वो करें, जिनकी शक्ले खराब है। श्रद्धा जन्म देती है, नम्रता मान देती है, और योग्यता स्थान देती है, पर तीनों मिल जाये तो व्यक्ति को हर जगह सम्मान देती है।

मालती साहू
बी.एस.सी. प्रथम

धैर्य और आशा रखो तो शीघ्र ही जीवन की समस्त स्थिति का सामना करने की योग्यता आप में आ जायेगी ।

भारतीय संगीत

संगीत है शक्ति ईश्वर की,
हर स्वर में बसे है राम ।
रागी सुनाये रागिनी
रोगी को मिले आराम ।
संगीत मानव जीवन के रग-रग में बसा हुआ है ।

संसार का कोई भी व्यक्ति संगीत से अछूता नहीं है क्योंकि यह केवल मनोरंजन व धनोपार्जन का ही नहीं बल्कि ईश्वरोपासना व मोक्ष प्राप्ति का भी प्रबल साधन है । जब संगीत की मधुर स्वर लहरी छिड़ती है तो दुखी ही नहीं बल्कि बीमार व्यक्ति में उत्साह का संचार हो जाता है वह अपनी पीड़ा भूल जाता है, मरते हुए प्राणी में भी चेतना जाग उठती है । मन के बुरे विचार निर्मल हो जाते है, मस्तिष्क में उच्च विचारों का प्रवाह होने लगता है, शायद यही है संगीत का प्रभाव ।

गायन - जब हम शब्द स्वर और ताल के माध्यम से अपने मन के भावों को प्रगट करते है तो उसे गायन कहते हैं ।

वादन - जब स्वर लय और ताल के साथ किसी वाद्य को बजाता है और संगीतकार अपनी मन के भावों को उसकी सहायता से व्यक्त करता है तो उसे वादन कहते हैं ।

नृत्य - इसमें नर्तक भिन्न-भिन्न प्रकार के भाव मुद्राओं तथा अंग संचालन द्वारा अपने मन के भावों को अभिव्यक्त करता है ।

शास्त्रीय संगीत - शास्त्रीय संगीत के विभिन्न रागों से विभिन्न रोगों का फायदा होता है

जैसे :-

1. भैरवी एवं सोहनी राग से सिर दर्द एवं मेरुरज्जू के विकार दूर होते हैं ।
2. मुलतानी रामकली एवं सारंग राग से क्षय रोग ।
3. बसंत तथा सोरठ राग से नपुंसकता का रोग दूर होता है ।
4. भोपाली एवं मारवा राग से आंतो के विकार में लाभ होता है ।
5. आसावरी राग से मस्तिष्कीय रोग 100 प्रतिशत ठीक होता है । ऐसा भी दावा किया जाता है''

पॉप और रॉक संगीत से शरीर में उत्तेजना पैदा होती है साथ ही जठर की कार्य प्रणाली भी उत्तेजित एवं विचलित होती है । यौन केन्द्रो के उत्तेजित होने से शरीर की बहुमूल्य काम ऊर्जा का भी क्षय होता है । विभिन्न प्रयासों से प्राप्त परिणामों के आधार पर शोधकर्ता इस निष्कर्ष पर पहूँचे है कि भारतीय शास्त्रीय संगीत चिकित्सा के रुप में अन्य संगीत की अपेक्षा ज्यादा प्रभाव या उपयोगी है ।

1. प्यार नहीं है सुर से जिनको, वो मूरख इन्सान नहीं
सुर से प्रेम करे जो उनको, मिलता है भगवान यहीं
जग में अगर संगीत न होता, कोई किसी का मीत न होता

प्यार नहीं है.....

2. यह एहसास है सात स्वरों का, कि ये दुनिया वीरान नहीं ।
सुर में सोये सुर में जागे, उन्हें मिले वो जो भी मांगे ।
धर्म अर्थ और काम मोक्ष भी, मानो उनसे दूर नहीं ।
प्यार नहीं है.....

3. सुर इन्सान बना देता है, सुर भगवान मिला देता है ।
सुर की आग में जलने वाले, परवाने नादान नहीं
प्यार नही हैं.....

तेजस्विनी ठाकुर
बी.एस.सी. प्रथम (गणित)

सुसंगति का परिणाम

एक दिन झोलू अपने पिता जी के साथ बाग में टहल रहा था । टहलते-टहलते झोलू ने एक मिट्टी का ढेला उठा लिया और उसे सुंघा तो ढेले से सुगंध आ रही थी । झोलू को बड़ा आश्चर्य हुआ । उसने पिता जी से पूछा पिताजी ढेला सुगंध क्यों दे रहा है ? पिताजी ने कहा वह ढेला गुलाब के पौधे के नीचे बहुत दिनों तक पड़ा रहा । गुलाब की सुगंधित पंखुड़ियाँ उस पर गिरी और उसकी सुगंध उसे मिली ।

यह संगति का प्रभाव है झोलू ! यदि तुम भी अच्छे संगति में रहोगे तो तुम्हारा जीवन भी इस मिट्टी के ढेले की तरह सुगंधित हो जाएगा । यदि तुम बुरी संगति में रहोगे तो तुम दुर्गुणों के शिकार बनोगे और तुम्हारा जीवन दुःखी हो जाएगा । संगति ही मनुष्य को बनाती और बिगाड़ती है ।

दोस्ती गुनाह है, होने मत देना, दोस्ती खुदा है तो खोने मत देना ।
करते हो दोस्ती किसी से, तो कभी उस दोस्त को रोने मत देना ।।

लोग टूट जाते है एक घर बनाने में, तुम तरस नहीं खाते बस्तियों को जलाने में ।

प्रीति कुमारी
बी.एस.सी. प्रथम (गणित)

आवारा लड़का

स्कूल का दिन सभी को अच्छा लगता है, उन मासूम प्यारे बच्चों को छोड़कर जो अभी-अभी दौड़ना सीखे हैं, नये चेहरे से डरते हैं जो अपनी तुतली जुबान व मासूम चेहरे से किसी को भी मुग्ध कर देते हैं। उन्हें केवल माता-पिता की फुलवारी पसंद होती है। बुजुर्गों, युवाओं की याद तरो ताजा कर देने वाली, स्कूल के खूबसूरत पल जिसकी हल्की सी झलक मन में आने पर चेहरे ऐसे खिल उठते है, मानो भ्रमर के आने पर फूल। शायद ही कोई हो जिनके स्मृति पटल पर स्कूल की यादें अंकित न हो, जिनके स्मरण मात्र से वह मंदिर दिखने लगता है। मेरे स्मृति पटल पर भी उस समय की एक झलक स्पष्ट होने लगी और मैं खुश हो मुस्कुराने लगा। मेरे स्कूल के दिनों में जब शिक्षकों के आदेश पाकर कुछ सहपाठी एक लड़के को उसके घर तक लेने जाते थे, जिसे पढ़ाई करना मील का पत्थर लगता था। उसे पढ़ने की बिलकुल भी इच्छा नहीं थी। उसे तो बस जंगल झाड़ी अच्छा लगता था। वह लड़का बंदर की तरह उछल कूद करने में माहिर था। एक पेड़ से दूसरे पेड़, छत से छत पर कूदना उसके लिये बायें हाथ का खेल था। मेरे सहपाठी उसे पकड़ने के लिये हाथ-पैर मार लेते पर इस कठिन कार्य में सफल नहीं हो पाते। एक दिन मैं भी उस हरि अवतार को लाने अपने मित्रों के साथ गया। हमारे पैरों की आहट पाते ही वह निर्माणाधीन भवन पर छिप गया। उसे पकड़ने के लिये एक मित्र जब आगे बढ़ा तो उसने 15-20 फूट की ऊँचाई से छलांग लगा दी। हम सब किंकर्तव्यविमूढ़ हो गये और स्कूल आ गए।

बात उस समय की है जब छात्रों को स्वयं शिक्षक घर तक लेने जाते थे और अवसर पाते धुलाई भी कर देते थे। बच्चे माँ-बाप से ज्यादा शिक्षक से डरते थे।

पता नहीं उस सरफिरे लड़के की मति कैसे घूम गयी। उसने स्कूल आना प्रारंभ किया। एक-दो दिन बाद उस अनाड़ी ने शिक्षक के प्रश्नों के उत्तर दे कर सबको चौका दिया, क्योंकि उस प्रश्न का जवाब किसी को पता नहीं था। धीरे-धीरे उसने शिक्षकों का विशेष विश्वास प्राप्त कर लिया और खेल, पढ़ाई तथा चित्रकला, इन कलाओं के माध्यम से सबका दिल जीत लिया।

उसका यह बदलाव सचमुच प्रेरणादायक था। आज वह अपने सफल जीवन की ओर अग्रसर है।

सूरज चौहान
बी.एस.सी. प्रथम (गणित)

प्रकृति की पुकार

हे मनुष्य! मैं प्रकृति हूँ मेरा यह नाम दो शब्दों से मिलकर बना है- प्र+कृति, प्र का तात्पर्य है प्रारंभिक तथा कृति का तात्पर्य रचना। मेरा निर्माण किसने किया ? कैसे किया ? कब किया ? इसका उत्तर किसी के पास नहीं, वैज्ञानिकों ने इस संबंध में अनेक सिद्धांत दिये है फिर भी यह संतोषजनक नहीं है। इसका उत्तर मनुष्य आदिकाल से आज 21वीं सदी तक खोज रहा है। इन अनंत वर्षो से मैं एक मौन साधिका की भांति मनुष्य की सेवा में लगी हुई हूँ तथा लगी रहूँगी। अपने आँचल से फूलों की सुगंध फलों की मिठास, वर्षा की फुहारे, शरद-शिशिर के ओस, बसंत की बहार, पूनम की चाँदनी, प्रभात की नवऊर्जा युक्त किरणें आदि अनेक उपहार आप सभी को निरंतर प्रदान करती आयी हूँ तथा इसे मैं अपने आप समस्त मानव जाति के प्रति कर्तव्य मानती हूँ।

क्या आपने मुझे कभी समझा है ? मैं एक माँ हूँ क्योंकि समस्त सृष्टि का लालन पालन करती आयी हूँ। अनेक रोगों के निदान मुझे मालूम है। अतः मैं एक चिकित्सक हूँ। जब आपको कोई बात सताती है या आप किसी उलझन में रहते हैं तब आप किसी शांत जगह पर या किसी उद्यान में जाकर शांति का अनुभव करते हैं। अतः शांति प्रदान करने के कारण मैं आपकी मित्र भी हूँ।

परंतु इन सब नातों से अलग मेरा एक और पक्ष भी है और वह है- मैं एक कुशल दार्शनिक हूँ। क्या आपने मेरे इस पक्ष को कभी समझा है ? जब ग्रीष्म की प्रचण्डता तथा भीषण ताप अपनी चरम सीमा पर पहुँच जाती है। तभी पावस की फुहारे समस्त वातावरण को शीतलता प्रदान करती हैं। पतझड़ का अंतिम पत्ता झरने के पश्चात भी वृक्ष को विश्वास था कि मेरी हरियाली वापस लौटेगी जरुर तो क्या हुआ कि आज मेरे इस अंतिम पत्ते ने भी मेरा साथ छोड़ दिया। अंततः वृक्ष के विश्वास की जीत हुई तथा पतझड़ के तुरंत बाद बसंत की बाहर आयी। जब रात्रि अपने चरम पर थी, प्रकाश लेश मात्रा भी नहीं था तब भी मुझे विश्वास था कि पुनः उजियारा होगा। अतः मेरे विश्वास की जीत हुई तथा प्रभात तरुण किरणों ने मेरा स्वागत किया। इन उपमानों (उदाहरणों) के माध्यम से आपको मैं प्रतिकुल परिस्थतियों में धैर्य तथा आत्मविश्वास का पाठ पढ़ाती आई हूँ।

परंतु आज आप लोग अपने विकास तथा स्वार्थ के कारण मुझसे दूर होते जा रहे हैं, जिसे आप अपना विकास कहते हैं क्या वह वास्तविक विकास है ? कदापि नहीं। आप एक ओर विकास के सोपान पर एक कदम चढ़ते हैं, वहीं दूसरी ओर विनाश की ओर दस कदम बढ़ते हैं। जिन घने वनों में कभी शेर की दहाड़ सुनायी

पड़ती थी, बंदरों की शरारते होती थी, मयूर नृत्य करते थे, कोयल गाती थी। अब धीरे-धीरे सब समाप्त होते जा रहे हैं। एक समय था जब पक्षियों के चहचहाहट से प्रभात का शुभारंभ होता था । नदियों, झीलों में कमल की सुंदरता पूर्णिमा की धवल रात्रि की शोभा देखते ही बनती थी।परंतु आज विकास की अंधाधुंध दौड़ के चलते मनुष्य मेरा और कहीं न कहीं स्वयं अपना विनाश कर रहा है। आज की व्यस्तम दिनचर्या में किसी व्यक्ति के पास इतना समय नहीं है कि वे गुलाब, कमल जैसे पुष्पों की सुंदरता को देखें तथा उनकी सीख को समझे। बसंत ऋतु का स्वागत करते आम के बौर को, पलास के फूलों को देखें, कोयल की सुरीली कूक को सुनें, वर्षा की फुहारों से आनंदित होते हुए मोर के नृत्य को देखकर प्रफुल्लित हो।

विश्वास कीजिये यदि आप प्रकृति को समझेंगे तो आपका जीवन भी सुखमय बन जायेगा। केवल आवश्यकता है कि प्रकृति के संरक्षण तथा उसकी बातों को समझने की।

अमित झा
बी.एस.सी. प्रथम (बायो.)

मैं ईमानदार हूँ

चाहे कैसी भी परिस्थितियाँ हो अपने अंदर ईमानदारी की लौ जगा के रखें। ईमानदारी को अपने व्यवहार में लायें न कि सिर्फ बातों में इस छोटे से योगदान से देश का बड़ा सा विकास करने में अपनी महत्वपूर्ण

वर्तमान में इस भाग दौड़ में मेरी ईमानदारी के मूल्यों के अवमूल्यन पर भी मैं ईमानदार हूँ।
न जाने ये कैसी परिस्थितियॉ जो मुझे विवश करती मेरे नैतिकता को अनैतिक करने में।।
लेकिन फिर भी मैं ईमानदार हूँ....
बुराईयों के इस भँवर जाल में ह्रास होती मेरी अच्छाईयॉ मैं फिर भी ईमानदार हूँ।
संस्कार और मानवता जिन्हें आज गुजरे जमाने की बाते कही जाती हैं। उन धरोहर को समेटे हुए अपने पथ पर खड़ा मैं आज भी ईमानदार हूँ।
कर्तव्य, मर्यादा तथा सत्य का निष्ठा से पालन करना ही ईमानदारी है.....

शाओलिन कुर्रे
बी.एस.सी. अंतिम (गणित)

अंधविश्वास

अंधविश्वास ने आज प्रत्येक व्यक्ति को अपने जाल में जकड़ा हुआ है। अब्राहम लिंकन ने भी कहा है कि अंधविश्वास भय से उत्पन्न होता है।

अर्थ यह है कि आज हर व्यक्ति किसी न किसी बात से भयभीत रहता है। व्यर्थ की शंकाऐं पालकर हम अपने आप को भयभीत करते रहते है और उस भय से बचने के लिये अंधविश्वासी बन गये हैं। भय में जकड़े हुए हम थम गये हैं। एक ही जगह अटके हुए हैं।

हम ऐसे पढ़े-लिखे मूर्ख हैं कि अखबार में छपा भविष्यकाल पढ़कर भी भयभीत हो उठते है। कहने को तो तेजी से हम सभ्यता की ओर बढ़ रहे हैं। मगर इस मामले में हमारी सोच आदिम युग से आगे नहीं बढ़ पायी है।

मैं आपको बताना चाहता हूँ कि कई ऐसे अंधविश्वास हैं जो घर से ही शुरु हो जाते हैं इनके चलते हमारी सारी खुशियाँ सारा उत्साह समाप्त हो जाता है।

जब किसी बड़े ही जरुरी काम से जाना है। किसी की जिंदगी और मौत का सवाल है। मगर अचानक किसी ने छींक दिया। बस हम चप्पल उतारकर बैठ जायेंगे। रास्ते में जा रहे है और बिल्ली रास्ता काट गई, हम रुक जायेंगे। हम रुकेंगे ही नहीं बल्कि इंतजार करेंगे कि पहले कोई दूसरा व्यक्ति वहाँ से गुजर जाये। यानी जो हानि होनी है वह दूसरे की हो हमारी नहीं।

कुछ लोग पीछे से टोकने को बुरा मानते है। वे कहते हैं बस अब काम नहीं बनेगा। अपशकुन हो गया।

मैं यह नहीं कहता हूँ कि ज्योतिष विद्या झूठी है मगर अंधविश्वास ढकोसला है। ऐसा वैज्ञानिकों का मत है।

इसलिये मैं आप से यही कहना चाहता हूं कि जैसी भी स्थिति सामने आए, हमें दृढ़ता से पूरे आत्मविश्वास से, बिना भयभीत हुए उसका सामना करना चाहिए। हम अपने कार्य को अंध विश्वासों से श्रेष्ठ समझें।

अंध विश्वास से इंसान परेशान होता है। मगर इंसान एक ऐसी औषधि है जिसे हर समस्या का समाधान करना होता है।

चूँकि हर मनुष्य के बाजूओं में जान होता है, इसलिये दौड़ जा उन राहों में जहाँ कांटो के बीच भी

विकास सिंह
बी.एस.सी. द्वितीय

लालच का कुआँ कभी नही भरता लोभ ही लोभी इंसान का दुश्मन है, क्योंकि लालच का कोई अंत नही ।

दर-दर की ठोकरें

बचपन में मेरे माता-पिता ने जब कहा बेटी पढ़ाई करनी है और तुम्हें नौकरी करनी है तब मैंने सोचा, मैं बड़ी होकर कुछ न कुछ करूंगी।

आज मैं बड़ी हो गई हूँ। मेरी कुछ बनने की जो चाहत थी, टूटती नजर आ रही है, क्योंकि अशिक्षा के कारण जनसंख्या में वृद्धि होने से करोड़ों लोग बेरोजगार हैं, जिससे हजारो रिक्त पद आने से अपनी योग्यतानुसार नौकरी के लिये आवेदन करती रही। लेकिन कभी वह रद्द हो जाता था, तो कभी मेरी किस्मत साथ नहीं देती थी, नौकरी के लिए दर-दर भटकती रही।

इसके बावजूद मैंने हिम्मत नहीं हारी, लेकिन लोगों के ताने से कभी मरने का मन करता है, तो कभी अपनी कोशिशों को बढ़ाने की दुविधा में पड़ गई थी। तभी मेरे माता-पिता ने समझाया और मेरे हौसले को टूटने नहीं दिया और मैं आगे बढ़ती रही।

हमारी असफलता उसी प्रकार है जिस प्रकार एक बच्चा चलने से पहले कई बार गिरता है। उसी प्रकार प्रत्येक बार असफलता के बाद एक बार सफलता जरुर आती है। कभी निराश ना हो, क्योंकि जिनके जीवन में परेशानी आती है, वही आगे बढ़ पाते है। मैं आप लोगों से कहना चाहूँगी कि लोग कई बार असफल होते हैं और उम्मीद खोने के कारण टूट जाते हैं। इसलिए कभी भी अपना आत्मविश्वास नहीं खोना चाहिए और बार-बार कोशिश करते रहना चाहिये कि कभी ना कभी सफलता जरुर मिलेगी।

जिंदगी एक उम्मीद है, सफलता उसकी पहचान
जब सफल ना हो, तो मत हो परेशान।।

कलेश्वरी महिलांगे
बी.ए. अंतिम

दूसरों को अपने जीवन का संचालक बना देना ऐसा ही है
जैसे अपनी नौका को ऐसे प्रवाह में डाल देना जिसके अंत का आपको कोई ज्ञान नही ।

वो दिन मैं कैसे भूल जाऊं माँ

वो दिन मैं कैसे भूल जाऊँ माँ, जब कभी मुझे नींद ना आती।
तू रातभर मुझे लोरियां सुनाती, मैं कही उठ ना जाऊँ ये सोचकर।।
तू भी सो ना पाती, जब कभी त्यौहार आती।
तू मुझे अच्छे कपड़े और पकवान बनाकर देती।।
कहीं मेरी त्यौहार फींकी ना पड़ जाये ये सोचकर।
तू फटे पुराने साड़ी में रह जाती।।

वो दिन मैं कैसे भूल जाऊँ माँ, जब मैं ज्वर में तड़पता था माँ!
तू दिन रात मेरी सेवा किया करती थी, ज्वर में तो मैं तड़पता था माँ
पर उसकी लालिमा तेरे आभा मण्डल पर स्पष्ट दिखती थी।

वो दिन कैसे भूल जाऊँ माँ, जब मैने शाला में पहली मर्तबा दाखिला लिया था।
तूने अपने गहने गिरखी रख ज्ञान का पहला अक्षर दिलाया था।।
यही मैनें विवेकानंद की मीठी वाणी से पहला अध्याय आरंभ किया था।
यहीं मैनें बापूजी के विचारों को आत्मसात किया था।

वो दिन मैं कैसे भूज जाऊं माँ,
जब कभी धूप या वर्षा होती, तेरा आँचल मेरी छतरी बन जाती।
उष्णता और शीतलता तू सह लेती, पर कभी मुझे इसका अनुभव न होने देती।।

वो दिन कैसे भूल जाऊँ माँ,
जब कभी मैं गिर पड़ता था, तू अपने गोद में मुझे उठा लेती थी।
मेरे गालों को चूम-चूम कर आँखों के आँसू सुखा देती थी।
अब जब मैं गिरता हूँ मुझे दर्द नहीं होता
ये सोचकर नहीं की मैं बड़ा हो गया हूँ, बल्कि यह सोचकर कि,
मैं पुनः अपनी माँ की गोद में आ गया हूँ।

एक दिन आएगा माँ! जब पूरे विश्व में भारतीय समानों की माँग होगी।
बेहतरीन गुणवत्ता, और उचित कीमत जिसकी पहचान होगी।
आओ हम सब मिलकर ''मेक इन इंडिया'' के सपने को साकार करें।
अपनी भारत माँ का शीष पूरे विश्व में महान करें।

वो दिन मैं कैसे भूल जाऊँ माँ!
माँ के कर्ज को कभी चुकाया नहीं जा सकता है।
माँ के ममता को कभी भुलाया नहीं जा सकता है।

मो. गुलनवाज अली
बी.ए.अंतिम

क्योंकि ''मै आया'' नहीं थी ''मैं आई''

आँखें खोली जब इस धरती पर, खुशियाँ छाई बाँटी मिठाई।
कुछ ही पल में हुई पराई, क्योंकि ''मैं आया'' नहीं थी ''मैं आई''

लगा समय यूँ ही कटने, गोदी की जगह सोई मैं पालने,
भूख लगी तो मिली सिर्फ रोटी, और माई की दूध मलाई।।
क्योंकि ''मैं आया'' नहीं थी ''मैं आई''

समय पढ़ाई का जब आया, आई नयी पाठशाला और गौशाला,
नये-नये कपड़े पहने थे, पुस्तकें बने खिलौने, ज्यों ही हाथ लगाया, थप्पड़ जोरो की खाई
क्योंकि ''मैं आया'' नहीं थी ''मैं आई''

पढ़-लिखकर वह बनी रानी, और मैं बनी नौकरानी,
घर पर बोलती उसकी और मैं, अपनी किस्मत पर रोई।।
क्योंकि ''मैं आया'' नहीं थी ''मैं आई''

शादी हुई दुल्हन आई, और मुझको ही अनचाही बिदाई,
खुशी थी मेहमान जो आये, और मेरे लिखे आँखे भी न छलकाई।।
क्योंकि ''मैं आया'' नहीं थी ''मैं आई''

समय बीते कुछ ही पल में, सब रहने लगे शहर में,
क्योंकि वह थी, किरानी की रानी मैं गाँव की गृहिणी
सास-ससुर की वे न जानी, मैं दोनों को पहचानी।।
क्योंकि ''मैं आया'' नहीं थी ''मैं आई''

वक्त जब मुखाग्नि की आई, मैंने थी अपनी धर्म निभाई,
दुनिया थी नींद में सोई, जिसको मैने ही जगाई।।

इच्छा मिश्रा
बी.ए. प्रथम

बचपन

एक बचपन का जमाना होता था,
खुशियों का खजाना होता था।।
हसरत चाँद पाने की होती थी,
पर दिल तितलियों का दीवाना होता था।।
पापा की डाँटे होती थी,
गलती पर मम्मी का मनाना होता था।।
दादी-नानी की कहानियाँ होती थी,
जिनमें परियों का फसाना होता था।।
खबर न थी कुछ सुबह की,
ना ही शाम का ठिकाना होता था।।
थक हार के स्कूल से आना,
पर खेलने भी जाना होता था।।
हर खेल में साथी होते थे,
हर रिश्ता निभाना होता था।।
बारिश में कागज की कस्ती होती थी,
हर मौसम सुहाना होता था।।
रोने की कोई वजह न थी,
न हँसने का बहाना होता था।
गमों की कोई वजह न थी,
हर मौसम सुहाना होता था।।
अब नहीं रही वह जिन्दगी,
जैसे बचपन का जमाना होता था।।

संजना तरुण
बी.एस.सी. प्रथम (बॉयो.)

सीख

दुनिया के रंग - भंग में मत पड़ना
सपनों की पकड़ मंजिल की तलब मत छोड़ना
मानो तो दो पल की जिंदगी, अपनी किस्मत न फोड़ना
किस्मत बनाता नहीं भगवान
अपनी किस्मत स्वयं जोड़ना
एक हो तुम पीछे न पलटना
दम लगाकर दौड़ना
अगर लगन हो तुझमें तो
पहचान बनाना अपना
अगर लगन हो तुझमें तो
पहचान बनाना अपना
कुछ नहीं करके अपनी हार किस्मत को न जड़ना
तप लगन से दुनिया की नहीं
जिंदगी की खुशियाँ जोड़ना
चार पल की खुशी के लिये
सपनों को न जोड़ना
अपनी क्षणिक खुशियों के लिए
अपनों को न छोड़ना
जिन्दगी वर्षो की है
आज में न जकड़ना
जिन्दगी पल भर की है
इसे जीना ना भूलना....
हँसना और हँसाना, यूँ ही मुस्कुराना

पारुल कुमारी साहू
बी.एस. सी. प्रथम (बायो.)

माँ बाप को भूलना नहीं

भूलों सभी को मगर, माँ बाप को भूलना नहीं
उपकार अगणित है उनके, इस बात को भूलना नहीं
पत्थर पूजे कई तुम्हारे, जन्म के खातिर अरे
पत्थर बन माँ बाप का, दिल कभी कुचलना नहीं।
मुख का निवाला दे अरे, जिन्होनें तुम्हें बड़ा किया।
अमृत पिलाया तुमको, जहर उनके लिये उगलना नहीं।
कितने लड़ाये लाड़, सारे अरमान पूरे किए।
पूरे करो अरमान उनके, बात यह भूलना नहीं।
लाखों कमाते हो भले, माँ बाप से ज्यादा नहीं।
सेवा बिना सब राख है, मद में कभी भूलना नहीं।
संतान से सेवा चाहो, सन्तान बन सेवा करो।
जैसी करनी वैसी भरनी, न्याय यह भूलना नहीं।
सोकर खुद गीले में, सुलाया तुम्हें सूखें में।
माँ की अमीमय आँखों को, भूलकर कभी भिगोना नहीं।

आकाश स्वर्णकार
बी.एस.सी. प्रथम (गणित)

बाल दिवस

फूल गुलाब का जिनकी याद,
चाचा नेहरु जिंदाबाद
दुनिया के सारे बच्चे
चाचा को सब लगते अच्छे
नेहरु जी का जन्म दिवस
मनाते हैं हम हर बरस
नेहरु जी का बाल दिवस
मनाते हैं हम हर बरस।

कु. सोनाली गोराई
बी.एस.सी. प्रथम (बायो.)

कविता

वाह रे इंसान तेरी हद हो गई, इंसान को इंसान न समझें,
माँ की ममता को न समझे, फिर तुझे कैसे इंसान समझें।
बस पैसे को अपना ईमान समझे,
यही तेरी पहचान क्या हम समझे,
वाह रे इंसान तेरी हद हो गई।।

जिस माँ के कोख से तूने जन्म लिया।
आज वहीं माँ तुझ पर बोझ हो गई।
जिस माँ ने अपना पेट काटकर तुझें खिलाया।
आज वहीं दाने-दाने की मोहताज हो गई।
वाह रे इंसान तेरी हद हो गई।।

माँ-बाप तो इस संसार की नींव है।
प्यार-दुलार और ममता उनकी सजीव है।
क्या आज वहीं बुढ़ापे में उनकी गुनाह हो गई।
तू कहता है कि तू इंसान है।
मैं कहता हूँ कि न इंसान है न शैतान है।
तू महज एक लालची और बेईमान इंसान है।
वाह रे इंसान तेरी हद हो गई।।

प्रियंका वर्मा
बी.ए. प्रथम

हमारे सपनों का भारत

क्यूं डर-डर के जियें ए जिंदगी
आओ मिलकर दूर करें, भारत और अपने मन की गंदगी।
स्त्री शिक्षा पर जोर होगा,
अपनी सभ्यता का डंका हर ओर होगा।
बाल मजदूरी और नशा पर पहरा होगा,
हर ओर खुशहाली का चेहरा होगा।
दहेज कत्ल न बलात्कार होगा।
चारों दिशाओं में बस प्यार होगा।
सांप्रदायिकता का बैर न होगा।
निठारीं जैसा नरक न होगा।
कश्मीर जैसा स्वर्ग होगा।
संसद में सिर्फ काम होगा।
महंगाई का नाम न होगा।
आतंकवाद का खौफ न होगा।
हिन्दू, मुस्लिम, सिक्ख, ईसाई,
धर्म का अलगाव न होगा।
पूरे भारत के जनता में एकता का प्रभाव है।
विश्व में हरियाली का गौरव गान होगा।

कविता सोनी
पी.जी.डी.बी.एम.

प्रकृति

माँ धरती की कोख में, भाँति-भाँति के चीज।
ढेर सम्पदा से भरी, दान दया के चीज।।
देख रेख हमें करनी, सौंप चले है वीर।
दुर्जन न चोरी कर ले, रहना है गम्भीर।।
सब पालन पोषण करे, लेकर के सौगंध।
हरियाली छाई रहे, करना है प्रबंध।।
फल फूल जड़ी बूटी है, इसके है ऊपर।
जन जीवन उन्नत सदा, रहते सभी निर्भर।।
सकल जीव जगत सोते, आनंद से जीवन।
कल कारखानें ढेरों, विराजित है उपवन।।
लोहा, कोयला, सोना, अनेक खनिज तेल।
पावन सुवासित मिट्टी, बनाए ताल मेल।।
धरती के गोद में ही, गगन चुम्बी मकान।
यही प्रयोगशाला है, गरीब भी धनवान।।
निर्मल स्वच्छ ही रहना, धरती भी चहुँओर।
पावन बनाए करना, सेवा भी पुरजोर।।

प्रियंका रत्नाकर
बी.एस.सी. तृतीय

चल-चल रे राही चल रे

चल-चल रे राही चल रे,
चल-चल रे राही चल रे।
खुद को मिटा दे क्या हक तेरा,
तू सारे जग का धन है।
जुड़ा हुआ तेरे जीवन से,
औरों का भी जीवन है।
बिगड़ी हुई किस्मत को सँवरना है जिंदगी,
रुकने का नाम मौत है चलना है जिंदगी।
चल-चल रे राही चल रे,
चल-चल रे राही चल रे।
हिम्मत की पतवार है,
फिर तूफानों से क्या डरना।
तूफान की लहरों से निकलना है जिंदगी,
रुकने का नाम मौत है चलना है जिंदगी।
चल-चल रे राही चल रे,
चल-चल रे राही चल रे।

दीपेश साहू
बी.एस.सी. द्वितीय (बायो.)

जिंदगी बहुत हसीन है

समझो तो खुशनुमा शाम है।
वरना काली रात है जिंदगी।।
खोजो तो मिलेंगी अच्छाईयाँ भी।
वरना बुराइयों का भंडार है जिंदगी।।
जो जीना जानते है उनके लिए स्वर्ग है।
वरना नर्क से बद्तर है जिंदगी।।
पढ़ना चाहों तो सुंदर किताब है।
वरना कागज का टुकड़ा है जिंदगी।।
महसूस करो तो फूलों का गुलदस्ता है जिंदगी।
वरना कांटो का दामन है जिंदगी।।
रसपान करने वालों के लिये अमृत है।
वरना विष का प्याला है जिंदगी।।
देखो तो बहुत हसीन है।
वरना कीचड़ से कुरुप है जिंदगी।।
तिरस्कार न करना कभी इसका।
ईश्वर की ''अमानत'' है जिंदगी।।

प्रकाश कुमार राठौर
बी.एस.सी. प्रथम (गणित)

बेटियाँ हैं तो कल है

आधुनिक युग की मान हैं, बेटियाँ,
बदलते भारत की शान हैं, बेटियाँ
बेटियाँ है तो कल है,
जैसे पौधों में फूल है तो फल है,
बदलते परिप्रेक्ष्य की सम्मान हैं बेटियाँ
लक्ष्मी बाई, मदर टेरेसा, कल्पना की उड़ान हैं बेटियाँ,
बेटियों में हम भेदभाव न समझें,
माँ दुर्गा, लक्ष्मी, सरस्वती की अवतार हैं बेटियाँ,
आओ मिलकर बेटी बचाएँ,
ये नारा जन-जन तक पहूँचाएँ ।।

राजकुमारी कंवर
एम.ए.- तृतीय सेमेस्टर (हिन्दी)

संघर्ष

जिंदगी जीना आसान नहीं होता ।
बिना संघर्ष कोई महान नहीं होता ।।
पग-पग पड़े हैं काँटो के बिस्तर ।
पीछे मुड़ जाना अपनी शान नहीं होता ।।
आगे चलना फितरत है हमारी ।
क्योंकि आलसी और डरपोक का सम्मान नहीं होता ।।
जिक्र आए लक्ष्य का पीछे न हटना ।
क्योंकि लक्ष्य बिना मान नहीं होता ।।
इस कठिनाइयों से भरी जिंदगी में ।
बिना मतलब गुणगान नहीं होता ।।
जब तक न पड़े हथोड़े की चोट

देवेन्द्र कुर्रे
बी.काम. द्वितीय

काश ! मैं गुलाब होती

उस गुल सी
मैं भी-
काँटो से घिरकर
हरदम मुस्कुराती,
इठलाती-
भूल जाती अपना
कँटीला घेरा
जब तितलियाँ मुझ पर,
मँडराती-
मैं सब भूल जाती,
रहती मौन मैं
फिर भी-
जीवन से अपने,
जन को कुछ समझाती, सिखलाती
सुरभित है,
गुल ही-
अपनी सुरभि से
मैं तो सारा,
जग महकाती
काश ! मैं गुलाब बन पाती.....

सुमन भानु
बी.ए. तृतीय

मानव कल्याणकारी प्रकृति माँ

धरती बनी माँ, बसाये जो तेरा घर ।

सूरज बनी आँखे, दिखाये जो सारा संसार ।।

प्रकृति बनी बगीचा, बहलाये जो तेरा मन ।

जीवन बनी पर्यावरण, रहे जो सदा तेरे संग ।।

अन्न बनी सहायक, मिटाये जो तेरा भूख ।

जल बनी सहारा, बुझाये जो तेरा प्यास ।।

पहाड़ बना रक्षक, रोका जिसने बाढ़ की धारा ।

पेड़ बना रखवाला, समेटा जिसने तूफान सारा ।।

प्रकृति ने दिया जब अपना पूरा अंश ।

जिसको पाकर बना तू, परिपूर्ण मानुष तन ।।

बसंती लहरे
बी.एस.सी. द्वितीय (बायो.)

डर को भगा दो

डर को भगा दो, कुछ कर के दिखा दो,
आगे है मंजिल तुम्हारी, कुछ कर के दिखा दो।
राह कठिन हो, मंजिल दूर हो,
हौसला बुलंद हो, कुछ करके दिखा दो।
डर का भगा दो, कुछ कर के दिखा दो,
आगे है मंजिल तुम्हारी, कुछ कर के दिखा दो।
हिम्मत न हारो तुम, पथ दर्शक बनके तुम,
औरों को दिखा दो, कुछ कर के दिखा दो।
डर को भगा दो, कुछ कर के दिखा दो,
आगे है मंजिल तुम्हारी, कुछ कर के दिखा दो।
विश्व का कोई क्षेत्र हो या समुद्र की कोई गहराई हो,
एक ऐसा इतिहास रचो, जिस पर खुद को नाज हो।
डर को भगा दो, कुछ कर के दिखा दो,
आगे है मंजिल तुम्हारी, कुछ कर के दिखा दो।
अपने मधुर स्वर से सबका मन मोह लो,
अपने हो पराये सब पर समान दृष्टि हो।
डर को भगा दो, कुछ कर के दिखा दो,
आगे है मंजिल तुम्हारी, कुछ कर के दिखा दो।

मधुलिका सिदार
एम.ए. (भूगोल)
प्रथम सेमेस्टर

उठो नागरिक

हम लड़ेंगे साथी, उदास मौसम के लिये
हम लड़ेंगे साथी, गुलाम इच्छाओं के लिये
हम चुनेंगे साथी, जिंदगी के टुकड़े

जिंदगी लड़ती रहेगी, गाती रहेगी,
नदियाँ लड़ती रहेगी, कारवाँ चलता रहेगा
चलता रहेगा बढ़ता रहेगा, मुक्ति की राह पर
छोड़कर साथियों तुझको
तोड़ेंगे ये दीवारें, भर दो अब ये गहरी खाई
जागो दुखियारे इंसानों, तस्वीर बदल दो दुनिया की
तस्वीर बदल दो दुनिया की

जिंदगी ने एक दिन कहा कि, तुम लड़ो, तुम लड़ो
तुम लड़ो, तुम लड़ो, कि चहचहा उठे हवा के परिंदे
तुम लड़ो, तुम लड़ो।

दुर्गेश नंदिनी
बी.एस.सी. तृतीय (बायो.)

मैं एक नन्ही परी

मैं एक नन्हीं परी, पहली बार इस दुनिया में आई,
मेरी आँखे मानो समुद्र से भी गहरी
मेरी आवाज इतनी मीठी मानों मैनें सभी
अमृत का रसपान कर लिया हो!
मुझमें सूरज की किरणों का तेज है
तो चाँद की शीतलता का भाव।
मेरे आभूषण मानों तारे हैं,
और मेरे होठों पर फूलों की मुस्कान।
मेरे आँखो पर मानो रात ने काजल है आँजा,
और मेरे बालों को हवाओं ने है सुलझाया।
मैं ओस की बूंदो से नहाकर आयी हूँ,
और प्रकृति ने है मेरा श्रृंगार किया।
मेरी मासूमियत ऐसी की, पत्थर को भी पिघला दूँ,
मेरी पलके ऐसी की, बन्द करते ही दुनियाँ को मिटा दूँ।
मेरी शरीर की सुंदरता ऐसी की उसके सामने सारे हीरे है फिकें,
मेरे आँसू गंगा की तरह पवित्र है।
मैं एक नन्ही परी, इतनी सुंदर काया,
लेकर पहली बार इस दुनिया में आयी।
पर न जाने क्यों इतने गुणों के बाद भी, कोई सम्मान न पाई,
मैं एक नन्ही परी, पहली और आखिरी बार इस दुनिया में आयी।

!! मैं एक कली हूँ, मुझे खिलने का हक है!!

सुमन रानी डहरिया
बी.एस.सी. प्रथम (गणित)

भ्रूण हत्या

बेटी कहती माँ मुझे बचाओं,
आने दो संसार में।।
क्या कसूर है मेरा माँ,
बचा लो इस संसार से।।
दुनियाँ में अगर बेटी न रही,
तो नश्वर ये संसार है।।
बेटियाँ तो शोभा कुल की,
इससे ही संसार है।।
बेटे ने तो एक वंश बढ़ाया,
बेटियाँ दो वंशो की मान हैं।।
बेटी कहती माँ मुझे बचाओ,
आने दो संसार में।।
क्या कसूर है मेरा माँ,

कु. मधुमिता महंत
बी.एस.सी. तृतीय (गणित)

गुरुओं को कोटि-कोटि प्रणाम्

देते हमें जो शिक्षा और ज्ञान,
जिससे बढ़े जग में मान-सम्मान।
जो भटकाव में मार्ग दिखाए श्रेष्ठ,
जिसके लिये न कोई छोटा न कोई ज्येष्ठ।
कला-ज्ञान-विज्ञान सिखाते,
भाँति-भाँति के नुस्खे ले आते।
जिससे बढ़े हमारा ज्ञान,
ऐसे गुरुओं को मेरा कोटि-कोटि प्रणाम्।।

जो प्रेरित करते कुछ नया करने को,
खुद ही खुद से आगे बढ़ने को।
अपने अनुभवों का स्वाद चखाते,
अपनी सफलता और असफलता से हमें सिखाते।
क्या करना है ? कैसे करना है ? बाते ये जो बताए तमाम,
ऐसे गुरुओं को मेरा कोटि-कोटि प्रणाम्।।

गुरुजनों का ऋण अपार,
चुका न पाए जिसे ये संसार।
ज्ञान की गंगा बहाते हैं,
ज्ञान का अमृत पिलाते हैं।
जो भविष्य की नींव हैं रखते,
हमारी आंखों में सपने हैं गढ़ते।
फर्ज हमारा कि बढ़ाएँ उनका मान,

महेन्द्र कुमार दास
बी.एस.सी. अंतिम (गणित)

प्रकृति

चिड़ियों की चहचहाहट में,

कलियों की मुस्कुराहट में

प्रकृति की सुंदरता दिखाई देती है।

कदमों की हर आहट में

बरसात की बूंदे कुछ गुनगुनाती चली जाती है

ठंडी की सर्द हवाएँ बहती चली जाती है

वैसे ही गर्मी की चाँदनी रात में,

प्रकृति की सुंदरता दिखाई देती है।

झरनों की हर बात में

समेट इसे बंद कर लो मुट्ठी में

नहीं तो रेत ही रेत दिखाई देगी पूरी दृष्टि में

गरिमा आदित्य
बी.एस.सी. द्वितीय (बायो.)

जीवन नहीं मरा करता है

छिप-छिप अश्रु बहाने वालों, मोती व्यर्थ बहाने वालों
कुछ सपनों के मर जाने से, जीवन नहीं मरा करता है ।।

सपना क्या है, नयन सेज पर, सोया हुआ आँख का पानी,
और टूटना है उसको ज्यों, जागे कच्ची नींद जवानी ।
गीली उमर बनाने वालों, डूबे बिना नहाने वालों,
कुछ पानी के बह जाने से, सावन नहीं मरा करता ।।

खोता कुछ भी नहीं यहाँ पर, केवल जिल्द बदलती पोथी,
जैसे रात उतार चाँदनी, पहने सुबह धूप की धोती ।।
वस्त्र बदलकर आने वालों, चाल बदलकर जाने वालों,
चन्द खिलौनों के खोने से बचपन नहीं मरा करता है ।।

लाखों बार गगरियाँ फूटी, शिकन न आई पनघट पर,
लाखों बार कश्तियाँ डूबीं, चहल-पहल वो ही है तट पर ।।
तम की उमर बढ़ाने वालों, लौ की आयु घटाने वालों,
लाख करे पतझर कोशिश पर, उपवन नहीं मरा करता है ।।

लूट लिया माली ने उपवन, लुटी न लेकिन गन्ध फूल की,
तूफानों तक ने छेड़ा पर, खिड़की बंद न हुई धूल की ।।
नफरत गले लगाने वालों, सब पर धूल उड़ाने वालों,
कुछ मुखड़ों की नाराजगी, से दर्पण नहीं मरा करता है ।।

कु. सीमा मरकाम
बी.ए. प्रथम

छत्तीसगढ़ का परिचय

स्थापना	-	01 नवम्बर 2000
राजकीय पशु	-	जंगली भैंसा
राजकीय पक्षी	-	पहाड़ी मैना
राजकीय वृक्ष	-	साल
राजभाषा	-	छत्तीसगढ़ी, हिन्दी

छत्तीसगढ़ के लोक नाट्य -

नाचा :- छ.ग. का सर्वाधिक प्रचलित लोकनाट्य, जो कि ग्रामीण अंचल में सर्व व्याप्त है। यह मूलतः पुरुषों के द्वारा किया जाता है। परंतु अब महिलाएं भी नाट्याभिनय करती है। उसमें जोक्कड़ एवं परी की अहम भूमिका होती है।

रहस :- रहस छ.ग. राज्य का सांस्कृतिक परम्परा का प्रतीक है। छ.ग. में बाबू रेवाराम रचित रहस की पांडुलिपियाँ प्रचलित है।

गम्मत :- यह प्रहसन का एक रुप है यह हास्य व्यंग्य शैली में सामाजिक कुरीतियों व विषमता पर प्रहर करता है। इसके दो रुप प्रचलित है- पहली खड़े साज व दूसरी बैठे साज।

लोक नृत्य :- सुआ नृत्य / गौरा गौरी नृत्य / गीत : देवार जनजाति की महिलाओं द्वारा यह नृत्य किया जाता है। इसे गौरा नृत्य भी कहते हैं। तोता शिव पार्वती का प्रतीकात्मक स्वरुप माना जाता है। इस गीत को मुकुटधर पाण्डेय ने छ.ग. का गरबा नृत्य कहा है।

सुआगीत :- तरि हरि नहा नरि नरि ना ना रे सुअना

पंथी नृत्य :- यह छ.ग. अंचल में सतनाम पंथ के लोगों द्वारा यह नृत्य किया जाता है।

प्रमुख कलाकार :- स्व. देवदास बंजारे

वाद्य यंत्र :- मांदर व झांझ

राउत नाचा :- राउत नाचा छ.ग. के बिलासपुर जिले में होता है। दीपावली उत्सव के दौरान राउत नाचा किया जाता है।

वाद्य यंत्र :- गड़वा बाजा

राउत नाचा के दोहे :- जइसन तुम लिहो दिहो, तइसन देबो असीस।
अन्नधन भण्डार भरे, तुम जीयो लाख बरीस।।

पंडवानी :- महाभारत कथा का छत्तीसगढ़ी लोक रुप पंडवानी है। पंडवानी के रचयिता-सबल सिंह

चौहान है। पंडवानी के दो शैली है- वेदमती और कापालिक।

प्रमुख कलाकार :- झांडूराम देवांगन, तीजन बाई, रितु वर्मा, पुनाराम निषाद, रेवाराम साहू, शांति बाई, उषा बाई बारले।

वाद्य यंत्र :- 01) तम्बुरा 02) करताल

अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर ख्याति प्राप्त करने वाले कलाकार :-

1) झाडूराम देवांगन 2) तीजन बाई 3) रितु वर्मा

ददरिया :- छ.ग. के लोग गीतों का राजा कहते है। प्रेमगीत प्रणय के रूप में ददरिया को जाना जाता है। बैगा जनजाति ददरिया गीत के साथ नृत्य भी करते हैं।

ददरिया गीत :- पान ल खाये, मुँहु ल करे लाल, जादा मया झन करबे हो जाही जी के काल।

कलाकार :- लक्ष्मण मस्तुरिया, दिलीप षडंगी, केदार यादव।

चंदैनी गायन :- चंदैनी गायन छ.ग. अंचल में लोरिक और चंदा के प्रेम प्रसंग पर आधारित है।

कलाकार :- चितादास

वाद्य यंत्र :- टिमकी, ढोलक

टोला मारु :- यह ढोला और मारु का प्रेम प्रसंग गायन है। किन्तु यह राजस्थानी लोक कला है।

प्रमुख कलाकार :- सूरज बाई खाण्डे

भरथरी गीत :- इस लोकगाथा में राजा भरथरी और रानी पिंगला के वैराग्य जीवन का वर्णन है।

कलाकार :- सूरज बाई खाण्डे

वाद्य यंत्र :- एकतारा व सारंगी

भोजली गीत :- रक्षाबंधन के दूसरे दिन भांदो माह कृष्ण पक्ष के प्रथम दिन होता है। भोजली गीत में गं गा का नाम बार-बार आता है।

गीत :- आ हो देवी गंगा, ओ देवी लहर गंगा।

बांसगीत :- यह एक दुख या करूण का गीत है जो छ.ग. मे राउत जाति द्वारा गायी जाती है। महाभारत के पात्र कर्ण और मोरध्वज व शीत बसंत का वर्णन होता है।

कलाकार :- केजुराम यादव, नकुल यादव

श्रीमती ए. कोर्राम
सहायक प्राध्यापक (हिन्दी)

शिक्षा पाकर ही बनते है, नेता, अफसर, शिक्षक, वैज्ञानिक मंत्री व्यापारी या साधारण रक्षक ।

बिहनिया
रथिया मोर सपना म बापू अईस

संगवारी हो काम बूता ले थके रहे, अति नींद आत रहिस। रथिया खांय अउ खटिया म सुतगेंव फेर सपना म बापू जी आके पूछिस! महाराज का हालचाल हे ? मैं कहेंव में ते ठीक हों फेर पूरा देश रोवत हे। बापू पूछिस देश काबर रोवत हे, मैं कहेंव मनखे ल आमा चाही अउ बमरी के बीज बोवत हे, मेहनत के चद्दर ह छोटे हे फेर इच्छा के गोड़ जब्बड़ हे जेला जमो लमावत हे। खुदके दाग धुलत नईहे, अउ मनखे मन आन के धोय बर अगुवाय हे, अपन दुख ले मतलब नई हे, आन के सुख ले जरत जात हे। जेन स्वच्छता के भाव ह अपने अपन आना रहिस ओखर बर अभियान चलाय ल परत हे। बापू तोर सपना तो सपना रहिगे हे। बापू कहिस जेन देश म राम-कृष्ण जनमे हे, जेन देश में बुद्ध-महावीर होय हे ओ देश के हाल कईसे बिगड़त जात हे ? मैं कहेंव बापू अब सेवा भाव के जघा में लेवा भाव आगे। जेन ल देखबे तेन ह खाय खाय ल खोजथे। बिना फायदा के कोई कुछ करना नई चाहत हे। बापू जी के कहना नई चाही फेर सिरतोन कहत हो अगर अंग्रेज के गुलामी रतिस त सही म आजादी बर तरस जातेन, ओ तो सत्तर साल पहली के बात हे जेन मनखे म देश भक्ति कूट-कूट के भराय रहिस मगर आज मनखे अपने सुवारत ले नई उबरत हे, पूरा देश आज रोवत हे। बापू मोर गोठ सुन के रो डारिस अउ कहे लागिस जेन देश म भगवान जनम लेहे बर तरसथे (मरथे) ओ देश के ये हालत ? मैं कहेंव जब पूरा देश मिलजुल के सेवा के भाव ले काम करही तभे आघू बढ़ही काबर कि ''संगठन ले बढ़के कोई शक्ति नई हे'' जब देश म कुछु बात बर जागरुकता अभियान चलाय के जरुरत नई परही सेवा भाव लाय पर दृष्टांत देहे बर नई परही अउ अपन-अपन कर्तव्य ल मन लगा के करही ओ दिन देश रोवय नई। जब जात-पात के कारण झगड़ा नई होही अउ थोर-थोर बात ल लेके लड़ाई नई होही तब देश आघू बढ़ही। जब नर-नारी के भेद सिरा जाही अउ दुनों सुतंत्र रूप ले काम करही तब देश हाँसही, जब जघा-जघा हड़ताल धरना बंद हो जाही जब देश लहराही। जब गरीब-अमीर, राजा-परजा, ऊँच-नीच छुवाछुत के भाव जमो के मन ले निकल जाही ओ दिन मोर देश खुशहाल दिखही। बापू कहिस महाराज अब देश ल आजाद तो करा देहे हन फेर जब तक मनखे अपन सुवारथ ल नई छोड़ही अउ देश के सेवा म अपन योगदान नई दीहि तब तक मोर सपना आंखी म ही रही।

दिगेश्वर
बी.एस.सी प्रथम

हर घर में एक दीप जलेगा, हर बच्चा स्कूल चलेगा मिड डे मिल्क खायेगें, हम सब स्कूल जायेंगे ।

मोर माटी

सुरुज के अंजोर ह संगी
अब अंधियारी जनावत हे।
जीनगी म दुख आगर होगे,
अब बिरथा जनवात हे।
आरो नईये जूड़ पूरवाही के,
मन म संसो समावत हे।
ठगुवा कस ठग के बरखा,
हरियर धान ल अइलावत हे।
एको बूंद तो बरस जा बादर,
मन म आस समावत हे।
खातू कचरा के लागा संग,
तन ह सूखावत हे।
मंहगाई के मार म,
अंतस ल घूना खावत हे।
झूम के बरस जा बादर,
अब दिन पहावत हे।
जांगर तोड़ कमा के मैहा,
पथरा मा धान उगाथंव जी।
किसान मैं माटी के,
चटनी बासी खाथंव जी।
मेहनत भरोसा परता मा,
हरियाली बगरावत हंव।
जग के पेट भरइया मैं,

लाकेश कुमार सिदार
बी.एस.सी द्वितीय (बायो.)

लागे सरग समान

लागे सरग समान, मोर छत्तीसगढ़ हे महान।
जेकर कण-कण मा, बसे हावै सुघ्घर किसान।।
छत्तीसगढ़ के माटी, संगी करव का बखान।
करव का बखान, करव का बखान।।
हरियर - हरियर जंगल झाड़ी, रुप ला तोरे निखारे।
नदिया के निर्मल पानी, चरण तोर पखारे।।
सोनहा धान के पान, करथे तोर गुणगान।
जेकर कण-कण मा बसे हावे सुघ्घर किसान।।
छत्तीसगढ़ के .....
तोर कोरा मा जनमे दाई, छत्तीसगढ़ के गाँधी।
वीरनारायण जईसे, जनमे महा बलिदानी।।
कतक करव गुण गान, जाने सकल जहान।
जेकर कण-कण मा, बसे हावै सुघ्घर किसान।।
छत्तीसगढ़ के .....
तोरे कोरा मा खेलेन कुदेन, बाढ़ेन अउ समलेन।
ममता तोरे अब्बड़ हावै, सबो झन बा तोरे।।
तोर बर देबो अपन जान, लक्ष्मी करे तोला प्रणाम।
जेकर कण-कण मा, बसे हावै सुघ्घर किसान।।
छत्तीसगढ़ के .....

काशी पटेल
एम.ए. तृतीय सेमेस्टर (हिन्दी)

हमन लईका रेहेन

हमन लईका रेहेन त पढ़ई-लिखई के छोड़ सब्बो करम करे हन। आज के लईका मन अईसन खुशी ल आज नई पा सके। हमर खुशी ल देखो.....सबले बड़े ब्रेकिंग न्यूज

''आज गांव में वीडियो आये हे बे।

सबसे बड़ी उत्सुकता

''काय पिचर लाये हाबे रे''

सबसे बड़ा इंतजार : ''गर्मी के छुट्टी कब आही रे''

सबसे बड़ी अफवाह

''गणित वाले मास्टर जी मर गे रे''

सबसे अच्छा टाईम पास

''किसी फिलम की कहानी सुनाना''

सबसे बड़ा सदमा

''चित्रहार शुरु होते ही लाइट गोल''

सबसे बड़ा दुश्मन

''रोज पहाड़ जैसा भारी भरकम पहाड़ा याद करना''

सबसे बड़ा हथियार

''पट्टी अऊ पेन्सिल''

सबसे बड़ी धमकी

''खाना खाए के छुट्टी में देख लुहु सारा तोला''

सबसे बड़ा रुतवा

''क्लास का केप्टन बनाना''

सबसे बड़ी शिकायत

''ए मोला पहिले ल मारिस''

सबसे बुरी बात

''वो बचपन वापस नहीं आ सकता और उन मीठी यादों को भुला देना...''

अम्बिका सोनी
एम.ए. तृतीय सेमेस्टर (हिन्दी)

Learning from Books

Books are our best friends for unconditional love and wisdom that they give to us. Books are the fuel for our thoughts and beliefs and provide us with inspiration and courage to stand up for what is right for our growth.

Spiritual books have become very popular in recent times. As we go through the work of writers who have had spiritual inspiration, our lives change.

Tired of the stressful and unhappy lives that many lead, now a days people are veering towards spirituality and peaceful living. Spirituality is on the rise. Helping us along on this journey there are many spiritual and self help books available. Make reading them a regular habit. And while reading spiritual books, avoid distraction such as TV or eating.

As we read, we begin to see the world around us in a different perspective. We begin to comprehend why a person is behaving the way he does. We learn to take things in our stride and move on faster from set backs.

Spiritual books help to clarify our doubts which otherwise seem difficult to resolve. We become positive. Our attitude and points of view change. Realising our dreams and aspirations becomes easier as the universe begins helping us to make positive affirmations. We experience joys like never before. None the less mere reading won't help us unless we learn to apply these principles in our daily life. Spirituality is not daily life. Spirituality is not about reading. For some, this realisation happens instantly, for others, it occurs quietly and gradually.

Dr. D. Patnaik
Head Librarian

Ego & Me

"The Ego is an exquisite instrument. Enjoy it, use it- just don't get lost in it."
-----Ramm Dass

"We all have egos for we are humans. We only differ on how we handle it in each and every situation." ----Unknown.

Your ego is your conscious mind, the part of your identity that you consider yourself. If one says that someone has a big ego then they mean to say that the person is too full of himself . Ego very often gets confused with the megalomania and vanity and all other kinds of nasty things but strictly speaking it is only a psychological term popularized by Freud- meaning the conscious mind, or the awareness of one's own identity and existence. Ego could also mean your consciousness of your own identity.

With an artist or a designer of the creative arts one deals with the realms of ego. There are numerous signs of ego-some of them are enumerated below-

- You find yourself being defensive, defending your ideas ultimately becoming defensive.
- A continual comparison with others is simulated. Actually the basic fact is being too competitive makes you less competitive.
- One starts seeking acceptance to justify ego needs. All crave respect and recognition from others which eventually interferes with success.
- You make a point of show-casing your brilliance.

Your ego can be considered to be in control if the following feelings are experienced :

- If you view a colleague or a friend as a rival and plan how to overcome him.
- When your ideas are questioned or someone disagrees, you take it as a personal affront.
- Without considering the value of other's ideas to belittle them or criticize their ideas.
- Compulsively following someone's lead whether it be Tom, Dick or Harry.

If one recognizes oneself honestly, he can automatically correct himself. Ego is like Goldilocks soup (from The Three Bears), which should neither be hot nor cold but just right.

Ego can also be considered to be that part of us which feels the need to be extra special. People with egos can be considered to be arrogant and over confident. Ego plays both ways- making you feel superior or inferior.

To know that you are just right and in control of your ego there are some common things you can see in life. For example,

- If you are a common person you are normal if you gossip about the flaws of people.

- When quarreling you feel that you should always emerge victorious.
- A feeling of jealousy when you realize that the other person is better off than you or doing better.
- You are self centered wanting to win always and sulk when you lose.
- You set impossible goals and when you don't reach them you blame the others.

There are numerous ways when your optimism becomes a liability especially when you take every incident, every reality, whether negative, in the positive way where you are looked towards, where you guide and remind people that "every cloud has a silver lining" and encourage people to look forward to better things.

There are some ways in which a positive person refuses to listen to any negative news and believes that a positive outlook can change anything and reject the bad news as pessimism of the other person. If understood properly ego is inherently positive and provides a level of confidence and ambition. But this should be limited and ego should not be allowed to go hunting for more support as this will lead to over confidence and a further downfall.

Hence ego is essential in everyman, for it defines him but excess of anything like luxury, pride, power, beauty and wealth may lead a man to a downfall.

"Self worth comes from one thing.....thinking that you are worthy.

---Dr. Wayne Dyer

Dr. M.L. Agrawal
Asstt. Prof. (English)

कोई न छुटे इस बार, शिक्षा है सबका अधिकार, हिन्दू, मुस्लिम, सिख, ईसाई मिलकर करे सब पढ़ाई ।

Quotable Quotes of Education

-A.P.J. Abdul Kalam

- "Teaching is a very noble profession that shapes the character, caliber, and future of an individual. If the people remember me as a good teacher, that will be the biggest honour for me.
- "Never stop fighting until you arrive at your destined place- that is, the unique you. Have an aim in life, continuously acquire knowledge, work hard, and have preseverance to realise the great life."
- "My message, especially to young people is to have courage to think differently, courage to invent, to travel the unexplored and succeed. These are great qualities that they must work towards. This is my message to the young people."
- "If a country is to be corruption free and become a nation of beautiful minds, I strongly feel there are three key societal members who can make difference. They are the father, the mother and the teacher."
- "One of the very important characteristics of a student is to questons. Let the students ask questions."

S. Soni
Asstt. Prof. (English)

15 INTERESTING & SPECIAL FACTS ABOUT SCIENCE

1. The brain is much more active at night than during the day.
2. During your life time you will produce enough saliva to fill two swimming pools.
3. It takes 17 muscles to smile and 43 to frown.
4. The brain itself cannot feel pain.
5. Your nose can remember 50,000 deferent scents.
6. Babies have around 100 more bones than adults.
7. The mortality rate if bitten by a Black Mamba Snack is over 95%.
8. A dog's sense of smell is 1,000 time more sensitive than a human.
9. The low frequency call of the humpback whale is the loudest noise made by a living creature.
10. An electric eel can produce a shock of up to 650 volts.
11. Female black widow spiders eat their males after mating.
12. Stomach acid is strong enough to dissolve razor blades.
13. Venus is the only planet to spin clockwise.
14. Chalk is made from trillions of microscopic plankton fossils.
15. An individual blood cell takes about 60 second to make a complete circuit of the body.

Shri S. Soni
Asstt. Prof. (Zoology)

COLLEGE LIFE

Amidst all the tears of farewell and all the panic of 12th board exams, there is one thing all are excited about- College. For a teenage student, coming out of his cocoon, college is a bright and romantic picture of a new life.

College is a jackpot of opportunities, a supermarket of activities. And yes, it can be quite overwhelming at first. Once our eyes are adjusted to the new light, we want to try out almost everything. But this is also the time of designing out futures... this is exactly where we get lost, and this is what needs to be addressed. The answer is to choose such activities which teach us something new, or enable us to interact with others.

A very obvious question is that what is so special about college which we don't get on appearing as a private student ? The answer is the numerous options which are provided by the college. These enable us to find ourselves. Just as the school performed its part as a protective cocoon, the college adds wings to enable flight. The college activities define as well as refine our personality. They train us in shouldering responsibilities in controlled circumstances and in the practical application of our knowledge.

College life has the potential to completely alter our personality, but no one can guarantee whether it will be for good or bad. This is where our role comes. Picnic and parties are not bad, neither are assignments and lectures. We are what our choices make us. Being in an experimental stage, we must never be afraid of making mistakes- that is the way we learn. We must prepare ourselves to open up to this new world. The various competitions, workshops and extracurricular activities help to bring out hidden talents. They present an opportunity of self discovery, and introduce us to our own passion.

This is the time to tax ourselves heavily, to push the boundaries and test our potential. College life is the bridge between childhood and adult life. We get the first glimpse of the real world. We still have that campus wall, but it seems somewhat translucent.

Looking back at my college years, I find that I grew up to be a better and stronger person. I owe a lot of it to the college activities and I advise each of my juniors to make the most

Kratika Tiwari
M.A. 3rd Sem.(English)

SMART PHONES & ISSUES

In modern life smart phones are very popular among the young generation and its like a mini world. The smart phones allow access to all aspects of knowledge marketing, shopping etc. and now a days people are addicted to smart phones. We have no time for our family, friends and relatives. Smart phones are very useful for us and advantageous for us too.

The main purpose of smart phones is communication. To communicate with people and update with the social media and the burning topics of the society and convey messages to society. Now people use smart phones not in the right way but in wrong ways like MMS, fake calls, upload vulgar videos, photos etc. This is a disadvantage for smart phones.

Now in modern life the smart phones have become close partners for all and people cannot live without phones.

The new craze of modern life is to take selfi in different places, poses, and different action. Its not wrong but it is wrong when the people take selfies in different places, which can cause death A general study of the death of people.

In 2014, 33000 died and were injured while taking selfies and death rate in India was more than in any other country.

On the other side people use lots of messaging apps, WHATSAP, SKYPE, IMO video calling app which are all destroying our writing skills and reading hobbies writing and reading the NEWSPAPERS, MAGZINE, and ARTICLES have become nil. Also with texting our language is destroyed and our spelling and grammatical errors come into being.

The smart phones change the pattern of thinking and conversation face to face with people , friends, relatives, family member and all who are in touch with us because when we meet all people we don't converse properly. This is the phonemania in modern life, people like drug addicted people.

The smart phones take the place of LETTERS and GREETINGS which was a traditional culture. We now are connected with technology and very emotionaly connected with smart phones instead of RELATIVES. Now a day all people in society carry a smart phone and also the children who are 8-10 years old carry the smart phones too which are harmful for the child.

People carry and use phones in driving, talking and listening to songs with head phones to dinner, lunch, breakfast an addiction and intoxicants for human life.

The effect of smart phones release U.V. rays in a large amount.

95% people use smart phones at bed time. 73% smart phones use of as wake up alarm clock. 85% people use the smart phones in public place.

All the above facts are the disadvantages and harmful effects these should be avoided by the people. My humble request is that one should use smart phones for useful things and save your time and life and be SMART.

AND HOW ABOUT YOU?

Vijesh Kumar
M.A. 3rd Sem (English)

THINK BEFORE YOU SPEAK

Speaking before you think is a bad habit but this bad habit that can get you in trouble and hurt you in the most important areas of your life. Relationships will suffer or in the end your career will be stalled at the level far below your talent and most importantly you will lose your self confidence.

Your speech shapes your life. Time and again you find yourself in a situation where the outcomes depend on what you say and how you say it. Your words are the reflection of who you are. If your words are getting you in trouble, you are showing the worst part of you. You are presenting your self as being thoughtless, careless or just plain hurtful. If your words are harsh, negative, inconsiderate, or judgemental then these are the aspect's of your experience that are emphasised. It won't be long before you have developed a habit of always focusing on the thoughts on the darker side of your life. You know what kind of person this will turn you into- a miserable, depressing and mean spirited person who sees only bad and not the good side in others or your life.

If you speak before you think about what you are going to say, you don't need time to consider what words you will use-what these words will mean to another person, or how they feel about what you're saying. You are also not thinking about what these words say about you as a good person or about all of the good things you may be neglecting to focus on.

So thinking before you speak will change to a good habit and also raises your confidence in the stage or any part of the world.

"Never speak from a place of hate, jealousy, anger or insecurity. Evaluate your words before you let them leave your lips. Sometime it's important to keep quiet."

_ Joy A. Gaskins Jr.

Amisha Yadav
B.Sc. III (Bio)

DEMOCRATIC INDIA

The means of democracy is defined as a government of the people, by the people and for the people. We all know very well that our India became free only in 1947 after many years of colonial rule; and in the following years India had her constitution that declared India as a democratic federal Republic. Our India is now a Democratic India. The most common question arises like- why did India adopt the democracy we have ? This is very simple and very important question for us, because we have to know about our past India, how Indians survived and won Independence. So, the answer to this question is very clear and simple. for it is the "British Influence". "Britishers" had already laid a foundation for most of our judicial, military and other fields and "Britishers" made sure we adapted, their style of democracy, because of multiplex reasons favouring them. Indian democracy is based on British Democracy model.

After that the second question is " Is it possible to change Indian Democratic model"? So for this " It is possible, only if there is a major crisis, similar to what happened in the middle east. Political leaders would be reluctant to adopt to a new model, which subjects them to people's opinion and power. Main features of democracy in India is popular sovereignty, political Equality, Majority rules, provision for rights, rule of laws. These are the features of Democracy in India. We must keep in mind that there is no better form of government than a democratic government but it is beyond doubt, a better form of government than aristocracy, dictatorship and monarchy. There is no better alternative to democracy. To create a better society and nation, the people of India along with the union and state government should come together

Chitralata Yadav
M.A. Political Science
3rd Sem.

SWAMI'S MESSAGE TO THE YOUTH

"O the lion, come out of yourself a great potentiality is lying within you. Never talk of weakness. It is the thing which is the greatest superstition in our race."

These were the words of Swami Vivekanand to the youth of this nation, who himself being young and dynamic aroused the whole world. Moreover he was the first person who projected the essence of Indian spiritualism on the world stage.

If Ramkrishna Paramhansa was theory then Swami Vivekanand was the main working force and the practicality of his concept. Undoubtedly his messages are a great source of inspiration amongst our youth.

He said " We have wept much and no longer can we weep any more. When we think, we are weak our existence comes to nought once and for all. Strength is the sole thing only by which we can bring heaven on this earth". He further added "our upanishads are a great mine of strength."

You are the inheriter of this entire world. Be bold and fear not. There is no limit to your inner strength. Therefore "Stand, arise and stop not till you have achieved your goal."

कौन करेगा तुझे समर्पण ? कौन करे इस राष्ट्र को अर्पण ? विवेकानंद की तरुणाई को जन-जन में भर दे।
तेरा वैभव अमर रहे माँ हम दिन चार रहे न रहे।

Deepesh Kumar Patel
B.Sc. First Year (Maths)

MYTHOLOGY : A DEBATABLE ISSUE TODAY

In the modern world when we are experiencing the rule of science, where technology sweeps in and makes our life so easy. But in a country like our's we still fight on an issue that is "Mythology". Some familar questions asked are " Does God really exist ?" or "What is the proof that lord Rama and Krishna were the inarnations of a god and have the ultimate powers." It is well said that for people with all 'knowledge' raise such type of questions.

In the answer to such questions if you believe in the preception of scientists they say that they are not sure about the exsistence of god. If one tries to argue with them they will ask to "prove it" on the other hand if you ask people, majority say, they belive in the exsistence of god. If you ask for the same proof it can turn your last questions also.

In todays world we can place mythology in between fact which is universal truth with proof the other is fiction which is complete imagination. Mythology means "My truth" or "Niji Satya" means "I have my experience with god". In my opinion the word Mythology itself resolves the issue in its expansion as My thinking and Ideology is called as "MYTHOLOGY"

Satyesh
BA-1

THE WORLD

What will people say
If we lived in slavery
This is what Gandhi had thought
When he jumped into the stormy fight of freedom
What will the world think
had been the thought of heroes
when they were slaughtered
in this fight for freedom
all smilingly climbed the guillotine
and sacrificed their lives
What will the people think
was'nt the thought in their minds
Probably they would have been ministers
in the capital central
where every one is the scapegoat enjoying the
pleasure of their freedom
And this we call country of Gandhi
What will the world say
What is their state
Where only scams and hunger reign supreme

What will the world say
to the just thought
not one would be handicapped
Hunger and poverty would not be there
Today my mother-land cries
relating some thing to all
let a Gandhi be reborn again
let a new independence be sought again.

"Hail Mother India, Hail Chhattisgarh"

Shashi Shande
B.A. IInd

2016-17 में महाविद्यालय से उत्तीर्ण सर्वाधिक अंक प्राप्त छात्र/छात्राओं की सूची

क्र.	नाम	कक्षा
1.	कु. किरण यादव	बी.एस.सी. बायो
2.	कु. कुलसुम बेगम	बी.एस.सी. गणित
3.	कु. कल्पना श्रीवास	बी.ए.
4.	नितिन कुमार	बी.कॉम.
5.	नमिता साहू	एम.एस.सी. भौतिक शास्त्र
6.	स्वाती चौहान	एम.एस.सी. रसायन
7.	कु. पूजा चौहान	एम.एस.सी. वनस्पति
8.	राजप्रीत कौर	एम.एस.सी. प्राणीशास्त्र
9.	कु. साई प्रिया	एम.ए. राजनीति
10.	कु. ज्योति चौबे	एम.ए. समाजशास्त्र
11.	कु. अनिता कंवर	एम.ए. अर्थशास्त्र
12.	कु. सविता पटेल	एम.ए. हिन्दी
13.	संदीप साय	एम.ए. अंग्रेजी
14.	दीना कुमार देवांगन	एम.ए.भूगोल
15.	कु. सुनंदा	एम.कॉम.
16.	कु. लक्ष्मी साहू	एम.एस.सी. गणित

महाविद्यालय 2017-18
शैक्षणिक परिवार
डॉ. आर. के. सक्सेना (प्राचार्य)

Dr. R.K. Saxena
Principal
Ph.D.
Mob. : 94255-47200

Dr. V. K. Dubey
Professor (Physics)
M. Phil, Ph D.
Mob. : 94252-52442
E-mail : dubeyv7@gmail.com

Smt. A. Shrivastava
Assistant Professor (Chemistry)
M.Sc.
Mob. : 90099-18674
E-mail : alka256shrivastava@gmail.com

Smt. K. Anand
Assistant Professor (Chemistry)
M.Sc., M.Phil
Mob. : 94061-44996
E-mail : kundan.anand@gmail.com

Shri R.K. Rathore
Assistant Professor (Chemistry)
M.Sc.
Mob. : 81037-51249
E-mail : raj.chemistry05g@gmail.com

Dr. P.K. Mehta
Professor (Maths)
M.Sc., M.Phil, Ph.D
Mob. : 99933-98785
E-mail : pkdmehta@gmail.com

Smt. P. Pundlik
Assistant Professor (Maths)
M.Sc.
Mob. : 98934-10694
E-mail : p.pundlik15@gmail.com

Shri R.G. Khunte
Assistant Professor (Maths)
M.Sc., B.Ed.
Mob. : 91795-62248
E-mail : ramgopalkhunte@yahoo.in

Dr. K. Rai
Professor (Zoology)
M.Sc., Ph.D
Mob. : 94255-39555
E-mail : kalpanarai1411@gmail.com

Shri B.L. Kurrey
Assistant Professor (Zoology)
M.Sc.,B.Ed.
Mob. : 89598-552626
E-mail : balramkurrey@gmail.com

Dr. R.B. Sharma
Assistant Professor (Botany)
M.Sc., M.Phil, Ph.D
Mob. : 94792-86579
E-mail : botanyrenu@gmail.com

Dr. S. Shukla
Assistant Professor (Botany)
B.Sc., M.Sc.(Gold), SLET, Ph.D.
Mob. : 98271-11919
E-mail : sandeepshukla21@yahoo.com

Shri S. Agrawal
Assistant Professor (Botany)
M.Sc.
Mob. : 90984-01850
E-mail : skakrb@gmail.com

Smt. S. Pundlik
Assistant Professor (English)
M.A.
Mob. : 98937-87461
E-mail : spundlik.64@gmail.com

Dr. M.L. Agrawal
Assistant Professor (English)
M.A., Ph.D
Mob. : 94241-63874
E-mail : mlakorba@gmail.com

Dr. D. Dubey
Assistant Professor (Hindi)
M.A., Ph.D., M.Phil
Mob. : 94062-98740
E-mail : dhaneshwaridubey@gmail.com

Smt. A. Korram
Assistant Professor (Hindi)
M.A., B.Ed.
Mob. : 99933-20162
E-mail : amolak-0051@gmail.com

Dr. D. Sriwash
Assistant Professor (Hindi)
M.A., M.Phil, Ph.D, NET
Mob. : 0770899636
E-mail :dineshsriwash77@gmail.com

Shri K. S. Kanwar
Assistant Professor (Sanskrit)
M.A., SET
Mob. : 99771-39683
E-mail : kanwarkanhaiyasingh@gmail.com

Dr. S. Khare
Professor (Sociology)
M.A., Ph.D.
Mob. : 98268-39141
E-mail : kharesadhna@gmail.com

Shri S. Gupta
Assistant Professor (Sociology)
M.A., B.Ed.
Mob. : 98271-69789
E-mail : skgkrb@gmail.com

Dr. S. K.Yadav
Assistant Professor (Political Science)
M.A., Ph.D.
Mob. : 94252-27604
E-mail : sanjayyadav0207@gmail.com

Smt. C.R.Shriwas
Assistant Professor (Political Science)
B.Sc., B.J.M.C., M.A.
Mob. : 81037-61024
E-mail : chitrarekhashriwas@gmail.com

Dr. S.K. Gobhil
Assistant Professor (Economics)
M.A., M.Phil, Ph.D
Mob. : 98271-14234
E-mail : surajkumargobhil@gmail.com

Dr. P. Sahu
Assistant Professor (Economics)
M.A., M.Phil, Ph.D
Mob.: 99266-23960
E-mail : Purnima_sahu@rediffmail.com

Smt. R. Sinha
Assistant Professor (Economics)
M.A., M.Phil
Mob. : 98267-69788
E-mail : ritusinha1012@gmail.com

Dr. B.L. Sai
Assistant Professor (Geography)
M.A., Ph. D
Mob. : 98279-81052
E-mail : brajlalsai@gmail.com

Dr. A. Kaushil
Assistant Professor (Psychology)
M.A., Ph.D.
Mob. : 98269-55288
E-mail : Awantikaksl@gmail.com

Smt. K. Bahal
Assistant Professor (Home Science)
M.Sc. (CD)
Mob. : 94077-39631
E-mail : krishnabahal@yahoo.in

Shri R.K. Mourya
Assistant Professor (Commerce)
M.Com.
Mob. : 95840-91725
E-mail : rameshmouryakrb@gmail.com

Dr. D. Patnaik
Head Librarian
M.A., M.Lib, Ph.D.
Mob. : 98936-57510
E-mail : drdiptipatnaik@gmail.com

Dr. B.S. Rao
Sports Officer
MPED, Ph.D.
Mob. :
E-mail : bogy196900@gmail.com

सत्र 2017-18 में विश्वविद्यालयीन खेल प्रतियोगिता में भाग लेने वाले छात्र/छात्राओं के नाम

कु. कल्पना श्रीवास
कक्षा - पी.जी.डी.सी.ए.
बैडमिंटन

अजय चौहान
कक्षा - बी.कॉम. द्वितीय
टेनिस

कु. दीप्ती अग्रवाल
कक्षा - पी.जी.डी.बी.एम.
बैडमिंटन

विवेक धीरज
कक्षा - बी.ए. द्वितीय
टेनिस/बॉल बैडमिंटन

इंजमाम उल हक
कक्षा - एम.ए. प्रथम सेमेस्टर
बैडमिंटन

विवेक श्रीवास
कक्षा - एम.ए. प्रथम सेमेस्टर
टेनिस

आलोक कुमार पाठक
कक्षा - बी.कॉम. प्रथम
बास्केटबॉल

कु. स्नेहा अनंत
कक्षा - बी.एस.सी. प्रथम
शतरंज

कु. प्रियंका चौहान
कक्षा - बी.कॉम. द्वितीय
बास्केटबॉल

कु. मोनिका उरांव
कक्षा - बी.ए. अंतिम
खो-खो

कु. रानी गुप्ता
कक्षा - बी.कॉम. द्वितीय
टेनिस

कु. पिंकी राय
कक्षा - बी.ए. अंतिम
खो-खो/कबड्डी

कु. सेंवती यादव
कक्षा - बी.एस.सी. अंतिम
टेनिस

कु. दुर्गा राय
कक्षा - बी.ए. द्वितीय
खो-खो

कु. नेहा कंवर
कक्षा - बी.ए. द्वितीय
खो-खो

संजय केशरवानी
कक्षा - एम.ए. प्रथम सेमेस्टर
कुश्ती

कु. निशा विंधराज
कक्षा - बी.एस.सी. प्रथम
खो-खो

टुकेश्वर
कक्षा - बी.ए. अंतिम
कुश्ती

चंद्रशेखर
कक्षा - बी.ए. अंतिम
खो-खो / कबड्डी

कु. लता साहू
कक्षा - एम.ए. प्रथम सेमेस्टर
कुश्ती

डेविड भारद्वाज
कक्षा - बी.कॉम. द्वितीय
खो-खो

कु. पूर्णिमा साहू
कक्षा - बी.ए. अंतिम
कुश्ती

प्रदीप कुमार केशरवानी
कक्षा - बी.ए. द्वितीय
खो-खो

चंदचूर्ण सूर्यवंशी
कक्षा - बी.कॉम. द्वितीय
हॉकी

नरेश कुमार पटेल
कक्षा - एम.ए. पूर्व
खो-खो

कु. देविका कंवर
कक्षा - एम.ए.प्रथम सेमेस्टर
तैराकी / सायकिलिंग

वृन्दा लाल
कक्षा - बी.एस.सी. अंतिम
खो-खो

प्रिंस पात्रे
कक्षा - बी.ए. प्रथम
कबड्डी

कु. नीलू यादव
कक्षा - बी.ए. अंतिम
कबड्डी

कु. प्रिया सिंह
कक्षा - बी.कॉम. अंतिम
कबड्डी

अजय यादव
कक्षा - बी.कॉम. द्वितीय
क्रिकेट

चंदन शर्मा
कक्षा - बी.ए. अंतिम
क्रिकेट

पी.पी. सिंह
कक्षा - बी.एस.सी. अंतिम
एथलेटिक्स

राजेश सिंह
कक्षा - बी.ए. अंतिम
एथलेटिक्स

अमन चौहान
कक्षा - बी.कॉम. द्वितीय
तीरंदाजी

तोमेश कुमार यादव
कक्षा - एम.एस.सी. तृतीय सेमेस्टर
बॉल बैडमिंटन

अंकित यादव
कक्षा - एम.कॉम. प्रथम सेमेस्टर
फुटबॉल

मोंटू स्वाई
कक्षा - पी.जी.डी.सी.ए.
फुटबॉल

कु. रुबिता प्रेमा तिर्की
कक्षा - एम.ए. प्रथम सेमेस्टर
फुटबॉल

जावेद मेमन
कक्षा - बी.कॉम. अंतिम
फुटबॉल

आकाश साहनी
कक्षा - बी.कॉम. प्रथम
फुटबॉल

कु. पूजा सिंह
कक्षा - बी.ए. प्रथम
फुटबॉल

विविध गतिविधियाँ क्रीड़ा विभाग

विविध गतिविधियाँ

विविध गतिविधियाँ एन.सी.सी. / एन.एस.एस.

विविध गतिविधियाँ

One Day Awareness Program
on
Skill Development through e-learning
(Spoken Tutorial Project - IIT BOMBAY

SVEEP PLAN
(Systematic Voters Education & Electoral Participation)

यूथ रेडक्रास सोसायटी
शासकीय इं. विश्वेसरैया स्नातकोत्तर महाविद्यालय

21 वीं
सदी
उज्ज्वल
भविष्य
युवा
जागरण
राष्ट्र
जागरण

शासकीय इं. विश्वेसरैया स्नातकोत्तर महाविद्यालय
कोरबा (छ.ग.)

विविध गतिविधियाँ

विविध गतिविधियाँ

उमंग
वार्षिक उत्सव 2017-18

वार्षिक उत्सव 2017-18

वार्षिक उत्सव 2017-18
सांस्कृतिक कार्यक्रम

Gate Keeper Training
SUICIDE PREVENTION

साउथ ईस्टर्न कोल फील्ड्स लिमिटेड
सतर्कता जागरूकता सप्ताह

जनभागीदारी समिति

लुकेश्वर चौहान (लुक्की)
अध्यक्ष
मो. 9893191316

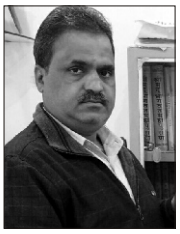

व्यासमुनी मिश्रा
सदस्य
मो. 9425544738

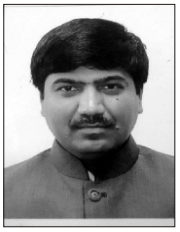

पारस जैन
सदस्य
मो. 9329872807

दादू मनहर
सदस्य
मो. 9826197306

उदय प्रताप सिंह
सदस्य

धीरज कुमार दुबे
सदस्य
मो. 7225023333

अमित तिवारी
सदस्य
मो. 9981443488

युवराज सिंह चन्द्रा
सदस्य
मो. 9977898852

संदीप शर्मा
सदस्य
मो. 9425227796

सुरेश शर्मा
सदस्य
मो. 8839097217

श्रीमती किरण सिंह
सदस्य
मो. 9770412489

श्रीमती रश्मि देवी श्रीवास
सदस्य
मो. 8602398662

नम्रता विश्वकर्मा
सदस्य

अशोक लोध
सदस्य

प्रयोगशाला एवं कार्यालयीन परिवार

Sitting (By Left) - Smt. S. Ogrey, Shri B.N. Sharma, Shri. K.S. Kanwar, Dr. R.K. Saxena (Principal), Shri. A.L. Sarthi, Smt. C. Nath.
1st Row (By left) - Shri. T.R. Mannewar, Shri. S. Chouhan, Shri. D. Uranv, Shri. J. Jangde, Shri. R. Kumar, Shri. P. Tanwer, Shri. K.S. Nayak, Shri. R. Kishan, Shri. J. Lal, Smt. S. Sidar.

अपील

सभी सम्माननीय अभिभावकों से विनम्र अपील है कि महाविद्यालय में आप अपने पाल्यों को निम्नलिखित बिन्दुओं का पालन करना सुनिश्चित करें :-

- आंतरिक परीक्षाओं का महत्व समझाकर इनमें उनकी उपस्थिति अनिवार्य करें।
- महाविद्यालय में प्रतिदिन अपना आई-कार्ड पहनने की सलाह दें।
- महाविद्यालय द्वारा मांगी गई जानकारी जैसे पता एवं मोबाईल नंबर को सही दें।
- महाविद्यालय में मोबाईल फोन का उपयोग पूर्णतः वर्जित करें।
- प्रायोगिक कक्षाओं में नियमित रुप से उपस्थित होने की सलाह दें।
- महाविद्यालयीन साहित्यिक, सांस्कृतिक, खेलकूद एवं अन्य गतिविधियों में सम्मिलित होने के लिये प्रोत्साहित करें।
- महाविद्यालय का सूचना पटल का नियमित रुप से अवलोकन करें ।
- महाविद्यालय परिसर में रैगिंग से पूर्णतः दूर रहने की सलाह दें तथा ऐसी कोई घटना की जानकारी हो तो उसकी सूचना तुरंत महाविद्यालय प्रबंधन को सूचना देवें।
- महाविद्यालय की अधोसंरचना (फर्नीचर, लाईट, पंखे, दरवाजें-खिड़कियाँ, लेब के उपकरण, टायलेट, ग्रंथालय की किताबें, फूल-पौधे इत्यादि) को नुकसान न पहुंचाने को कहें।
- महाविद्यालय में अपने दिव्यांग सहपाठियों की पूर्ण सम्मान एवं सहयोग करने के लिए प्रेरित करें ।
- महाविद्यालय की शिक्षक-अभिभावक योजना के अंतर्गत नियुक्त प्राध्यापकों के निरंतर संपर्क में रहने की सलाह दें।

हमें पूर्ण विश्वास है कि आपके सहयोग से महाविद्यालय में अनुशासन एवं सकारात्मक वातावरण